The Doctor's Dilemma का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

शिवदानसिंह चौहान

श्रीमती विजय चौहान

मूल्य	:	तीन रुपये
प्रथम संस्करण	:	अप्रैल, १६६०
प्रकाशक	:	राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
मुद्रक	:	युगान्तर प्रेस, दिल्ली

नाटककार का परिचय

जॉर्ज बर्नर्ड शॉ

बर्नर्ड शॉ का जन्म डबलिन (आयरलैण्ड) के एक प्रोटेस्टेन्ट परिवार मे सन् १८५६ ई० मे हुआ था। उनके पिता का नाम जॉर्ज कार शॉ और मां का नाम लुडिसा इलिज़ाबेथ गर्ली था। बर्नर्ड शॉ अपने माता-पिता की तीसरी और अन्तिम सन्तान थे। उनके पिता गल्ले के व्यापारी ज़रूर थे, लेकिन उन्हें इसमें विशेष सफलता नहीं मिली, जिससे बर्नर्ड शॉ को १५ वर्ष की आयु में स्कूल छोडकर आयरलैण्ड मे ही किरानीगिरी का काम करना पड़ा। २० वर्ष की आयु में उन्होंने लन्दन आकर उपन्यासकार बनने की असफल चेष्टा की। जीविका के रूप में बर्नर्ड शॉ ने साहित्य को क्यों अपनाया, इसका उन्होने एक दिलचस्प कारण बताया है। उन्होंने अपने आरंभिक संघर्ष के दिनों की चर्चा करते हुए लिखा है कि लेखक को चूंकि पाठक देखते नही, इसलिए जरूरी नही कि वह एक शरीफ आदमी की पोशाक पहने। और सभी पेशों मे साफ-सुथरे कपड़े अनिवार्य होते हैं, लेकिन साहित्य ही एक ऐसा सभ्य पेशा है जिसकी कोई पोशाक नहीं होती। इसलिए ही मैंने इस पेशे को चुना।

लेकिन यह तो केवल स्वयं अपना मज़ाक उड़ाकर पूरी समाज-व्यवस्था पर व्यंग्य की चोट करने का शॅवियन ढंग है। दरअसल बर्नर्ड शॉ की किशोर-चेतना समाज मे फैले आडम्बर और अन्याय से तिलमिला रही थी और उनकी असाधारण प्रतिभा अभिव्यक्ति की मांग कर रही थी। उनमें एक द्रष्टा और स्रष्टा की महान् प्रतिभा थी, किन्तु आरम्भ में उन्हें अपनी अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल माध्यम खोजने में किंचित्

कठिनाई हुई। कवि और उपन्यासकार के रूप में बर्नर्ड शॉ को सफलता नही मिली। फिर कुछ दिनों तक उन्होने पत्रकारिता से जीविका कमाने की कोशिश की, संगीत-समालोचक और नाट्यालोचक का कार्य किया, लेकिन उनके भीतर का कल्पनाशील कलाकार इस हल्के प्रकार के लेखन से कभी संतुष्ट नही हुआ। आखिरकार सन् १८९२ में उन्होने नाटक लिखने शुरू किए और तत्काल विश्व के महान् नाटककारों मे उनकी परिगणना होने लगी। बर्नर्ड शॉ के नाटकों की संख्या पचास से ऊपर है और उनमे से हर नाटक आज विश्व-साहित्य की एक अमर रचना—एक क्लासिक माना जाता है। और विश्व के नाटककारों मे उनका दरजा शेक्सपियर और इब्सन के साथ है।

बर्नर्ड शॉ एक महान् नाटककार ही नही, एक महान् विचारक, एक महान् प्रोपैगैण्डिस्ट और एक महान् समाजवादी चिन्तक भी थे। उन्हे 'कला के लिए कला' के सिद्धात से बचपन से ही चिढ़ थी—वे समझते थे कि यह कला के साथ खिलवाड़ करने का दृष्टिकोण है। इसीलिए उनके सभी नाटक, दुःखान्तकी हो या सुखान्तकी, गंभीर समाज-चिन्तन से ओत-प्रोत हैं। गेटे, तॉलस्तॉय, गोर्की और रवीन्द्रनाथ ठाकुर की तरह उन्हें अपने ही जीवन-काल मे इतनी लोकप्रियता, मान्यता और विश्व की जनता का प्रेम और कृतज्ञता प्राप्त हुई कि उनका हर शब्द, हर व्यंग्य, हर उद्‌गार नित्य-प्रति विश्व भर के समाचारपत्रो में प्रथम पृष्ठ पर विशिष्ट आदर और सम्मान के साथ छापा जाता था। लोग उनकी बातों पर हसते थे, उनके व्यंग्य से तिलमिलाते थे—क्योकि उनकी शैली व्यग्यपूर्ण है—लेकिन साथ ही उनकी कृतियो मे व्यक्त समाज-सत्य के प्रति उनकी आखें भी खुल जाती थी। यही उनका उद्देश्य था, समाज मे फैले अन्यायों, कुत्साओ, ऊच-नीच और आडम्बरों के प्रति लोगो की आखे खोल देना, ताकि लोग जागरूक होकर एक न्यायपूर्ण समतावादी समाज का निर्माण करें। शॉ के नाटक दीर्घकाल तक यह भूमिका अदा करते रहेगे। विश्व-साहित्य की इस महान् विभूति का सन् १९५० मे देहान्त हो गया, लेकिन

उनका कृतित्व सदा के लिए अमर है।

भारतीय पाठकों के लिए शॉ के नाटकों का मूल्य और भी अधिक है, समाज की जिन बुराइयों और आडम्बरों का शॉ ने इतना मार्मिक और कलात्मक चित्रण किया है, वे हमारे राष्ट्रीय जीवन की भी दुःखदायी हकीकतें हैं, जिनके विरुद्ध हम आज विकट संघर्ष कर रहे हैं।

हिन्दी पाठकों को शॉ के नाटक, इसलिए भी रुचिकर लगेंगे, इसमें हमें संदेह नहीं है। अनुवाद करते समय हमने यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखी है कि शॉ के नाटक हिन्दी में केवल पढ़ने की चीज ही बनकर न रह जाएं—यह शॉ जैसे महान् नाटककार के प्रति अन्याय होगा—बल्कि स्टेज पर उसी प्रकार खेले जा सकें, जिस प्रकार अंग्रेजी मे तथा विश्व की अन्य भाषाओं मे खेले जाते है। इसी कारण यद्यपि रग-संकेतों का अनुवाद हमने संस्कृत-गर्भित हिन्दी मे किया है, लेकिन कथोपकथन के अनुवाद में मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करने के लिए हमे उर्दू की पुट अधिक देनी पड़ी है। हम इसके लिए बाध्य थे, नही तो यह अनुवाद केवल कुछ पाठकों के ही उपयोग की चीज बनकर रह जाता।

शुद्धतावादी इसका चाहे जो अर्थ लगाएं, दर्शक और पाठक निश्चय ही हमारे उद्देश्य का समर्थन करेंगे। नाटकों के अनुवाद में शुद्धतावादियों के दुराग्रहों को मानना स्वयं हिन्दी भापा के विकास के लिए घातक होगा। मुहावरेदार, बोलचाल की भापा ही नाटकों की सजीव भाषा बन सकती है, चाहे उसमें उर्दू का पुट ही अधिक क्यों न हो।

—*शिवदानसिंह चौहान*
विजय चौहान

पुस्तक-परिचय

डाक्टर की उलझन

बर्नर्ड शॉ एक महान् नाटककार के अलावा एक महान् विचारक भी थे। उनकी अन्तर्भेदी दृष्टि समाज के सभी अगो, समाज के सभी पेशों और समाज के सभी कार्य-व्यापारो के आरपार देखने मे समर्थ थी। आडम्बर और झूठ से उन्हे स्वाभाविक चिढ़ थी। अपने नाटको में उन्होने इस आडम्बर और झूठ का पर्दाफाश किया और समाज-जीवन की सही वास्तविकताओं का उद्घाटन किया।

शॉ का विचार था कि समाज मे जितने पेशे प्रचलित है वे सब साधारण जन-समुदाय के विरुद्ध संगठित षड्यन्त्र हैं। चिकित्सा का पेशा भी एक ऐसा ही षड्यन्त्र है। प्रस्तुत नाटक 'डाक्टर की उलझन' मे शॉ ने डाक्टरी पेशे और चिकित्सा-विज्ञान की खिल्ली उडाई है। 'नीम हकीम खतरेजान' तो मशहूर ही है, लेकिन शॉ का कहना है कि सभी डाक्टर, वे चाहे जितने अनुभवी, विज्ञ और डिग्रीधारी क्यो न हों, दरअसल नीम हकीम ही होते हैं।

आमतौर पर यह समझा जाता है कि डाक्टर कभी गलती नहीं कर सकता। लोगो की इस अन्धी आस्था का फायदा उठाकर डाक्टर उनको उल्लू बनाते है। कानून की अवस्था यह है कि अगर डाक्टर की दवाई या टीके से रोगी की मृत्यु हो जाए तो डाक्टर को हत्यारा नही सिद्ध किया जा सकता। इसिलए डाक्टर रोगियों की हत्या करने से नही हिचकिचाते। इसके अलावा पूजीवादी प्रणाली मे डाक्टर तभी खूब कमाई कर सकता है जब वह रोगी का रोग ठीक करने की बजाय उसे और दस रोग लगा दे और उसे रोगो से मुक्ति न प्राप्त

होने दे। इसीलिए आप्रेशनों का रिवाज चल पड़ा है। जब से क्लोरोफार्म या दूसरे क़िस्म के स्थानीय ऐनेस्थिटिक्स ईजाद हुए हैं, तब से डाक्टरो की और भी बन आई है। लेकिन शॉ का विचार है कि पीड़ा-रहित आप्रेशन एक धोखा है। जब क्लोरोफार्म का असर खत्म होता है, तब बेचारा रोगी दर्द से छटपटाता है। लेकिन डाक्टर की जेब तो गर्म हो चुकी होती है। शॉ का यह भी विचार है कि डाक्टरो का दृष्टिकोण वैज्ञानिक नही है। वे हमेशा तीर मे तुक्का मारते हैं। कोई मरीज़ को भूखा मारता है तो कोई इतना खाने को देता है कि बेचारा पचा नहीं सकता। कोई उसे एक रोग बताता है तो कोई दूसरा। कोई डाक्टर अगर टीके और इन्जेक्शन लगाने का हामी है तो हर रोग मे टीके लगाने पर जोर देता है, यहां तक कि हर रोग में एक ही टीका लगाता है, चाहे इससे रोगी की मृत्यु ही क्यो न हो जाए। और कुछ डाक्टर पैसा कमाने के लिए शरीर के अन्दर के कुछ अनावश्यक अंगों को काटकर निकालने को ही सब रोगो का इलाज बताकर एक फैशन बना देते हैं। मेडिकल पेशे में इस तरह काफी धांधली फैली हुई है। शॉ ने प्रस्तुत नाटक मे इसकी बड़े कलात्मक ढंग से खिल्ली उड़ाई है।

'डाक्टर की उलझन' में शॉ ने एक बीमार कलाकार लुई डूबेडाट को पेश किया है जिसका रीजन, बी. बी., वालपोल तथा सर पैट्रिक आदि प्रसिद्ध डाक्टर मिलकर इलाज करते हैं। लुई एक स्वाभिमानी कलाकार है, यद्यपि उसके चरित्र मे अनेक कमज़ोरियां हैं। डाक्टर रीजन, जिसे अभी-अभी सर का खिताब मिला है और जिसने तपेदिक का कोई शर्तिया इलाज ईजाद किया है, लुई की पत्नी जेनीफर पर मोहित हो जाता है और ईर्ष्यावश लुई को गलत इन्जेक्शन दिलवा-कर मार डालता है। लुई मरते समय डाक्टरों की क्षुद्रताओं और स्वार्थ का पर्दाफाश करते हुए अपनी पत्नी से आग्रह करता है कि वह दोबारा शादी कर ले और हमेशा सुन्दर पोशाकें पहने। वह उसके हृदय में जीवित रहकर अमरता प्राप्त कर लेगा। डाक्टर रीजन जेनीफर से प्रणय-निवेदन करता है, लेकिन जेनीफर डाक्टर रीजन को निराश करके किसी और से शादी कर लेती है। 'डाक्टर की उलझन' की संक्षेप में, इतनी-सी ही कहानी है। लेकिन इस कहानी को शॉ ने अपूर्व मूर्तिमत्ता और कलात्मक नाटकीयता प्रदान की है।

शॉ की भाषा इतनी चुस्त और दुरुस्त होती है कि उसका सटीक अनुवाद

सरल कार्य नही है। साथ ही यदि संवादों का अनुवाद संस्कृतमयी हिन्दी में किया जाए तो इसमे सदेह नही कि उनका व्यंग्य, उनकी शक्ति और उनका प्रभाव वहुत कम हो जाएगा। इसलिए विवश होकर हमने रंग-संकेत तो हिन्दी मे रखे हैं लेकिन मच पर जो संवाद वोले जाएगे, उनका अनुवाद सरल उर्दू मे किया है। हमारा सुचिंतित विचार है कि नाटको के अनुवाद मे, विशेषकर शॉ की महान् कृतियो के अनुवाद मे तो यह नीति ही उचित और कारागर सावित हो सकती है। आशा है कि इस अनुवाद को पढकर या रंगमंच पर पात्रो का अभिनय देख-सुनकर हिन्दी भाषी भी इससे सहमत होगे, क्योकि उन्हे शॉ की इस अनूदित कृति मे मूल नाटक जैसा आनन्द आएगा।

—शिवदानसिह चौहान
—विजय चौहान

पहला अंक

[सन् १९०३ की १५ जून को दोपहर के समय रेडपैनी नाम का एक मेडिकल विद्यार्थी, जिसका क्रिश्चियन नाम अज्ञात है, एक डाक्टर के कन्सल्टिंग रूम में अपने काम पर बैठा है। वह डाक्टर के लिए उसके पत्रों के उत्तर लिखकर उसके घरेलू लेबोरेटरी असिस्टेन्ट का काम संभाल कर और आमतौर पर अपने को उपयोगी बनाकर परिश्रम करता है। इसके वदले मे उसे कुछ अनिश्चित प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं, यानी डाक्टरी पेशे के एक नेता के निकट सम्पर्क मे आने का मौका मिलता है, एक अनौपचारिक शागिर्दी और अस्थायी रूप से उसके नीचे काम करने का गौरव। रेडपैनी घमडी व्यक्ति नही है और अगर उससे एक सहयोगी के अन्दाज़ में कहा जाए तो वह अपने आत्मसम्मान का विचार किए बिना कुछ भी करने के लिए तत्पर रहता है। वह चौकन्नी आखो वाला, तत्पर, सरल, मैत्रीपूर्ण और जल्दबाज़ नौजवान है, जिसके वाल और कपड़े मानो अनमने ढंग से एक गदे, फूहड़ लड़के से बदलकर साफ-सुथरा डाक्टर वनने के संक्रान्ति-काल से गुज़र रहे हैं।

रेडपैनी के काम में एक बुढ़िया नौकरानी कमरे में दाखिल होकर विघ्न डालती है, जिसे अपने जीवन मे व्यक्तिगत सौन्दर्य की चिन्ताओं, व्यस्तताओ, दायित्वों, ईर्ष्याओ और शकाओं ने कभी नही सताया। उसके चेहरे की रंगत कभी न नहाने वाली जिप्सी औरत की तरह मैली है, जिसे किसी मैल काटने वाली दवाई से भी नही निखारा जा सकता। उसके मुंह पर एक ही दाढ़ी या मूंछ नही थी, जिसे कैंची से काटकर या मोम से

उखाड़कर कम से कम उसे मर्दों की तरह लोगों के सामने आने के काबिल बनाया जा सकता, बल्कि उसके चेहरे पर अनेक दाढ़ियां और मूछे थी जो बेतरतीब उगे हुए मसो में से फूट रही थी। उसके हाथ एक झाड़न है और वह लड़खड़ाती चाल से हर चीज़ मे दखलदान्जी करती है, और इतने ध्यान से धूल झाड रही है कि एक जगह धूल-कणो को साफ करते ही अन्यत्र पडे धूल-कणो पर फौरन उसकी दृष्टि जा पड़ती है। बातचीत मे भी उसका यही अन्दाज़ है यानी अगर उत्तेजित न हो तो कभी बात करने वाले की ओर आंख उठाकर नही देखती। वह एक ही अन्दाज़ में बात करती है—जैसे किसी परिवार की पुरानी धाय उस बच्चे से बात करे जिसने अभी चलना सीखा हो। वह अपनी बदसूरती से लाभ उठाकर इतनी सिर चढ गई है जितनी सिर चढ़ी क्लियोपैट्रा और सुन्दरी रोज़ेमण्ड भी नही थीं। इसके अलावा उनके मुकाबले में वह इसलिए भी ज्यादा फायदे में है कि उम्र के बढ़ने के साथ-साथ डाक्टर के लिए उसकी अनिवार्यता कम होने की बजाय बढती जाती है। एक मेहनती, ख़ुशमिज़ाज और हरदिल अज़ीज़ बुढ़िया होने के कारण वह स्त्रियो के सौंदर्य और मिथ्याभिमान पर चलता-फिरता उपदेश है। जिस तरह रेडपैनी का क्रिश्चियन नाम अज्ञात है उसी तरह इस बुढिया का वंश-नाम भी अज्ञात है और कवेन्डिश स्क्वॉयर और मेरीलेबोन रोड के बीच स्थित डाक्टर की कोठी मे उसे सिर्फ ऐम्मी के नाम से ही पुकारा जाता है।

क्वीन ऐनी स्ट्रीट पर इस कन्सल्टेशन रूम की दो खिड़कियां खुलती हैं। दोनो खिडकियो के बीच ब्रैकेट वाली मेज़ है, जिसका ऊपरी हिस्सा संगमरमर का है और जिसके खमदार सुनहरी पायो के निचले सिरे स्फिक्स के पंजो जैसे है। मेज़ के ऊपर दीवार मे जड़ा विशाल दर्पण प्रतिबिम्ब को ग्रहण करने मे असमर्थ हो गया है, क्योंकि उसकी सतह पर ताड़-वृक्षो, फर्न की झाड़ियों और लिली, ट्यूलिप और सूरजमुखी के फूलो की घनी चित्रकारी की गई है। साथ की दीवार मे अंगीठी है जिसके सामने दो आरामकुर्सियां रखी हैं। चूंकि हमे कमरे का कोना दिखाई देता है, इस-

लिए हमे बाकी दोनों दीवारें नज़र नहीं आती। अंगीठी के दाहिनी ओर या कहे कि अगीठी की ओर मुंह करके खडे आदमी के दाहिनी ओर दरवाज़ा है। उससे बाए हटकर एक लिखने की मेज़ है जिसके सामने रेडपैनी बैठा है। इस मेज़ पर चीज़ें बेतरतीब बिखरी पडी हैं—एक खुर्दबीन रखी है, कई टेस्ट-ट्यूब पड़े हैं, और कागजो के ढेर के बीच एक स्पिरिट-लैम्प रखा है। कमरे के बीच, ब्रैकेट वाली मेज़ से समकोण पर और अंगीठी के समानान्तर एक सोफा रखा है। खिडकी और सोफे के बीच एक कुर्सी है और दूसरी कुर्सी खिड़की वाली दीवार के अन्त में है। खिड़कियों पर लाल पर्दे टगे हैं और उसके दरवाज़े हरे रंग के झिरझिरीदार हैं। वहां पर एक गैस की नलियो का फानूस लटका है, लेकिन अब उसमे बिजली के बल्ब लगा दिए गए है। दीवारो का काग़ज़ और फर्श के कालीन सभी हरे रंग के हैं और गैस के फानूस और झिरझिरीदार दरवाजो के समकालीन हैं। दरअसल बात यह है कि उन्नीसवी शताब्दी के मध्य मे इस कोठी की सजावट इतने अच्छे ढग से की गई थी कि बिना किसी परिवर्तन के वह आज भी देखने के काबिल है।]
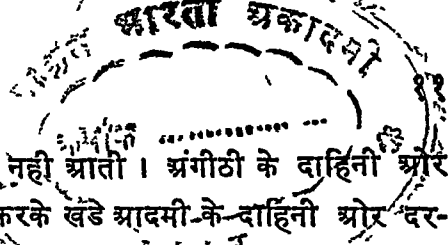
ऐम्मी : (प्रवेश करते ही तुरन्त सोफे को झाड़ने लगती है।) बाहर एक औरत डाक्टर से मिलने के लिए मुझे परेशान कर रही है।

रेडपैनी : (काम मे टोक देने से व्यग्र होकर) नहीं, वह डाक्टर से नहीं मिल सकती। इधर देखो। खैर, तुमको यह बताने से फायदा ही क्या है कि डाक्टर अब कोई नया मरीज नही देख सकते। क्योंकि तुम हो कि जैसे ही कोई दरवाजा खटखटाता है, वैसे ही पूछने के लिए भागी आती हो कि क्या डाक्टर उसे देखेगे ?

ऐम्मी : तुमसे पूछा किसने कि डाक्टर किसीको देखेगे या नही ?

रेडपैनी : तुमने।

ऐम्मी : मैने तो सिर्फ यह कहा कि एक औरत डाक्टर से मिलने के

लिए मुझे परेशान कर रही है। यह पूछना नही है। सिर्फ बताना है।

रेडपैनी : अच्छा, वह औरत अगर तुम्हें परेशान कर रही है तो क्या तुमको चाहिए कि आकर मुझे परेशान करने लगो, जब कि मैं इतना मसरूफ हूं ?

ऐम्मी : तुमने अखबार पढ़े ?

रेडपैनी : नही।

ऐम्मी : जन्मदिन के मौके पर बांटे गए खिताबों की फेहरिस्त नही देखी, तुमने ?

रेडपैनी : (अपशब्द बोलने के लिए उतारू होते हुए) क्या बकवास…

ऐम्मी : बस, बेटे बस !

रेडपैनी : तुम सोचती हो कि मैं जन्मदिन के मौके पर बांटे गए खिताबों की रत्ती भर भी परवाह करता हूं ? अपनी बकवास बंद करके यहां से दफा हो जाओ। डाक्टर रीजन नीचे आते ही होंगे। इससे पहले मुझे ये खत तैयार कर लेने है। चलो, दफा हो।

ऐम्मी : डाक्टर रीजन अब नीचे नही आएंगे, समझे नौजवान !

[उसे अलमारी पर धूल दिखाई दे जाती है और वह पूरे जोश से उसपर टूट पड़ती है।]

रेडपैनी : (उछलकर उसके पीछे जाते हुए) क्या ?

ऐम्मी : उन्हे 'सर' का खिताब मिला है। ख्याल रखो, इन खतों में उनको डाक्टर रीजन लिखने की हिमाकत मत कर बैठना। अब से उनका नाम सर कोलेन्ज़ो रीजन है।

रेडपैनी : मै यह सुनकर बेहद खुश हूं।

ऐम्मी : लेकिन मै तो सुनकर हैरान रह गई। मै हमेशा यही सोचती थी कि उनकी ये सारी महान ईजादें महज़ खुराफात थीं और उनकी खून की बूंदों और माल्टायी बुखार के ट्यूबों ने जो गंद फैला रखी थी, सो अलग। अब उन्हें मेरी हंसी उड़ाने का नायाब मौका मिलेगा।

रेडपैनी : तुम्हारे साथ ऐसा ही होना चाहिए। तुम्हारे जैसी गुस्ताख औरत ही साइन्स के सवालों पर उनके मुंह लगने की जुर्रत कर सकती थी। (वह अपनी मेज़ पर लौटकर लिखने मे व्यस्त हो जाता है।)

ऐम्मी : ओह, साइन्स को मै खास अहमियत नहीं देती; और जितने दिन मैने साइन्स के बीच काटे हैं, उतने दिन जब तुम काट लोगे तब तुम भी उसे खास अहमियत नहीं दोगे। इस वक्त तो दरवाज़े की घंटी का जवाब देने का सवाल ही मेरे दिमाग पर छाया हुआ है। बूढ़े सर पैट्रिक कुलेन तो यहां हो भी गए और सबसे पहली मुबारकबादियां छोड़ गए है—अस्पताल पहुंचने की जल्दी मे यहां अन्दर आने की फुरसत उन्हें नही थी, लेकिन उन्होंने कहा कि मुबारकबाद देने वालों में सबसे पहला होने के लिए वे फिर आएंगे। और सब लोग भी यहां आएंगे। सारे दिन दरवाजे की घंटी बजती रहेगी। मुझे अगर किसी बात का डर है तो बस यह कि और सबकी तरह अब डाक्टर रीजन भी एक अर्दली रखना चाहेगे, सर कोलेन्ज़ो जो बन गए है ! देखो बेटे, कहीं तुम उनके दिमाग में यह खुराफात मत डाल देना, क्योंकि दरवाजे की घंटी का जवाब देने के लिए मेरे सिवा और किसीसे उनका काम नहीं चल सकता। मै जानती हूं कि

किसको अन्दर दाखिल करना चाहिए और किसको वाहर से ही चलता कर देना चाहिए। अरे हा, इस वात से मुझे उस वेचारी औरत की याद आ गई। मेरा ख्याल है कि डाक्टर को उसे देख लेना चाहिए। ऐसी ही औरत से मिलकर डाक्टर का मिजाज खुश होता है। (वह रेडपैनी के कागज़ों को झाडने लगती है।)

रेडपैनी : मैने तुमसे कहा कि डाक्टर किसीसे नहीं मिल सकते। अब यहां से जाओ भी ऐम्मी। तुम मेरे चारों ओर इस तरह झाड़न मारती रहोगी तो मै काम कैसे करूंगा।

ऐम्मी : मै तुम्हारे काम मे दखल तो नही दे रही—अगर खत लिखने को भी तुम काम करना कहते हो। लो, घंटी वज उठी। (खिड़की से वाहर झांककर देखती है।) एक डाक्टर की गाड़ी है। और मुवारकवादिया आ गईं। (वह वाहर जाने को ही है कि सर कोलेन्ज़ो रीजन दाखिल होते हैं।) बेटा, तुमने अपने दोनों अंडे खा लिए न ?

रीजन : हां।

ऐम्मी : और तुमने साफ बनयायन बदल ली है न ?

रीजन : हां।

ऐम्मी : यह मेरा राजा बेटा है। अब अपने को साफ रखना, और खुराफात मे हाथ डालकर गंदे मत कर लेना; लोग तुम्हें मुबारकबाद देने के लिए आ रहे है। (बाहर चली जाती है।)

[सर कोलेन्ज़ो रीजन की उम्र पचास साल की है, लेकिन उनकी तरुणाई पर आंच नही आई। उनकी वातचीत के वेलाग ढंग मे हल्की-फुल्की गुस्ताखियां भी शामिल हो गई है जो एक ऐसे शर्मीले और संवेदन-शील व्यक्ति के व्यवहार में आ ही जाती हैं, जिसे हर किस्म की परिस्थितियों

मे और हर किस्म के लोगो से बातचीत करने के लिए अपना मौन तोडना एक विवशता बन जाती है। उनके चेहरे पर काफी रेखाएं पड गई हैं। उनके चलने-फिरने में वह फुर्ती नही है जो, मिसाल के लिए, रेडपैनी में है। उनके सुनहरी बालो मे अब चमक नही रही, लेकिन अपने शरीर और व्यवहार से वे एक नौजवान दीखते हैं, सर का खिताब पाने वाले डाक्टर नही। उनके मुख की रेखाए भी उम्र के कारण नही, अत्यधिक परिश्रम और बेचैन रखने वाली अनास्था और शायद तीव्र जिज्ञासा और क्षुधा के कारण हैं। इस समय सुबह के समाचारपत्रों में प्रकाशित उनके खिताब पाने की सूचना ने उन्हें बेहद आत्मचेतन बना दिया है, जिससे विशेषकर रेडपैनी के प्रति उनका व्यवहार और भी अधिक बेलाग और दो टूक हो गया है।]

रीजन : तुमने अखबार देखे है ? तुमने अगर खतों मे मेरा नाम नहीं बदला है तो अब बदलना पड़ेगा।

रेडपैनी : ऐम्मी ने अभी बताया है। मै बेहद खुश हूं। मैं…

रीजन : बस, नौजवान, बस। तुम जल्द ही इसके आदी हो जाओगे।

रेडपैनी : उन्हें सालों पहले आपको यह खिताब देना चाहिए था।

रीजन : वे जरूर देते; लेकिन मेरा ख्याल है कि ऐम्मी का दरवाज़ा खोलना उन्हें बर्दाश्त नही हो सका।

ऐम्मी : (दरवाज़े से सूचना देती है।) डा० शुत्जमेकर। (वापस जाती है।)

[एक अधेड़ उम्र का शरीफ आदमी, बढ़िया-सा सूट पहने दाखिल होता है। उसके मुंह पर एक दोस्ताना, किन्तु खुशामदी भाव है, मानो उसे सन्देह है कि उसका स्वागत होगा भी या नही। उसके मृदु व्यवहार और दयालु स्वभाव मे एक पकड़ मे न आने वाला आत्मसीमन और मुख-मुद्राओ मे परिचित किन्तु विदेशी तराश का ऐसा मिश्रण हुआ है कि स्पष्ट हो जाता है कि वह एक यहूदी है। अन्य सुन्दर और नौजवान

यहूदियो की तरह इस सुन्दर और शरीफ यहूदी का सीना भी तीस की उम्र पार करते ही सकुचित हो गया है और उसकी शक्ल मे बासीपन आ गया है, लेकिन फिर भी वह निश्चित रूप से सुन्दर है।]

शरीफ आदमी : तुमने मुझे पहचाना शुत्जमेकर ? यूनीवर्सिटी कालेज स्कूल और बेल्साइज ऐवन्यू। लूनी शुत्जमेकर, याद है न ?

रीजन : क्या ! लूनी ! (हार्दिकता से हाथ मिलाता है।) अरे, मै तो सोचता था कि तुम न जाने कब के मर चुके हो। आओ बैठो। (शुत्ज़मेकर सोफे पर बैठ जाता है। रीज़न खिड़की और सोफे के बीच पड़ी कुर्सी पर बैठता है।) पिछले तीस साल से कहां गायब रहे तुम ?

शुत्जमेकर : कुछ महीने पहले तक जनरल प्रैक्टिस करता रहा। अब रिटायर हो गया हूं।

रीजन : बहुत अच्छा किया, लूनी ! काश, मै भी रिटायर हो पाता। क्या तुम लन्दन मे प्रैक्टिस करते थे ?

शुत्जमेकर : नही।

रीजन : तो शायद, समन्दर-किनारे की फैशनेबल प्रैक्टिस थी।

शुत्जमेकर : मै भला फैशनेबल प्रैक्टिस कैसे खरीद सकता था ? मेरे पास तो एक पैनी भी नही थी। मैने देहात के एक कस्बे में दस शिलिंग फी हफ्ते के किराये पर एक छोटी-सी सर्जरी की दुकान खोली थी।

रीजन : और खूब दौलत कमाई ?

शुत्जमेकर : हां खैर, मेरी हालत काफी अच्छी है। कस्बे मे अपना फ्लैट तो है ही, हर्टफोर्डशायर मे भी मेरा एक मकान है। तुम अगर कभी शनि से सोम तक का वक्त तनहाई और खामोशी

में गुजारना चाहो, तो मैं तुम्हें अपनी मोटर में एक घंटे की नोटिस पर ले जाऊंगा।

रोजन : तो तुम दौलत के अम्बार मे ऐश करते हो! काश, तुम मुझे भी दौलत कमाने की तरकीब सिखा दो। इसका राज बता सकते हो?

शुत्जमेकर : ओह, मेरे केस मे इसका राज बहुत आसान-सा था, हालाकि मै सोचता हूं कि अगर इसपर लोगों का ख्याल जाता तो मै मुसीबत मे पड़ जाता। और मुझे डर है कि तुम सुनकर इसे अखलाक के खिलाफ समझोगे।

रोजन : मेरे दिल में ऐसा कोई तआस्सुब नही है। हां, तो वह राज क्या था?

शुत्जमेकर : दरअसल वह राज सिर्फ दो लफ़्ज थे।

रोजन : 'कन्सल्टेशन फ्री' तो नहीं, क्यों?

शुत्जमेकर : (हैरान होकर) नही, नही। क्या सच तुम ऐसा सोचते हो?

रोजन : (क्षमाशील भाव से) कतई नहीं। मै तो सिर्फ मजाक कर रहा था।

शुत्जमेकर : मेरे तो सिर्फ दो सीधे-सादे लफ्ज थे—'शर्तिया इलाज।'

रोजन : शर्तिया इलाज!

शुत्जमेकर : हा, शर्तिया इलाज। आखिरकार, एक डाक्टर से लोग यही तो चाहते हैं, है न?

रोजन : मेरे प्यारे लूनी, यह बड़े ऊंचे इन्सपिरेशन की बात है। क्या ये लफ्ज तुमने पीतल की प्लेट पर खुदवा लिए थे?

शुत्जमेकर : पीतल की प्लेट मेरे पास नही थी। दुकान की लाल खिड़की पर काले हरफों से लिखवाया था मैने तो। डाक्टर

लियो शुल्जमेकर, एल. आर. सी. पी. एम. आर. सी. एस.। मशवरा और दवाई के छः पेन्स। शर्तिया इलाज।

रीजन : और यह शर्त दस में से नौ मरीजों के केस में सही साबित हुई, है न ?

शुल्जमेकर : (इतने साधारण मूल्यांकन से आहत-सा होकर) ओह, इससे कही ज्यादा। देखो न, ज्यादातर मरीज तो अगर थोड़ी-सी ऐहतियात बरतें और तुम उन्हे माकूल मशवरा दे दो तो वे अपने आप ही अच्छे हो जाते हैं। और फिर मेरी दवाई उन्हें सचमुच फायदा पहुंचाती थी। पैरिश का बनाया केमिकल फूड, जिसमें तुम जानते ही हो कि फॉस्फेड्स होते है। बारह औंस पानी की बोतल में एक टेबिल-स्पून कैमिकल फूड। बीमारी चाहे जो हो, इससे अच्छी कोई दवाई नही हो सकती थी।

रीजन : रेडपैनी, पैरिश के केमिकल फूड का नाम नोट कर लो।

शुल्जमेकर : मै भी यह दवा खाता हूं, जब कभी थकान और कमजोरी महसूस करता हू, समझे। अच्छा तो, गुडबाई। आज मेरे आने से तुम्हें एतराज तो नही है ? सिर्फ तुम्हे मुबारकबाद देने आया था।

रीजन : मै बेहद खुश हूं, लूनी। अगले हफ्ते शनिवार को यहां लंच खाने आओ। अपनी मोटर ले आना और फिर मुझे हर्टफोर्ड-शायर ले चलना।

शुल्जमेकर : जरूर लाऊंगा। हमे दिली खुशी होगी। शुक्रिया। गुडबाई। (वह रीजन के साथ बाहर जाता है। रीजन तुरंत वापस आ जाता है।)

रेडपैनी : आपके आने से पहले बूढ़े पैडी कलेन यहां आए थे, आपको

मुबारकबाद देने वालों में सबसे पहला होने के इरादे से।

रीजन : क्या खूब ! सर पैट्रिक कलेन को बूढ़े पैडी कलेन कहकर पुकारना किसने सिखाया है तुम्हे ? गंवार कहीं के !

रेडपैनी : आप उन्हें सिर्फ इसी नाम से तो पुकारते है।

रीजन : अब नही पुकारूंगा, क्योंकि मै सर कोलेन्जो हो गया हूं। नही तो तुम जैसे छोकरे मुझे भी बूढ़े कौली रीजन कहकर पुकारना शुरू कर देगे।

रेडपैनी : सेन्ट ऐनी मे हम सब इसी नाम से तो पुकारते हैं, आपको।

रीजन : याख ! इस बात ने ही तो मेडिकल कॉलेज के तुलबा को मॉडर्न तहज़ीब का सबसे बेहूदा नमूना बना दिया है। न बड़ों का अदब-कायदा, न शराफत, न···

ऐम्मी : (दरवाजे से घोषणा करती हुई) सर पैट्रिक कलेन। (जाती है।)

[सर पैट्रिक कलेन उम्र मे रीजन से लगभग बीस साल बडे हैं, लेकिन अभी जिन्दगी के बिल्कुल किनारे तक नहीं पहुचे—पहुंचने वाले हैं और इस बात को समझकर अपने को भाग्य पर छोड़ चुके हैं। उनके नाम, उनकी स्पष्ट और रूखी सहज बुद्धि, उनकी लम्बी-चौड़ी काठी, उनके व्यवहार में उस औपचारिक दास्यभाव का पूर्ण अभाव है, जिसके द्वारा इंग्लैंड के बूढे डाक्टर यह व्यक्त कर देते हैं कि उनके यौवन काल में इस पेशे की स्थिति कितनी दयनीय थी, और उनकी स्वर-भंगी से पता चलता है कि वे आयरिश जाति के हैं, लेकिन वे आजीवन इंग्लैंड में ही रहे है और यहां की जलवायु उनके लिए प्रतिकूल नही रही। रीजन के प्रति, जिसे वे पसन्द करते हैं, उनका व्यवहार मनमौजी और पितृवत् है। दूसरो के प्रति वे किंचित रूखे और मितभाषी है, शब्दो की जगह अपने भावों को गुर्राने जैसी आवाजों से व्यक्त करते हैं, और फिर उस उम्र मे अधिक सामाजिक

व्यवहार की कोशिश करने की शक्ति भी उनमे नहीं है ।]

सर पैट्रिक : कहो बरखुरदार । अब तुम्हारा हैट तुम्हारे सिर के लिए छोटा पड़ गया न, क्यों ?

रीजन : बहुत छोटा । मुझे यह फख्र आपकी बदौलत ही हासिल हुआ है ।

सर पैट्रिक : खुशामद की बदौलत, बेटे । फिर भी यह कहने के लिए तुम्हारा शुक्रिया । (वह अंगीठी के निकट रखी आरामकुर्सियों में से एक पर बैठ जाता है । रीजन सोफे पर बैठता है ।) मै तुमसे कुछ बातें करने आया हूं । (रेडपैनी से) ऐ नौजवान ! तुम बाहर जाओ ।

रेडपैनी : जी अभी जाता हूं, सर पैट्रिक । (वह अपने कागज़ो को संभालकर दरवाज़े की ओर बढ़ता है ।)

सर पैट्रिक : शुक्रिया ! बड़े अच्छे लड़के हो । (रेडपैनी गायब हो जाता है।) ये लोग मेरी सब बातें बर्दाश्त कर लेते है, ये नौजवान छोकरे, क्योंकि मै बूढ़ा आदमी हूं, सही माने में बूढ़ा; तुम्हारी तरह नही । तुमने अपनी उम्र की शेखी बघारना तो अभी शुरू ही किया है । कभी तुमने किसी लड़के को मूछें बढ़ाते हुए देखा है ? तो जनाब, एक अधेड़ उम्र का डाक्टर जब अपने बालों को सफेद बनाने की कोशिश करता है, तब कुछ वैसा ही मंजर सामने आता है ।

रीजन : गुड लार्ड ! हां मेरा भी यही ख्याल है । और मैं सोचता था कि मेरी शेखी के दिन बीत गए ! अच्छा यह बताइए कि किस उम्र में जाकर एक आदमी अपनी बेवकूफी से छुटकारा पाता है ?

सर पैट्रिक : उस फ्रेंच आदमी का किस्सा याद है तुम्हे, जिसने अपनी

दादी अम्मा से पूछा था कि हमे किस उम्र में जाकर प्यार की कोशिश से छुटकारा मिलता है ? उस बूढ़ी दादी ने जवाब दिया था कि अभी तक वह यह नही जानती । (रीजन हंसता है।) तो बरखुरदार, मै भी तुमको यही जवाब दे रहा हूं । लेकिन कौली, यह दुनिया मेरे लिए रोज-ब-रोज़ ज़्यादा दिलचस्प बनती जा रही है ।

रीजन : साइन्स मे आपकी दिलचस्पी बदस्तूर कायम है न ?

सर पैट्रिक : ओह लार्ड ! हां । मॉडर्न ज़माने की साइन्स एक शानदार चीज है । तुम अपनी ही महान ईजाद की तरफ देखो ! और सारी महान ईजादों का ख्याल करो ! ये सब हमे कहां ले जा रही हैं ? ठीक मेरे गरीब प्यारे बाप के ख्यालात और ईजादों की ओर ही तो । और उन्हें मरे आज चालीस साल हो गए । ओह, सचमुच यह बड़ी दिलचस्प बाते है ।

रीजन : तो तरक्की कुछ हुई ही नही, क्यों ?

सर पैट्रिक : मेरी बात का गलत मतलब नहीं लगाओ, मेरे बेटे ! मैं तुम्हारी ईजाद को किसी कदर कमतर नही समझता । ज्यादा-तर ईजादें हर पन्द्रहवे साल बाकायदे दुहराई जाती है । लेकिन तुमने जो ईजाद की है वह पिछली बार पूरे डेढ़ सौ साल पहले की गई थी । यह बड़े फख्र की बात है । लेकिन तुम्हारी ईजाद नई नही है । आखिर वह टीका लगाना ही है न । मेरे बाप तो उस वक्त तक टीका लगाने की प्रैक्टिस करते रहे जब तक कि सन् अठारह सौ चालीस में उसको जुर्म नही करार दे दिया गया । इससे उस बेचारे का दिल टूट गया, कौली । इसी सदमे से उनकी मौत हुई । और अब आखिरकार लगता है कि मेरे

बाप ही सही रास्ते पर थे। तुम हमें फिर टीका लगाने की राह पर ले आए हो।

रीजन : मै चेचक के बारे में कतई कुछ नही जानता। मेरे टीके तो तपेदिक,-टाईफायड और प्लेग के है। लेकिन इसमें शक नहीं कि सभी तरह के टीकों का उसूल एक ही है।

सर पैट्रिक : तपेदिक ? म-म-म-म ! तो तुमने तपेदिक का इलाज पा लिया है, क्यों ?

रीजन : मुझे तो ऐसा ही यकीन है।

सर पैट्रिक : आह। यह बड़ी दिलचस्प बात है। याद है ब्राउनिंग के ड्रामे मे बूढ़ा कार्डिनल क्या कहता है ? "मै बगावत के बीस और चार रहनुमाओं को जानता हूं।" तो मेरे बरखुरदार, मै भी ऐसे तीस लोगों को जान चुका हूं, जिन्होंने तपेदिक का इलाज खोज निकाला है। फिर भी कौली, इतने लोग क्यों इस बीमारी से मरते जाते है ? शैतान की करतूत है, शायद ! मेरे बाप के एक पुराने दोस्त थे, सटन कोल्डफील्ड के जार्ज बौडिंगटन। अठारह सौ चालीस में उन्होंने खुली हवा का इलाज ईजाद किया था। वे बेचारे बरबाद हो गए और उनको अपनी प्रैक्टिस छोड़कर भाग जाना पड़ा, क्योंकि उन्होंने सिर्फ खिड़कियां खोल रखने की बात कही थी। और अब ज़माना यह है कि हम तपेदिक के मरीज को छत के नीचे भी नही सोने देते। ओह, ये बाते एक बूढे आदमी के लिए सचमुच बड़ी दिलचस्प है।

रीजन : आप तो पुराने काफिर हैं। आपको मेरी ईज़ाद में रत्ती भर भी यकीन नही है।

सर पैट्रिक : नही-नही, मैं इस कदर यकीन से हाथ नहीं धो बैठा हूं, कौली। लेकिन फिर भी, तुम्हे जेन मार्श की याद है न ?

रीजन : जेन मार्श ? नही।

सर पैट्रिक : तुम्हे कतई याद नही ?

रीजन : नही।

सर पैट्रिक : यानी तुम कहना चाहते हो कि तुम्हे उस औरत की कतई याद नही जिसकी बांह पर तपेदिक का घाव था ?

रीजन : (स्मृति साफ होते ही) ओह, आपकी धोबन की बेटी। उसका नाम क्या जेन मार्श था ? मै भूल गया हूं।

सर पैट्रिक : और शायद तुम यह भी भूल गए हो कि तुमने कौश की टुबरकुलिन से उसका इलाज करने का जिम्मा लिया था।

रीजन : और उसको अच्छा करने की बजाय, उस दवाई ने उसकी पूरी बांह को सड़ा दिया था ? हा, मुझे याद है। बेचारी जेन ! खैर जो भी हो, वह मेडिकल लेक्चरों मे उस बाह को नमूने के बतौर दिखाकर अच्छी-खासी रोजी कमा लेती है।

सर पैट्रिक : फिर भी, तुम्हारा यह इरादा तो नही था, क्यों ?

रीजन : मैंने जोखम उठाई थी।

सर पैट्रिक : तुम्हारा मतलब है, जेन ने जोखम उठाई थी ?

रीजन : खैर, जब किसी नये इलाज को जांचने की जरूरत होती है तब जोखम तो हमेशा मरीज को ही उठानी पड़ती है। और जांच और तजुर्बे के बिना हम किसी चीज का पता भी तो नहीं लगा सकते।

सर पैट्रिक : तो जेन के केस से तुमने किस बात का पता लगाया ?

रीजन : मुझे इस बात का पता चल गया कि वह टीका जिसे बीमारी

का इलाज करना चाहिए था, मरीज को मार भी सकता है।

सर पैट्रिक : यह बात तो मै ही तुमको वता देता। मैने खुद इन मॉडर्न टीकों का कभी-कभी इस्तेमाल किया है। मैने इन टीकों से लोगों की जान ली है और वहुतों को अच्छा भी किया है। लेकिन मैने उनका इस्तेमाल करना छोड़ दिया, क्योंकि मै पहले से यह नही वता सकता था कि किस मरीज की जान ले रहा हूं और किसे अच्छा कर रहा हूं।

रीजन : (मेज़ की दराज़ में से एक पैम्फलेट निकालकर सर पैट्रिक को देते हुए) जव आपको एक घंटे की फ़ुरसत मिले तो इसे ज़रूर पढ़िएगा। और आपको पता चल जाएगा कि ऐसा क्यों था।

सर पैट्रिक : (अपना चश्मा निकालने के लिए वड़वड़ाते और टटोलते हुए) ओह, तुम्हारे पैम्फलेटों की मै परवाह नही करता। खैर, क्या है इसमें ? (पैम्फलेट की ओर देखते हुए) औप्सोनिन ? कौन-सी वला है वह औप्सोनिन ?

रीजन : औप्सोनिन वह चीज होती है जिसे वीमारी के जरासीम पर मक्खन की तरह लपेट देते है, ताकि खून के ह्वाइट कार्पूसल्स उन्हे आसानी सें खा जाएं। (फिर कोच पर वैठ जाता है।)

सर पैट्रिक : यह तो कोई नई चीज नही है। मैने सुना था कि ये ह्वाइट कार्पुसल्स—इनको, क्या नाम है उसका ?—अरे हां मेत्च्नीकोफ—किस नाम से पुकारता है ?

रीजन : फैगोसाइट्स।

सर पैट्रिक : अरे हां, फैगोसाइट्स। ठीक, ठीक, ठीक। हां तो वरखुरदार मैने बहुत साल पहले यह थियरी सुनी थी कि फैगोसाइट्स वीमारी के जरासीम को खा जाते हैं। तुम्हारी

थियरी का तो तब कोई जिक्र भी नही था। साथ ही मैने यह भी सुना था कि यह जरूरी नही कि वे हमेशा बीमारी के जरासीम को खा ही जाते हों।

रीजन : लेकिन अगर आप जरासीम पर औप्सोनिन लपेट दें तो वे उन्हे बिना खाए नही छोड़ सकते।

सर पैट्रिक : गैमॉन।

रीजन : नही, यह गैमॉन नही है। इस्तेमाल मे इसका मतलब सिर्फ यह है कि फैगोसाइट्स जरासीम को तब तक नही खाते जब तक कि जायकेदार वनाने के लिए जरासीम पर मक्खन नही लपेट दिया जाता। खैर वैसे तो मरीज़ खुद ही अपनी जरूरत भर का मक्खन अपने जिस्म में पैदा कर लेता है, लेकिन मेरी खोज का नतीजा यह है कि जिस्म मे इस मक्खन की, जिसे मै औप्सोनिन पुकारता हूं, पैदावार की मिकदार कभी ज्यादा हो जाती है तो कभी कम—आप तो जानते ही है कि कुदरत हमेशा एक लय मे बधकर चलती है—और टीके का काम, जरूरत के मुताबिक, सिर्फ इस लय की रफ्तार को तेज करना है। अगर हमने जेन मार्श को उस वक्त टीका लगाया होता जब उसकी मक्खन-फैक्टरी की पैदावार बढ़ती के दौर मे थी, तो हमने उसकी बांह को अच्छा कर दिया होता। मै इस बढ़ती हुई पैदावार की हालत को पॉजिटिव और गिरती हुई पैदावार की हालत को निगेटिव दौर कहता हूं। आप सही मौके पर टीका लगाते है या नहीं, इसपर ही सब कुछ मुनहसर करता है। आप मरीज को निगेटिव दौर मे टीका लगा दे तो वह मर

जाएगा और अगर पॉजिटिव दौर मे टीका लगाएं तो वह अच्छा हो जाएगा।

सर पैट्रिक : तो जनाब, मेहरबानी करके जरा यह भी बताइए कि आप इस बात को कैसे जानेंगे कि मरीज पॉज़िटिव दौर में है या निगेटिव दौर में ?

रीजन : सेन्ट एनी की लेबोरेटरी मे मरीज के खून की एक बूंद भेज दीजिए ; और मै पन्द्रह मिनट मे उसके अन्दर औप्सोनिन की मिकदार लिखकर वता दूगा। अगर उसकी तादाद एक हो तो टीका जरूर लगाइए और मरीज को अच्छा कर लीजिए। लेकिन अगर तादाद डेसिमल आठ से भी कम हो तो टीका लगाकर उसे मार डालिए। यही है मेरी खोज। हार्वे ने जब से खून के दौरे की खोज की है, तब से लेकर आज तक इतनी अहमतरीन खोज और किसीने नही की। मेरे तपेदिक के मरीज़ अब मरते नही।

सर पैट्रिक : और मेरे मरीज मर जाते हैं, क्योंकि मेरा टीका उनको ऐसे वक्त मे जाकर धर पकड़ता है जव वे तुम्हारे लफ्जों मे, निगेटिव दौर में होते है, यही न ?

रीजन : यकीनन यही बात है। किसी मरीज के जिस्म में पहले उसके औप्सोनिन की जांच किए बगैर ही, टीका लगाना एक तरह से कत्ल को इतना इज्जतदार पेशा वना देना है, जितना कि कोई भी मुअज्जिज डाक्टर उसे वना सकता है। अगर मैं किसी आदमी की हत्या करना चाहूं, तो मुझे इस ढंग से ही करनी चाहिए।

ऐम्मी : (भीतर झांकती हुई) क्या आप एक औरत से मिलेंगे जो अपने

खाविन्द के फेफड़ों का इलाज करवाना चाहती है ?

रीजन : (वेसब्री से) नहीं। क्या मैंने तुमसे नही कहा कि मै कोई मरीज नहीं देखूगा ? (सर पैट्रिक से) जब से लोगों मे यह खबर फैली गई है कि मै कोई जादूगर हूं जो सीरम की एक बूद से ही तपेदिक के मरीज को अच्छा कर देता हूं, तब से मै हर वक्त नाकेबंदी की हालत मे रहता हूं। (ऐम्मी से) देखो, जिन लोगों के साथ वक्त मुकर्रर नही हुआ है, उनकी खबर देने फिर कभी मत आना। मैंने तुमसे कह दिया कि मै किसीको नही देखूगा।

ऐम्मी : अच्छा तो मैं उससे कह देती हूं कि कुछ देर इन्तजार करे।

रीजन : (गुस्से से) तुम उससे कह दो कि मै उससे नहीं मिलूगा और उसे यहां से भगा दो, सुना तुमने ?

ऐम्मी : (अविचलित) अच्छा तो आप मिस्टर कटलर वालपोल से तो मिलेगे न ? वह इलाज कराने नही आए। सिर्फ आपको मुबारकबाद देना चाहते है।

रीजन : जरूर। उन्हे अन्दर ले आओ। (ऐम्मी जाने के लिए मुडती है) ठहरो। (सर पैट्रिक से) मै आपसे दो मिनट एक प्राइवेट मामले पर वात करना चाहता हूं। (ऐम्मी से) ऐम्मी, मिस्टर वालपोल से कहो कि सिर्फ दो मिनट के लिए इन्तजार करें। मै इस बीच आपसे मशवरा कर लूगा।

ऐम्मी : ओह, वे खुशी से दो मिनट इन्तज़ार कर लेंगे। वे इस वक्त उस वेचारी औरत से बात कर रहे है। (वाहर जाती है।)

सर पैट्रिक : हां, तो क्या वात है ?

रीजन : देखिए, मेरे ऊपर हंसिएगा नही। मै आपकी सलाह चाहता हूं।

सर पैट्रिक : डाक्टरी सलाह ?

रीजन : जी हा। मेरे अन्दर कुछ गड़बड़ है। मुझे मालूम नही कि वह क्या है।

सर पैट्रिक : न मुझे ही मालूम है। शायद तुम अपनी जांच करवा चुके हो।

रीजन : हां, बिल्कुल। जिस्म के किसी हिस्से में कोई खराबी नहीं मिली, कम से कम खास कुछ नहीं। लेकिन मेरे अन्दर एक अजब किस्म का दर्द रहता है। यह पता नहीं, किस जगह पर। मै ठीक-ठीक उंगली रखकर नही बता सकता कि दर्द कहां होता है। कभी लगता है दिल में हो रहा है, कभी मुझे रीढ़ का शक होता है। दरअसल इस दर्द सें मुझे खास तकलीफ भी नही होती, लेकिन मन बिल्कुल परेशान हो जाता है। मुझे महसूस होता है कि शायद कुछ गड़बड़ होने वाला है। इसके अलावा कुछ और सिम्पटम्स भी है। मेरे दिमागं में संगीत की धुने चक्कर काटती है और वे मुझे बेहद अच्छी लगती है, जबकि मै जानता हूं कि वे निहायत चलताऊ किस्म की बेहूदी धुनें है।

सर पैट्रिक : क्या तुम्हे आवाज़े भी सुनाई देती है?

रीजन : नही।

सर पैट्रिक : मुझे इस बात की खुशी है। मेरे मरीज जब मुझसे कहते है कि उन्होंने हार्वे से भी बड़ी कोई खोज की है और साथ ही यह भी कि उन्हे आवाज़े सुनाई देती है, तो मै उन्हें ताले के अन्दर बंद कर देता हूं।

रीजन : तो आपका ख्याल है कि मै पागल हो गया हूं। ठीक ऐसा ही शक मेरे दिमाग में भी एक-दो बार उठा है। सच-सच बताइए मैं बर्दाश्त कर लूगा।

सर पैट्रिक : तुम्हें यकीन है कि तुम्हें आवाजे नही सुनाई देती ?

रीजन : यकीनन, नहीं ।

सर पैट्रिक : तो फिर, यह सिर्फ निरी बेवकूफी है ।

रीजन : अपनी प्रैक्टिस के दौरान क्या आपका कभी ऐसे मरीजों से साबका पड़ा है ?

सर पैट्रिक : हां, हां, बहुत बार । सत्रह और बाईस की उम्र के बीच अक्सर ऐसी शिकायत पैदा हो जाती है । कभी-कभी चालीस या उसके आसपास पहुंचकर यह बीमारी एक बार फिर उभरती है । तुम कुवारे हो, समझे । यह गंभीर बात नही है, अगर तुम थोड़ी एहतियात वरतो तो ।

रीजन : अपने खाने के बारे में ?

सर पैट्रिक : नही; अपने बर्ताव के बारे मे । तुम्हारी रीढ़ मे कोई खराबी नही है और न तुम्हारे दिल में ही कोई खराबी है । लेकिन तुम्हारी अक्ल मे जरूर कुछ खराबी है । तुम मरोगे तो नही, लेकिन अपने आपको अहमक जरूर साबित कर सकते हो । इसलिए सावधान रहो ।

रीजन : देखता हूं कि आपको मेरी ईजाद पर एतबार नही है । खैर, कभी-कभी तो मै खुद भी उसपर एतबार नहीं करता । फिर भी आपका मशकूर हू । क्या अब वालपोल को ऊपर बुला लें ?

सर पैट्रिक : ओह, जरूर बुला लो । (रीजन घंटी बजाता है ।) बड़ा होशियार आपरेटर है, यह वालपोल, हालाकि वह सिर्फ तुम्हारे क्लोरोफॉर्म सर्जनों मे से ही एक है । मैंने जब प्रैक्टिस शुरू की थी, उन दिनों मरीज़ को शराब पिलाकर नशे मे कर देते थे, फिर पढ़ने वाले लड़के और कुली उसे नीचे दबाकर थामे रहते थे, और

हमे दांत भीचकर जल्दी से ऑपरेशन पूरा करना पड़ता था। आजकल तुम बेफिक्री से यह काम कर सकते हो और ऑपरेशन के बाद काफी देर तक दर्द का पता भी नही चलता, जब तक कि तुम अपनी चेक लेकर और बैग उठाकर मरीज के घर से चले नहीं जाते। कौली, मेरा तो दावा है कि क्लोरोफार्म ने बेहद नुकसान पहुंचाया है। इसने हर गधे को सर्जन बनने का मौका दे दिया है।

रीजन : (ऐम्मी से जो घटी सुनकर आती है।) मिस्टर वालपोल को ऊपर ले आओ।

ऐम्मी : वह उस औरत से बातें कर रहे हैं।

रीजन : (उत्तेजित होकर) मैने तुमसे कहा नही कि

[ऐम्मी उसकी बात पर ध्यान दिए बगैर ही चली जाती है। वह कंधे हिलाकर, आगे बोलने से रुक जाता है और अलमारी की तरफ पीठ करके उदासीन भाव से बैठ जाता है।]

सर पैट्रिक : मै तुम्हारे कटलर वालपोल और उसके जैसे छोकरों को खूब पहचानता हूं। उनको यह मालूम हो गया है कि एक आदमी के जिस्म मे पुराने अंगों के ऐसे टुकड़े और छितड़े भरे पडे है, जिनका उसके लिए कोई इस्तेमाल नही है। क्लोरोफार्म की बदौलत तुम उनमे से आधे दर्जन टुकड़ों को काटकर फेंक भी दो तो उसका कोई बिगाड़ नही होगा, सिवाय इसके कि कुछ दिनों की बीमारी झेलनी पड़ेगी और तुम्हारी फीस के रूप में उसे कुछ गिन्नियों से हाथ धोना पड़ेगा। मै इस वालपोल खान्दान को पन्द्रह साल से जानता हूं। इसका बाप पचास गिन्नी लेकर लोगों की जीभ के ऊपरी हिस्से के छोर काटा करता

था और हर बार दो गिन्नी की फीस लेकर पूरे साल तक रोज़ाना उनके गले में तेजाब की फुरहरी चुपड़ा करता था। इसका बहनोई दो सौ गिन्नी लेकर लोगों के टौन्सिल निकालता रहा, फिर उसने यह काम छोड़कर दुगनी फीस पर औरतों के केस लेने शुरू किए। यह कटलर खुद आदमी के जिस्म की अन्दरूनी बनावट का बड़ी मेहनत से मुताला करता रहा, ताकि इसे ऑपरेट करने के लिए कोई नई चीज मिल जाए। आखिरकार एक ऐसी चीज उसके हाथ लग ही गई, जिसे वह नूसीफार्म सैक के नाम से पुकारता है, और जिसके ऑपरेशन को इसने एक फैशन बना दिया है। इस अंग को काट फेकने के लिए लोग इसे पाच सौ गिन्नियां देते है। इससे तो अच्छा है कि ये लोग अपने बाल कटवाने के लिए इतनी रकम दिया करे, क्योंकि कम से कम उससे उनकी शक्ल तो कुछ अच्छी निकल आती है। लेकिन मेरा ख्याल है कि इस ऑपरेशन के बाद वे अपने को बहुत बड़ा आदमी समझने लगते है। आजकल तुम डिनर खाने के लिए भी बाहर नही निकल सकते, क्योंकि तुम्हारा पड़ौसी अपने किसी फजूल के ऑपरेशन की डींग हाके बिना तुमको एक कदम भी आगे नही बढ़ने देगा।

ऐम्मी : (घोषणा करते हुए) मिस्टर कटलर वालपोल। (जाती है।)

[कटलर वालपोल चालीस साल का उद्यमी और निस्संकोची व्यक्ति है, जिसके सफाई से तराशे हुए चेहरे, छोटी, बाहर निकली हुई, एक तरह से खूबसूरत नाक और उसकी ठोड़ी और जबडे के बीच पडने वाले तीन महीन रेखाकोणो से उसकी आकृति निश्चयात्मक और सुडौल दिखाई देती है। रीजन की कोमल, टूटी-फूटी और सर पैट्रिक की कोमल किन्तु

ऊबड-खावड़ बूढ़ी रेखाओं के मुकाबले में उसका चेहरा मशीन से बनाया हुआ मोम चढा हुआ-सा नजर आता है। लगता है कि वह कभी हताश नही होता, कभी सन्देह-ग्रस्त नही होता। उसे देखकर महसूस होता है कि वह अगर कभी गलती करेगा भी तो पूरी तरह और दृढतापूर्वक। उसके हाथ साफ-सुथरे और खाए-पिए-से आदमी के हैं। वाहे छोटी हैं और शरीर की गठन शक्ति और सक्षिप्तता की दृष्टि से हुई है, कद बढ़ाने की दृष्टि से नही। उसने एक स्मार्ट सूट पहन रखा है, जिसकी वास्कट बेहद भड़कीली है। गले में एक रंगीन स्कार्फ है, घडी की चेन पर आभूषण खुदे हुए हैं, जूतो मे पट्टिया बनी हैं—कुल मिलाकर लगता है कि वह एक खिलाड़ी है। वह सीधे रीजन के पास जाकर उससे हाथ मिलाता है।]

वालपोल : रीजन, मेरे अजीज, दिली मुबारकबाद ! तुम इसके मुस्तहक थे।

रीजन : शुक्रिया।

वालपोल : एक आदमी की हैसियत से, याद रखो। तुम एक आदमी की हैसियत से ही इसके मुस्तहक थे। तुम्हारी औप्सोनिन तो निरी वाहियात चीज है, जैसा कि तुम्हे कोई भी काबिल सर्जन बता सकता है। लेकिन हम सब यह देखकर निहायत खुश हैं कि तुम्हारी जाती खूबियों को अब सरकार ने भी मान लिया है। सर पैड्रिक, आप कैसे है ? हाल में ही मैने आपको एक पुर्जा भेजा था, अपनी ईजाद की हुई एक छोटी-सी चीज कंधों की हड्डी काटने वाली एक नई आरी के बारे मे।

सर पैट्रिक . (विचारमग्न मुद्रा मे) हां, मुझे पुर्जा मिला था। आरी बढिया है ; काफी कारगर और आसानी से इस्तेमाल किया जाने वाला औजार है।

वालपोल : (विश्वस्त भाव से) मै जानता था कि आप उसकी खूबियों को देख सकेंगे।

सर पैट्रिक : हा, मुझे याद है कि पैंसठ साल पहले मैने यह आरी देखी थी।

वालपोल : क्या !

सर पैट्रिक : तब इसे कैबिनेट मेकर की जिम्मी के नाम से पुकारते थे।

वालपोल : निकलो यहां से ! क्या बकवास है ! कैबिनेट मेकर की...

रीजन : इनकी बात का बुरा न मानो, वालपोल। इन्हे रश्क हो रहा है।

वालपोल : बहरहाल, मै आप दोनों की प्राइवेट बातचीत मे दखलन्दाज तो नही हो गया ?

रीजन : नही, नही। बैठ जाओ। मै इनसे मशवरा कर रहा था। मेरी तबियत कुछ गिरी-गिरी-सी रहती है। शायद, ज्यादा काम करने की वजह से।

वालपोल : (फौरन तेजी से) मुझे मालूम है कि तुम्हे क्या हुआ है। तुम्हारे चेहरे की रंगत से ही मैने भांप लिया, तुम्हारे हाथ की गिरफ्त से ही मै उसे महसूस कर सकता हूं।

रीजन : मुझे क्या हुआ ?

वालपोल : तुम्हारे खून में जहरबाद हो गया है।

रीजन : खून मे जहरबाद ! नामुमकिन।

वालपोल : मै कहता जो हूं कि तुम्हारे खून में जहरबाद हो गया है। पचानवे फीसदी इन्सान खून में जहरबाद हो जाने की बीमारी के मरीज होते है और इसकी वजह से ही मरते भी है। यह तो अलिफ-बे की तरह आसान बात है। तुम्हारे नूसीफार्म-सैक में

गलाजत भरी है—अनपचा खाना और गंदगी—सड़े मांस का जहर। तुम मेरी सलाह पर अमल करो रीजन। मैं इसे काटकर निकाल दूंगा। इसके बाद तुम एक नये ही आदमी बन जाओगे।

सर पैट्रिक : मौजूदा हालत मे ये तुम्हें पसन्द नहीं हैं।

वालपोल : नही, कतई नहीं। मै ऐसे किसी आदमी को पसन्द नहीं करता जिसके खून का दौरा ठीक नही हो। मै दावे से कहता हूं कि ऐसे मुल्क मे, जहां अक्लमंदी से हकूमत चलाई जाती हो, लोगों को अपने नूसीफार्म सैक लेकर घूमने की इजाज़त ही नहीं दी जाएगी कि वे अपने को हर तरह की छूत की बीमारियों का मरकज बना ले। हरेक के लिए इसका आपरेशन लाज़िमी होना चाहिए। यह टीका लगाने-लगवाने से दसगुनी अहमियत रखने वाला काम है।

सर पैट्रिक : क्या तुमने भी अपना सैक निकलवा दिया है ?

वालपोल : (विजेता की मुद्रा मे) मेरे अन्दर तो है ही नही। मेरी ओर देखो। मेरे अन्दर ऐसे कोई सिम्पटम नही है। मै घंटी की तरह बिल्कुल भला-चंगा हू। पाच फीसदी लोगों मे यह सैक होता ही नही। और मै उन पांच फीसदी इन्सानों मे से हूं। मै आपको एक मिसाल देता हूं। आप मिसेज जैक फोल्ज़ेम्बी को जानते है—अरे वही स्मार्ट मिसेज जैक फोल्ज़ेम्बी न ? ईस्टर की छुट्टियों में मैने उनकी ननद, लेडी गोरन का ऑपरेशन किया तो मालूम हुआ कि उनका सैक तो इतना बड़ा है जितना मैने पहले कभी देखा ही नही था। उसमें करीब दो औंस गलाज़त भरी थी। मिसेज फोल्ज़ेम्बी मे सही जज़बा है—सच्ची, सफाई और

सेहत का जजबा। उन्हें वह बर्दाश्त नही हुआ कि उनकी ननद तो साफ और तन्दुरुस्त औरत बन जाए और वे एक सफेद प्रेतनी बनी रहे। और उन्होने जोर दिया कि मै उनका भी ऑपरेशन कर दू। लेकिन बाई गॉड, उनके अन्दर यह सैक था ही नही। उसका नामोनिशान तक न था ! मै इतनी हैरत में पड़ गया—इतनी उलझन में कि स्पंजों को निकालना तक भूल गया और उन्हें उसके जिस्म के भीतर ही छोड़कर टांके लगाने लगा। यह तो खैरियत हुई कि नर्स को उनका ख्याल आ गया। दरअसल, मैने यकीन कर लिया था कि उनका सैक ज़रूरत से ज़्यादा बड़ा होगा। (सोफे पर बैठ जाता है और कफ मे से हाथ निकालकर कमर पर उगलियों के पोर इस तरह गड़ाता है कि कुहनियां बाहर निकल जाती हैं और कधे चौकोर हो जाते हैं।)

ऐम्मी : (भीतर झांककर) सर रैल्फ ब्लूमफील्ड बौनिगटन। (इस घोषणा के बाद देर तक प्रतीक्षा का वातावरण छाया रहता है ; लेकिन सर रैल्फ प्रवेश नही करते।)

रीजन : (आखिरकार) कहां है वह ?

ऐम्मी : (पीछे की ओर देखकर) वाह रे, मै तो सोचती थी कि मेरे पीछे-पीछे आ रहे हैं। लगता है वह नीचे उस औरत से बात करने के लिए रुक गए है।

रीजन : (विस्फोट की तरह) मैने तुमसे ताकीद की थी कि उस औरत से जाकर कह दो—(ऐम्मी गायब हो जाती है।)

वालपोल : (फिर उछलकर खडा होते हुए) ओह, सुनो तो रीजन, इससे मुझे याद आया। मै उस बेचारी औरत से बातें करता रहा था। उसके खाविन्द का मामला है और वह सोचती है कि वह

तपेदिक का मरीज है। हमेशा की तरह फिर वही गलत डायग्नोसिस की मिसाल। इन बेहूदे जेनरल प्रेक्टीशनरों को तो कन्सल्टेन्ट डाक्टर की हिदायत के बगैर किसी मरीज को छूने तक की इजाजत नहीं मिलनी चाहिए। वह अपने खाविन्द के सिम्पटम्स के बारे मे मुझे बता रही थी, और उसका केस बर्छी के डडे की तरह बिल्कुल सीधा और सादा है: खून में जहर का फैल जाना। उस बेचारी की मुसीबत यह है कि वह गरीब है। वह उसके ऑपरेशन का खर्च नहीं बर्दाश्त कर सकती। खैर, तुम उसके खाविन्द को मेरे पास भेज दो। मै मुफ्त में उसका ऑपरेशन कर दूगा। उसके लिए मेरे नर्सिग होम में कमरा मिल जाएगा। मै उसे ठीक कर दूगा और उसे खिला-पिलाकर सुखी बना दूगा। लोगों को सुखी बनाना मुझे अच्छा लगता है।
(वह खिड़की के पास रखी कुर्सी पर जाकर बैठ जाता है।)

ऐम्मी : (भीतर झाककर) लीजिए, वह आ गए।

[सर रैल्फ ब्लूमफील्ड बौनिंगटन जैसे हवा में उड़ते हुए कमरे मे दाखिल होते है। वे लम्बे कद के आदमी हैं, जिनका सिर लम्बे और पतले अडे के मानिन्द है। अपने ज़माने मे वे दुबले आदमी रहे है लेकिन अब आयु की छठी दशाब्दि मे पहुचकर उनकी वास्कट कुछ बाहर को फैलने लगी है। उनकी भूरी भौहे सरल और अनालोच्य भाव से धनुषाकार तन जाती हैं। उनकी आवाज अत्यन्त सुरीली है, उनका भाषण एक अटूट सगीत की तरह होता है, और वे उसकी ध्वनि से कभी तग नही आते। उनके व्यक्तित्व से आत्मसंतोष, प्रसन्नता, आत्मविश्वास और स्वास्थ्य की रेखाए विकीर्ण होती है, मानो रोग और चिन्ता उनकी मौजूदगी में पास फटक ही नही सकते। कहा जाता है कि उनकी सुरीली आवाज़ को सुनकर टूटी हड्डियां तक जुड गई हैं। वे जन्मजात आरोग्य-दाता है, इलाज

और योग्यता से उतने ही स्वतन्त्र, जितना कोई भी ईसाई वैज्ञानिक होता है। वे जब भाषण देने लगते हैं या वैज्ञानिक तथ्यों की व्याख्या करते हैं, तो उनमे वालपोल जैसी स्फूर्ति और शक्ति आ जाती है। लेकिन यह एक ऐसी मृदु, अनेकस्तरीय, वातावरणीय स्फूर्ति और शक्ति होती है कि वह अपने वक्ता और श्रोताओ, सभी को अपने आवरण मे लपेट लेती है और उन्हे बीच मे टोकना या उनकी बात पर ध्यान न देना असभव हो जाता है, और सिवाय इने-गिने शक्तिशाली विचारको को छोडकर सभी श्रोताओं मे वक्ता के प्रति आदर और विश्वास की भावना जगा देती है। मैडिकल-जगत् मे सर रैल्फ बी. बी के नाम से प्रसिद्ध हैं, और उनकी प्रेक्टिस की असामान्य सफलता के प्रति डाक्टरो की ईर्ष्या की धारा केवल इस धारणा से कुंठित हो जाती है कि वैज्ञानिक दृष्टि से उनको सभी लोग एक बहुत बडा पाखण्डी समझते हैं। दरअसल वे चिकित्सा के बारे मे उतना ही अधिक (या कि उतना ही कम) जानते हैं जितना कि उनके अन्य सम-कालीन डाक्टर लेकिन जिन गुणो के बूते पर और लोग सफल माने जाते हैं वे उनके असाधारण व्यक्तित्व की खूटी पर टगकर अपनी कमज़ोरियां ज़ाहिर कर देते हैं।]

बी. बी. : आ हा ! सर कोलेन्जो, सर कोलेन्जो, है न ? नाइटवर्ग मे आपका खैरमकदम !

रीजन : (हाथ मिलाता हुआ) शुक्रिया, बी. बी.।

बी. बी. : अरे, सर पैट्रिक भी है ! और आज आपका मिजाज कैसा है ? थोडा-सा सर्द ? थोडा-सा सख्त ? लेकिन चंगा और फिर भी हम सबसे ज्यादा चुस्त-चालाक। (सर पैट्रिक गुर्राने जैसी आवाज़ करते हैं।) यह क्या ! वालपोल भी मौजूद है, खोए-खोए दिमाग का भिखारी, क्यों ?

वालपोल : इसका क्या मतलब ?

तपेदिक का मरीज है। हमेशा की तरह फिर वही गलत डाय-ग्नोसिस की मिसाल। इन बेहूदें जेनरल प्रेक्टीशनरों को तो कन्सल्टेन्ट डाक्टर की हिदायत के वगैर किसी मरीज को छूने तक की इजाजत नही मिलनी चाहिए। वह अपने खाविन्द के सिम्पटम्स के बारे में मुझे बता रही थी, और उसका केस बर्छी के डंडे की तरह विल्कुल सीधा और सादा है: खून में जहर का फैल जाना। उस बेचारी की मुसीबत यह है कि वह गरीब है। वह उसके ऑपरेशन का खर्च नही वर्दाश्त कर सकती। खैर, तुम उसके खाविन्द को मेरे पास भेज दो। मै मुफ्त में उसका ऑपरेशन कर दूंगा। उसके लिए मेरे नर्सिंग होम में कमरा मिल जाएगा। मै उसे ठीक कर दूंगा और उसे खिला-पिलाकर सुखी बना दूगा। लोगों को सुखी बनाना मुझे अच्छा लगता है।
(वह खिड़की के पास रखी कुर्सी पर जाकर बैठ जाता है।)

एेम्मी : (भीतर झांककर) लीजिए, वह आ गए।

[सर रैल्फ ब्लूमफील्ड वौनिंगटन जैसे हवा मे उड़ते हुए कमरे मे दाखिल होते हैं। वे लम्बे कद के आदमी हैं, जिनका सिर लम्बे और पतले अडे के मानिन्द है। अपने ज़माने मे वे दुबले आदमी रहे है लेकिन अब आयु की छठी दशाब्दि मे पहुंचकर उनकी वास्कट कुछ बाहर को फैलने लगी है। उनकी भूरी भौंहे सरल और अनालोच्य भाव से धनुषाकार तन जाती हैं। उनकी आवाज़ अत्यन्त सुरीली है, उनका भाषरण एक अटूट सगीत की तरह होता है, और वे उसकी ध्वनि से कभी तंग नही आते। उनके व्यक्तित्व से आत्मसंतोष, प्रसन्नता, आत्मविश्वास और स्वास्थ्य की रेखाए विकीर्ण होती है, मानो रोग और चिन्ता उनकी मौजूदगी मे पास फटक ही नही सकते। कहा जाता है कि उनकी सुरीली आवाज़ को सुनकर टूटी हड्डियां तक जुड गई हैं। वे जन्मजात आरोग्य-दाता है, इलाज

और योग्यता से उतने ही स्वतन्त्र, जितना कोई भी ईसाई वैज्ञानिक होता है। वे जब भाषण देने लगते हैं या वैज्ञानिक तथ्यों की व्याख्या करते हैं, तो उनमे वालपोल जैसी स्फूर्ति और शक्ति आ जाती है। लेकिन यह एक ऐसी मृदु, अनेकस्तरीय, वातावरणीय स्फूर्ति और शक्ति होती है कि वह अपने वक्ता और श्रोताओ, सभी को अपने आवरण मे लपेट लेती है और उन्हे बीच मे टोकना या उनकी बात पर ध्यान न देना असभव हो जाता है, और सिवाय इने-गिने शक्तिशाली विचारकों को छोडकर सभी श्रोताओं मे वक्ता के प्रति आदर और विश्वास की भावना जगा देती है। मैडिकल-जगत् मे सर रैल्फ बी. बी. के नाम से प्रसिद्ध हैं, और उनकी प्रेक्टिस की असामान्य सफलता के प्रति डाक्टरो की ईर्ष्या की धारा केवल इस धारणा से कुंठित हो जाती है कि वैज्ञानिक दृष्टि से उनको सभी लोग एक बहुत बडा पाखण्डी समझते हैं। दरअसल वे चिकित्सा के बारे मे उतना ही अधिक (या कि उतना ही कम) जानते हैं जितना कि उनके अन्य सम-कालीन डाक्टर लेकिन जिन गुणो के बूते पर और लोग सफल माने जाते हैं वे उनके असाधारण व्यक्तित्व की खूंटी पर टगकर अपनी कमज़ोरियां ज़ाहिर कर देते हैं।]

बी. बी. : आ हा ! सर कोलेन्जो, सर कोलेन्जो, है न ? नाइटवर्ग मे आपका ख़ैरमकदम !

रीजन : (हाथ मिलाता हुआ) शुक्रिया, बी. बी.।

बी. बी. : अरे, सर पैट्रिक भी है ! और आज आपका मिजाज कैसा है ? थोड़ा-सा सर्द ? थोड़ा-सा सख्त ? लेकिन चंगा और फिर भी हम सबसे ज़्यादा चुस्त-चालाक। (सर पैट्रिक गुर्राने जैसी आवाज करते है।) यह क्या ! वालपोल भी मौजूद है, खोए-खोए दिमाग का भिखारी, क्यों ?

वालपोल : इसका क्या मतलब ?

बी. बी. : क्या भूल गए, तुम उस खूबसूरत ऑपेरासिंगर को, जिसे मैने तुम्हारे पास उसके गले के टौसिल निकालने के लिए भेजा था ?

वालपोल : (उछलकर खडा होता हुआ) गुड हैवन्स ! भले आदमी, आपके कहने का कहीं यह मतलब तो नहीं कि आपने उसे गले के ऑपरेशन के लिए भेजा था ?

बी. बी. : (व्यंग्यपूर्वक) आ हा ! हा-हा ! आ हा ! (वालपोल की ओर उंगली उठाकर लार्क जैसी स्वरलहरी मे) और तुमने उसका नूसीफार्म सैक काटकर निकाल दिया । वाह ! वाह ! आदत से लाचार हो ! आदत से लाचार हो ! फिक्र मत करो, फि—क्र—म—त करो । इसके बाद उसकी आवाज ठीक हो गई और वह सोचती है कि जिन्दा सर्जनों में तुमसे बड़ा कोई है ही नहीं । इसलिए बस तुम हो, तुम हो, तुम हो ।

वालपोल : (दुःखी स्वर मे फुसफुसाकर, अत्यन्त गम्भीरता से) खून में जहरबाद । समझा । अब समझा । (फिर बैठ जाता है ।)

सर पैट्रिक : आपकी देखरेख मे अब उस मशहूर खान्दान का क्या हाल है, सर रैल्फ ?

बी. बी. : हमारे दोस्त रीजन को यह जानकर निहायत खुशी होगी कि मैने नन्हें प्रिंस हेनरी पर उनके औप्सोनिन इलाज का पूरी कामयाबी से इस्तेमाल किया है ।

रीजन : (एकदम चौंककर उत्सुकतापूर्वक) लेकिन कैसे ?...

बी. बी. : (बात जारी रखते हुए) मुझे टाईफायड का शक हुआ । बड़े माली के लड़के को हुआ था, सो मै एक दिन सेन्ट एनी गया और वहां से तुम्हारे इस शानदार औप्सोनिन सीरम का

एक ट्यूब ले आया । यह मेरी बदकिस्मती है कि तुम उस वक्त वहां नही थे ।

रीजन : मुझे उम्मीद है कि उन्होने आपको तफसील से समझा दिया होगा कि···

बी. बी. : (इस बेहूदे सुझाव को जैसे हाथ से टालते हुए) खुदा तुम्हारा भला करे, मेरे अजीज दोस्त, मुझे कुछ समझने की जरूरत नही थी । मैं दरवाज़े पर गाड़ी मे अपनी बीवी को छोड़कर अन्दर गया था; और तुम्हारे नौजवान छोकरों से सीखने का मेरे पास वक्त नही था । मै इसके बारे मे सब कुछ जानता हूं । खून के जहर को मारने वाली इन एण्टी-टॉक्सिन दवाइयों का मै तभी से इस्तेमाल करता आ रहा हू, जब से उनकी ईजाद हुई है ।

रीजन : लेकिन ये एण्टी टॉक्सिन दवाइयां नही है । और अगर ठीक वक्त पर इस्तेमाल न की जाएं तो जान के लिए खतरनाक होती हैं ।

बी. बी. : इसमें क्या शक है, होती ही है । अगर ठीक वक्त पर इस्तेमाल न करो तो हर चीज खतरनाक होती है । सुबह नाश्ते के वक्त सेब खाओ तो वह तुम्हे फायदा करेगा । रात को सोने से पहले सेब खाओ तो पूरे हफ्ते के लिए तुम्हारा पेट गड़बड़ कर देगा । एण्टी-टॉक्सिन दवाइयों के इस्तेमाल के लिए सिर्फ दो कायदे हैं । पहला तो यह है कि उनसे डरना नही चाहिए । दूसरा यह कि दिन में तीन बार खाने से पन्द्रह मिनट पहले उनका इन्जेक्शन लगाना चाहिए ।

रीजन : (घबरा जाता है।) खुदा के लिए, बी. बी. नही, नही, नहीं !

बी. बी. : (दुर्दमनीय भाव से बात जारी रखते हुए) हां, हां, हां, कौली ।

सर पैट्रिक : नही, लेकिन मै तुम्हारे गले में भी इस जरासीम को दिखा सकता हूं, जबकि तुम्हें डिप्थीरिया की बीमारी नही है।

बी. बी. : नही, बिल्कुल उसी जरासीम को तुम नही दिखा सकते, सर पैट्रिक। यह एकदम नया जरासीम होगा; बदकिस्मती से दोनों बिल्कुल इतने एकसां होते है कि तुम उनका फर्क देख ही नही सकते। मेरे अजीज़, सर पैट्रिक, तुम्हे यह बात समझ लेनी चाहिए कि इन दिलचस्प नन्हे जन्तुओं मे से हरएक बड़ा जबर्दस्त नकलची होता है। आदमी जिस तरह एक-दूसरे की नकल करते हैं, जरासीम भी एक-दूसरे की नकल करते हैं। लोयफर ने डिप्थीरिया के जिस जरासीम की खोज की थी, वही सिर्फ असली है, लेकिन एक नकली जरासीम भी होता है, जो देखने मे हू-ब-हू असली की तरह लगता है और जिसे तुम, जैसा कि तुमने अभी कहा, मेरे गले मे भी दिखा सकते हो।

सर पैट्रिक : लेकिन असली और नकली का फर्क तुम कैसे करते हो?

बी. बी. : वाह, यह तो साफ जाहिर है कि अगर जरासीम असली लोयफर है तो आपको डिप्थीरिया की बीमारी हो जाएगी; और अगर नकली है तो आपको कुछ नही होगा। बिल्कुल आसान बात है। साइन्स हमेशा आसान और गंभीर होती है। नीम-सचाई ही हमेशा खतरनाक होती है। कुछ नादान सनकी जरासीम के बारे मे सतही मालूमात इधर-उधर से जमा कर लेते है; फिर वे अखबारों और रिसालों में ऊंटपटांग मजमून लिखते हैं। और इस तरह साइन्स को वदनाम करते है। वहुत-से ईमानदार और भले लोगों को धोखे मे डालकर वे गुमराह

कर देते हैं। लेकिन साइन्स के पास उनकी सब दलीलों के मुंहतोड़ जवाब है।

इल्म की कमी बड़ी खतरनाक चीज़ है
छककर पियो, या इल्म के चश्मे का ज़ायाक़ा न लो।

सर पैट्रिक, मेरा मंशा आपकी पीढ़ी का मज़ाक उड़ाना नही है ; आखिर आप जैसे पुराने खिलाड़ियों ने अपने पेशे के तजुर्बे और अपने दिमाग से बड़े-बड़े कमाल कर दिखाए हैं, लेकिन जब मै आपके जमाने के आम डाक्टरों की बात सोचता हूं, जो अपनी नासमझी की वजह से रगें काटकर खून निकाल देते थे, प्यालानुमा औज़ार से खून खीचते थे या मरीज को दस्त कराते थे और अपने कपड़ों और औजारों से मरीज के इर्द-गिर्द जरासीम बिखेरते फिरते थे, और जब मै इन सब बातों से अभी उस दिन नन्हे प्रिंस के इलाज के अपने साइन्टिफिक और सादा तरीके का मुकाबला करता हूं, तो मै अपनी पीढ़ी के लोगों पर फख्र करने के लिए मजबूर हो जाता हूं, उन लोगों पर जिन्होने जरासीम की थियरी के मुताविक तालीम पाई है, जो सन् अठारह सौ सत्तर के दिनों नजरिया-ए-इर्तका के लिए लड़ी गई साइन्टिफिक जंग के सूरमा है। हमारे अन्दर खामियां हो सकती है, लेकिन हम लोग साइन्सदां है। और, रीजन, यही वजह है कि मैने तुम्हारे इलाज को अपना लिया है और मै उसे आगे बढ़ा रहा हूं। (सोफे के पास कुर्सी पर बैठ जाता है।)

ऐम्मी : (दरवाज़े से घोषणा करते हुए) डाक्टर ब्लेन्किन्सोप।

[डा० ब्लेन्किन्सोप स्पष्टत: सब लोगो से भिन्न है। जाहिर है कि वे सम्पन्न व्यक्ति नही हैं। वे ढीले-ढाले, थुलथुल शरीर के है और उनके

जानते हो, हाथ कंगन को आरसी क्या ? तुम्हारी औप्सोनिन बेहद कामयाब साबित हुई। नन्हें प्रिंस पर उसका जादू जैसा असर हुआ। इन्जेक्शन लगाते ही उसका टैम्प्रेचर एकदम चढ़ने लगा। मैने फौरन उसे बिस्तर में लिटा दिया, और एक हफ्ते में ही वह बिल्कुल ठीक, सारी जिन्दगी के लिए टाईफायड से बरी हो गया। सारा खान्दान बेहद खुश हुआ। वे लोग इतने एहसानमंद थे कि उनका जजबा दिल को छू लेने वाला था। लेकिन मैने उनसे साफ कह दिया कि यह सब तुम्हारी बदौलत हो सका है, रीजन; और मुझे खुशी है कि तुम्हे जो नाइट का खिताब मिला है, वह इसका ही नतीजा है।

रीजन : मै दिल से आपका मशकूर हूं। (भावावेग मे सोफे के पास अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है।)

बी. बी. : कतई नही, कतई नहीं। तुम्हारी अपनी काबलियत का यह नतीजा है। आओ, इस तरह जजबात मे नही बह जाते।

रीजन : नही, कोई बात नही है। अभी थोड़ा-सा चक्कर आ गया था। शायद, काम की थकान है।

वालपोल : खून में जहरबाद।

बी. बी. : काम की थकान ! ऐसी कोई चीज नही होती। मैं खुद दस आदमियों का काम करता हूं। क्या मुझे चक्कर आते है ? नहीं। नही। अगर तुम कमजोरी महसूस करते हो तो तुम्हे जरूर कोई बीमारी है। चाहे मामूली ही क्यों न हो, लेकिन है कोई बीमारी जरूर। आखिर बीमारी चीज क्या होती है ? जिस्म मे रोग पैदा करने वाले जरासीम का पैदा हो जाना और फिर उस जरासीम की तादाद का बढ़ते जाना। इसका इलाज

क्या है ? बहुत आसान बात है। इस जरासीम का पता करके उसे मार दो।

सर पैट्रिक : मान लो कि कोई जरासीम हो ही न, तब ?

बी. बी. : सर पैट्रिक, कोई न कोई जरासीम तो होना ही चाहिए, नही तो मरीज बीमार कैसे हो सकता है ?

सर पैट्रिक : क्या तुम मुझे ज़्यादा मेहनत करने का जरासीम दिखा सकते हो ?

बी. बी. : नही; लेकिन क्यों नही ? क्योंकि, मेरे अज़ीज, सर पैट्रिक, जरासीम हालाकि होता ज़रूर है, लेकिन वह नज़र नही आता। हमें खतरे से आगाह करने वाला कोई सिगनल भी कुदरत ने इस जरासीम को नही दिया। ये जरासीम साफ आर-पार दिखाई देने वाली चीज होते है, जैसे शीशा या पानी। वह दिखाई दे सके, इसके लिए उन्हें रंगना पड़ता है। लेकिन पैडी, मेरे अजीज, कुछ जरासीम ऐसे भी होते है जो, तुम चाहे जितनी कोशिश कर देखो, रंग पकड़ते ही नहीं। उनपर कोचीनियल का रंग नही चढ़ता। उनपर नीली मैथिलीन का रंग नही चढ़ता। उनपर ज़ामुनो जेन्शियन का रंग नही चढता। दर-असल उनपर कैसा भी रग नही चढ़ता। नतीजा यह है कि अगर्चे साइन्सदां होने के नाते हम यह तो जानते है कि जरासीम मौजूद है, मगर हम उनको देख नही पाते। लेकिन उनके वजूद से क्या तुम इन्कार कर सकते हो ? जरासीम के बगैर क्या तुम किसी बीमारी की कल्पना भी कर सकते हो ? मिसाल के लिए, क्या तुम मुझे जरासीम बगैर डिप्थीरिया का एक केस भी दिखा सकते हो ?

सर पैट्रिक : नहीं, लेकिन मै तुम्हारे गले मे भी इस जरासीम को दिखा सकता हूं, जबकि तुम्हे डिप्थीरिया की बीमारी नही है ।

बी. बी. : नही, बिल्कुल उसी जरासीम को तुम नही दिखा सकते, सर पैट्रिक । यह एकदम नया जरासीम होगा ; बदकिस्मती से दोनों बिल्कुल इतने एकसां होते है कि तुम उनका फर्क देख ही नही सकते । मेरे अजीज, सर पैट्रिक, तुम्हे यह बात समझ लेनी चाहिए कि इन दिलचस्प नन्हे जन्तुओं मे से हरएक बड़ा जबर्दस्त नकलची होता है । आदमी जिस तरह एक-दूसरे की नकल करते हैं, जरासीम भी एक-दूसरे की नकल करते है। लोयफर ने डिप्थीरिया के जिस जरासीम की खोज की थी, वही सिर्फ असली है, लेकिन एक नकली जरासीम भी होता है, जो देखने मे हू-ब-हू असली की तरह लगता है और जिसे तुम, जैसा कि तुमने अभी कहा, मेरे गले मे भी दिखा सकते हो ।

सर पैट्रिक : लेकिन असली और नकली का फर्क तुम कैसे करते हो ?

बी. बी. : वाह, यह तो साफ जाहिर है कि अगर जरासीम असली लोयफर है तो आपको डिप्थीरिया की बीमारी हो जाएगी; और अगर नकली है तो आपको कुछ नहीं होगा । बिल्कुल आसान बात है । साइन्स हमेशा आसान और गंभीर होती है । नीम-सचाई ही हमेशा खतरनाक होती है । कुछ नादान सनकी जरासीम के बारे मे सतही मालूमात इधर-उधर से जमा कर लेते हैं ; फिर वे अखबारों और रिसालों में ऊंटपटाग मज़मून लिखते है । और इस तरह साइन्स को बदनाम करते हैं । बहुत-से ईमानदार और भले लोगों को धोखे मे डालकर वे गुमराह

कर देते है। लेकिन साइन्स के पास उनकी सब दलीलों के मुंहतोड़ जवाब है।

इल्म की कमी बड़ी खतरनाक चीज़ है
छककर पियो, या इल्म के चश्मे का ज़ायका न लो।

सर पैट्रिक, मेरा मंशा आपकी पीढ़ी का मजाक उड़ाना नही है; आखिर आप जैसे पुराने खिलाड़ियों ने अपने पेशे के तजुर्बे और अपने दिमाग से बड़े-बड़े कमाल कर दिखाए हैं, लेकिन जब मैं आपके जमाने के आम डाक्टरों की बात सोचता हूं, जो अपनी नासमझी की वजह से रगे काटकर खून निकाल देते थे, प्यालानुमा औजार से खून खीचते थे या मरीज को दस्त कराते थे और अपने कपड़ों और औजारों से मरीज के इर्द-गिर्द जरासीम बिखेरते फिरते थे, और जब मै इन सब बातों से अभी उस दिन नन्हे प्रिस के इलाज के अपने साइन्टिफिक और सादा तरीके का मुकाबला करता हूं, तो मै अपनी पीढ़ी के लोगों पर फख्र करने के लिए मजबूर हो जाता हूं, उन लोगों पर जिन्होने जरासीम की थियरी के मुताबिक तालीम पाई है, जो सन् अठारह सौ सत्तर के दिनों नजरिया-ए-इर्तका के लिए लड़ी गई साइन्टिफिक जंग के सूरमा है। हमारे अन्दर खामिया हो सकती है, लेकिन हम लोग साइन्सदां है। और, रीजन, यही वजह है कि मैने तुम्हारे इलाज को अपना लिया है और मै उसे आगे बढा रहा हूं। (सोफे के पास कुर्सी पर बैठ जाता है।)

ऐम्मी : (दरवाज़े से घोषणा करते हुए) डाक्टर ब्लेन्किन्सोप।

[डा० ब्लेन्किन्सोप स्पष्टत: सव लोगो से भिन्न हैं। जाहिर है कि वे सम्पन्न व्यक्ति नही हैं। वे ढीले-ढाले, थुलथुल शरीर के हैं और उनके

मैं देखूंगा। लेकिन इससे वह कुछ नही सीखता। आखिर क्यों ? क्योंकि वह कुत्ता साइन्सदां नही है।

वालपोल : क्लिनिकल तजुर्बे के बारे मे आप जैसे फिजीशियनों और जेनरल प्रेक्टीश्नरों की बाते सुनकर मुझे बड़ा मजा आ रहा है। मरीज के सिरहाने आपको मरीज़ की ऊपरी हालत के अलावा दिखाई ही क्या देता है ? लेकिन उसके बाहरी जिस्म मे तो कुछ गड़बड़ नही होती, शायद चमड़े की बीमारियों को छोड़कर। इसलिए जरूरत इस बात की है कि आपको मरीज की अन्दरूनी हालत से रोजमर्रा की जानकारी हो ; और यह जानकारी आप ऑपरेशन की मेज़ पर ही हासिल कर सकते है। मै जो कह रहा हूं, उसका मतलव अच्छी तरह समझता हूं : बीस साल से मै सर्जन और जेनरल कंसल्टेन्ट का काम कर रहा हूं, लेकिन इन बीस सालों में मैने एक भी जेनरल प्रेक्टीश्नर नही देखा जिसने कभी सही डायग्नोसिस की हो। आप उनके पास एक मामूली-सा केस ले जाइए और वे उसे केन्सर, आर्थराइटिस, अपेन्डीसाइटिस और दूसरी सभी किस्म की 'आइटिसे' बता देंगे, जबकि कोई भी तजुर्बेकार सर्जन एक नजर मे ही देख लेगा कि वह साफ-साफ खून मे जहरबाद का केस है।

ब्लेन्किन्सोप : आह, आप जैसे शरीफ लोगो के लिए ऐसी बातें करना बहुत आसान है। लेकिन आपके पास अगर मेरी प्रैक्टिस होती, तब आप क्या कहते ? मजदूरों के क्लबों को छोड़कर मेरे ग्राहक सारे के सारे क्लर्क और छोटे दुकानदार है। उन्हे बीमार पड़ने की जुर्रत ही नही होती ; वे इसका खर्च नही बर्दाश्त कर सकते। और जब उनका जिस्म थकान और बीमारी से टूट जाता

है, तब मै उनके लिए कर भी क्या सकता हूं ? आप लोग अपने मरीजों को सेन्ट मोरित्ज या मिश्र में भेज सकते है, या उन्हें ताकीद कर सकते है कि घुड़सवारी करें, या मोटर पर सैर को जाएं, या कि शैम्पेन मे बने मुरब्बों का इस्तेमाल करे या कि पूरी तरह आबो-हवा और रहन-सहन का ढंग बदल दें, या कि छह महीने तक मुकम्मिल आराम करे। इन नायाब चीज़ों की जगह मै अगर अपने मरीजों को चांद का टुकड़ा लेकर इस्तेमाल करने की ताकीद कर दू तो भी कोई फर्क नही पडेगा। और फिर सबसे बुरी बात तो यह है कि मै इतना गरीब हूं कि मुझे जो गिज़ा खाने को मिलती है उसपर अपनी सेहत को ठीक रखना मेरे लिए मुमकिन नही है। मेरा हाज़मा तबाह हो चुका है; मेरी सूरत से ही यह जाहिर होता है। मुझे देखकर फिर मरीजों को एतबार कैसे हो ? (सोफे पर दुःखी भाव से बैठ जाता है।)

रीजन : (उद्विग्नतापूर्वक) ऐसा मत सोचो, ब्लेन्किन्सोप, यह बहुत दर्दनाक बात है। दुनिया मे सबसे दर्दनाक चीज़ एक डाक्टर का खुद बीमार होना है।

वालपोल : हा सच, ज्यौर्ज की कसम। यह तो ठीक उसी तरह हुआ है जैसे एक गंजा आदमी बाल उगाने वाला तेल बेचने की कोशिश करे। खुदा का शुक्र है कि मै एक सर्जन हूं !

बी. बी. : (प्रसन्नता बिखेरते हुए) मै कभी बीमार नही पड़ता। सारी जिन्दगी मे एक दिन के लिए भी बीमार नही हुआ। यही वजह है कि मै अपने मरीजों को पूरी हमदर्दी दे सकता हूं।

कपड़े भी ढीले-ढाले है, यानी सस्ते भोजन पर पले है और सस्ते कपड़े ही पहनने के आदी हैं। उनके सदाचरण ने उनकी आंखों के बीच एक रेखा खीच दी है और आर्थिक चिन्ताओ ने उनके सारे चेहरे पर झुर्रिया डाल दी है, कुछ अधिक ही गहरी, क्योकि उन्होंने कभी अच्छे दिन भी देखे हैं। वे अस्पताल के अपने पुराने दोस्तो की तरह इन सुसम्पन्न सहयोगियों का अभिनन्दन करते है, लेकिन ऐसा करने के लिए भी उन्हे अपनी गरीबी और निम्न-मध्यवर्ग का आदमी होने के ऐहसास से सघर्ष करना पड़ता है।]

रीजन : कहो, कैसे हो ब्लेन्किन्सोप ?

ब्लेन्किन्सोप : मै अपनी मुबारकबाद देने आया हूं। आह प्यारे! सारी की सारी बुलन्द हस्तियां यहां मौजूद हैं।

बी. बी. : (बडप्पन के भाव से, किन्तु मधुर ढंग से) कैसे हो, ब्लेन्किन्सोप कैसे हो ?

ब्लेन्किन्सोप : और सर पैट्रिक भी यहां तशरीफ फ़रमां हैं!

(सर पैट्रिक गुर्राने जैसी आवाज़ करते हैं।)

रीजन : तुम वालपोल से तो जरूर पहले मिल चुके हो ?

वालपोल : आप अच्छी तरह हैं न ?

ब्लेन्किन्सोप : नही, यह खुशनसीबी आज ही हासिल हुई है। अपनी मामूली-सी प्रैक्टिस में आप जैसी अज़ीम हस्तियों से मिलने के मौके रोज हाथ नही लगते। सेन्ट ऐनी के कुछ अपने जमाने के लोगों को छोड़कर मै और किसीको नही जानता। (रीजन से) तो अब तुम सर कोलेन्जो हो गए! यह कैसा लगता है तुम्हे ?

रीजन : पहले तो वाहियात-सा लगा। खैर, तुम इसकी नोटिस मत लो।

ब्लेन्किन्सोप : मैं बेहद शर्मिन्दा हूं कि मुझे तो जरा भी नहीं मालूम

कि तुम्हारी यह महान ईजाद है क्या, लेकिन फिर भी पुराने दिनों की दोस्ती की खातिर मै तुम्हें मुबारकबाद दे रहा हूं।

बी. बी. : (हैरत से)—लेकिन, मेरे अजीज ब्लेन्किन्सोप, तुम तो साइन्स में पूरी दिलचस्पी लेते थे।

ब्लेन्किन्सोप : आह, मैं तो और भी बहुत-से कामों में दिलचस्पी लेता था। मेरे पास तब दो-तीन बढ़िया सूट होते थे और इतवार को नदी की सैर के लिए फलालेन की पतलूनें होती थीं। अब देखो मेरी ओर : मेरे पास सबसे अच्छे बस यही कपड़े है और इनको बडे दिन तक चलाना है। मै कर भी क्या सकता हूं? तीस साल पहले मैने जब डाक्टरी पास की थी, तब से आज तक कोई किताब खोलकर नही देखी। मै पहले मेडिकल रिसाले पढा करता था, लेकिन आप लोग खुद ही जानते हैं कि इन रिसालों को कुछ दिनों बाद कोई नही पढ़ता : इसके अलावा, मैं उनका चंदा भरने की हालत में नही हूं, और फिर इन रिसालों मे इश्तहारों के अलावा रहता भी क्या है? मैं अपनी साइन्स को बिल्कुल भूल चुका हूं; आखिर झूठा दावा करने से क्या फायदा कि कहूं, मै नही भूला हूं? लेकिन मुझे इलाज का बहुत बड़ा क्लिनिकल तजुर्बा हासिल है; और इस पेशे मे तजुर्बा ही सब से बड़ी चीज है, है न?

बी. बी. : बेशक, लेकिन, ख्याल रखो कि यह तभी सच है जब मरीज के सिरहाने बैठकर तुमने जो देखा है उसकी तरतीब देने के लिए तुम्हें ठोस साइन्टिफिक थियरी का भी पूरा इल्म हो। महज तजुर्बा अपने-आपमें कोई चीज नही है। मरीज के सिरहाने अगर मै अपने कुत्ते को ले जाऊं तो वह भी वही कुछ देखेगा जो

मैं देखूंगा। लेकिन इससे वह कुछ नहीं सीखता। आखिर क्यों? क्योंकि वह कुत्ता साइन्सदां नही है।

वालपोल : क्लिनिकल तजुर्बे के बारे मे आप जैसे फिजीशियनों और जेनरल प्रेक्टीशनरों की बाते सुनकर मुझे बड़ा मजा आ रहा है। मरीज के सिरहाने आपको मरीज़ की ऊपरी हालत के अलावा दिखाई ही क्या देता है? लेकिन उसके बाहरी जिस्म मे तो कुछ गडबड़ नही होती, शायद चमड़े की बीमारियों को छोड़कर। इसलिए जरूरत इस बात की है कि आपको मरीज़ की अन्दरूनी हालत से रोजमर्रा की जानकारी हो; और यह जानकारी आप ऑपरेशन की मेज़ पर ही हासिल कर सकते है। मै जो कह रहा हूं, उसका मतलब अच्छी तरह समझता हूं: बीस साल से मै सर्जन और जेनरल कंसल्टेन्ट का काम कर रहा हूं, लेकिन इन बीस सालों मे मैंने एक भी जेनरल प्रेक्टीशनर नहीं देखा जिसने कभी सही डायग्नोसिस की हो। आप उनके पास एक मामूली-सा केस ले जाइए और वे उसे केन्सर, आर्थराइटिस, अपेन्डीसाइटिस और दूसरी सभी किस्म की 'आइटिसें' बता देंगे, जबकि कोई भी तजुर्बेकार सर्जन एक नजर मे ही देख लेगा कि वह साफ-साफ खून मे जहरबाद का केस है।

ब्लेन्किन्सोप : आह, आप जैसे शरीफ लोगों के लिए ऐसी बाते करना बहुत आसान है। लेकिन आपके पास अगर मेरी प्रैक्टिस होती, तब आप क्या कहते? मजदूरों के क्लबों को छोड़कर मेरे ग्राहक सारे के सारे क्लर्क और छोटे दुकानदार है। उन्हें बीमार पड़ने की जुर्रत ही नही होती; वे इसका खर्च नही बर्दाश्त कर सकते। और जब उनका जिस्म थकान और बीमारी से टूट जाता

है, तब मै उनके लिए कर भी क्या सकता हूं ? आप लोग अपने मरीजों को सेन्ट मोरित्ज या मिश्र मे भेज सकते हैं, या उन्हे ताकीद कर सकते है कि घुड़सवारी करे, या मोटर पर सैर को जाएं, या कि शैम्पेन मे बने मुरब्बों का इस्तेमाल करे या कि पूरी तरह आबो-हवा और रहन-सहन का ढंग बदल दें, या कि छह महीने तक मुकम्मिल आराम करे। इन नायाब चीजों की जगह मै अगर अपने मरीजों को चांद का टुकड़ा लेकर इस्तेमाल करने की ताकीद कर दू तो भी कोई फर्क नही पड़ेगा। और फिर सबसे बुरी बात तो यह है कि मै इतना गरीब हूं कि मुझे जो गिजा खाने को मिलती है उसपर अपनी सेहत को ठीक रखना मेरे लिए मुमकिन नही है। मेरा हाज्मा तबाह हो चुका है ; मेरी सूरत से ही यह जाहिर होता है। मुझे देखकर फिर मरीजों को एतबार कैसे हो ? (सोफे पर दुःखी भाव से बैठ जाता है।)

रीजन : (उद्विग्नतापूर्वक) ऐसा मत सोचो, ब्लेन्किन्सोप, यह बहुत दर्दनाक बात है। दुनिया मे सबसे दर्दनाक चीज एक डाक्टर का खुद बीमार होना है ।

वालपोल : हां सच, ज्यौर्ज की कसम। यह तो ठीक उसी तरह हुआ है जैसे एक गंजा आदमी बाल उगाने वाला तेल बेचने की कोशिश करे। खुदा का शुक्र है कि मै एक सर्जन हूं !

बी. ब्री. : (प्रसन्नता बिखेरते हुए) मै कभी बीमार नही पड़ता। सारी जिन्दगी में एक दिन के लिए भी बीमार नही हुआ। यही वजह है कि मै अपने मरीजों को पूरी हमदर्दी दे सकता हूं ।

वालपोल : (उत्सुकता से) क्या कहा ? आप कभी बीमार पड़े ही नही !

बी. बी. : कभी नही ।

वालपोल : बड़ी दिलचस्प बात है । मुझे यकीन है कि आपके अन्दर नूसीफार्म सैक है ही नहीं । अगर कभी आपको अजब-सा लगे, तो मै आपके जिस्म के अन्दर देखना चाहूंगा ।

बी. बी. : शुक्रिया, मेरे अजीज दोस्त, लेकिन इस वक्त मुझे कतई फुरसत नही है ।

रीजन : ब्लेन्किन्सोप, तुम्हारे आने से पहले मै इन लोगों से कह रहा था कि बेतहाशा काम करके मैने अपनी सेहत बिगाड़ ली है ।

ब्लेन्किन्सोप : बहरहाल, तुम जैसे बुलन्द पाये के इन्सान को सेहत का नुस्खा बताना तो ऐन गुस्ताखी होगी, लेकिन फिर भी मेरा तजुर्बा बहुत ज्यादा है और अगर मुझे यह मशवरा देने की इजाजत दो कि तुम रोज दुपहर के खाने से आध घंटे पहले एक पौड पके हुए हरे बेर खाया करो, तो मुझे पूरा यकीन है कि इससे तुम्हे फायदा होगा । हरे बेर खूब सस्ते है ।

रीजन : इस बारे मे आपकी क्या राय है, बी. बी. ?

बी. बी. : (प्रोत्साहन देने वाले स्वर मे) वाकई अक्लमंदी की बात है ब्लेन्किन्सोप, वाकई अक्लमंदी की ! मुझे यह जानकर निहायत खुशी हुई कि तुम दवाएं खाने-खिलाने के हक में नही हो !

सर पैट्रिक : (गुर्राते हैं) ।

बी. बी. : (चिढकर) आ हा ! हा हा ! अंगीठी के पास की आराम-कुर्सी से क्या मुझे अभी अपनी दवाइयों की हिमायत मे पुराने स्कूल की भों-भों सुनाई दी है ? आह, पैडी, मेरी बात पर

यकीन करो कि अगर इंगलिस्तान मे कैमिस्ट की सारी दुकानें बद कर दी जाएं तो दुनिया के लोगों की सेहत सुधार जाएगी। अखबारों की ओर देखो ! पेटेन्ट दवाइयों के बेहूदे इश्तहारों से भरे रहते हैं। नीम-हकीमी और ज़हर के ब्यौपार का भयानक अंजाम ! अच्छा, लेकिन इसमें कसूर किसका है ? हमारा। मै कहता हूं, हमारा अपना। हम लोग ही मिसाल कायम करते हैं। हम लोग ही वहम पैदा करते है। हमने ही लोगों को डाक्टर की बोतलों पर एतबार करना सिखाया था, और अब वे किसी डाक्टर की सलाह लिए बगैर ही कैमिस्ट की दुकानों से उन्हें खरीद ले जाते है।

वालपोल : बिल्कुल ठीक। मैने पिछले पन्द्रह साल से एक बार भी किसीको दवाई का नुस्खा लिखकर नहीं दिया।

बी. बी. : दवाएं बीमारी के सिम्पट्म्स को सिर्फ दबा सकती हैं, बीमारी को अच्छा नही कर सकतीं। सब बीमारियों की असली दवा तो कुदरत की दवा है। सर पैट्रिक, मेरी बात पर यकीन करें कि कुदरत और साइंस एक ही चीज है, हालांकि आपको इससे उल्टा पढ़ाया गया था। कुदरत ने खुद ही आपकी जबान मे व्हाइट कापुसल्स और हमारी जबान मे फैगोसाइट्स बना दिए है, जो बीमारी के कीड़ों को खाने और तबाह करने के कुदरती जराया । सब बीमारियों का बुनियादी तौर पर सिर्फ एक ही सही और साइन्टिफिक इलाज है, और वह है फैगो-साइट्स को उकसा देना। बस फैगोसाइट्स को उकसा भर दो। दवाएं तो एक धोखा है। बीमारी के जरासीम का पता करो, उससे जहर मारने वाला एक माकूल एन्टी-टॉक्सिन टीका तैयार

करो; फिर खाने से पहले दिन मे तीन बार उसका इन्जेक्शन लगाओ। क्या नतीजा होता है इसका ? फैगोसाइट्स बेदार हो जाते है; वे बीमारी के जरासीम को निगल लेते है; और मरीज़ फिर चंगा हो जाता है—हां, अगर हालत बहुत नाज़ुक हो चुकी हो तो फिर बात दूसरी है। मेरे ख्याल से, रीजन की ईजाद का सिर्फ यही मतलब है।

सर पैट्रिक : (स्वप्निल स्वर मे) यहां बैठकर मुझे लग रहा है, जैसे मै फिर से अपने बाप की तकरीर सुन रहा हूं।

बी. बी. : (अविश्वासपूर्ण आश्चर्य से उठकर) तुम्हारे बाप ! लेकिन प्रैडी, खुदा मेरी रूह को सलामत रखे, तुम्हारे बाप तुमसे तो उम्र मे बड़े रहे होगे न ?

सर पैट्रिक : लफ्ज-ब-लफ्ज वे भी यही कहते थे, जो तुम कह रहे हो ! अब दवाओ की जरूरत नहीं। बस सिर्फ टीकों की ही जरूरत है।

बी. बी. : (विचारमग्न होकर) टीका ! क्या तुम्हारा मतलब चेचक के टीके से है ?

सर पैट्रिक : जी, बन्दानवाज ! हमारे खान्दान के बीच बैठकर, मेरे बाप ऐलान किया करते थे कि चेचक का टीका सिर्फ चेचक के लिए ही नही, बल्कि सब तरह के बुखारों के लिए फायदेमंद है।

बी. बी. : (एकाएक इस नये विचार के प्रति तीव्र उत्साह और दिलचस्पी से प्रेरित होकर उठते हुए) वाह ! रीजन, सुना तुमने ? सर पैट्रिक, तुमने अभी जो कहा है उससे मुझे इतना ताज्जुब हो रहा है कि कि मै बयान नही कर सकता। जनाब, आपके बाप ने मेरी ईजाद का पहले से ही कयास कर लिया था। सुनो, वालपोल,

ब्लेन्किन्सोप, जरा गौर से सुनो। तुम सबको यह बात बेहद दिलचस्प लगेगी। मै तो इत्तफाकन इस राह पर चल पड़ा। एक बार अस्पताल मे मेरे पास एकसाथ ही एक टाईफायड का और एक टिटेनस का केस आ गया। एक गिरजे का चासलर था, दूसरा शहर का पादरी। सोचो तो कि ये बेचारे कितने परेशान होगे ! गिरजे का चांसलर अगर टाईफायड का मरीज़ हो तो क्या अपना रौबदाब कायम रख सकता है ? क्या एक पादरी जकडे हुए जबडे की हालत मे नसीहत और तकरीर कर सकता है ? नही, 'नहीं'। खैर, मैने रीजन से तो टाइफायड का टीका मंगवाया और एक ट्यूब मुल्डूले के एण्टी-टिटेनस सीरम का मंगवाया। लेकिन पादरी को जब दौरा पड़ा तो बदहवासी की हालत मे उसने मेरी मेज की सब चीजे एक झटके मे ही नीचे गिरा दी। उन्हे उठाकर फिर से रखने की जल्दी मे मैने गल्ती से रीजन का ट्यूब वहां रख दिया जहां मुल्डूले का सीरम होना चाहिए था। नतीजा यह हुआ कि मैने टाईफायड के मरीज़ को तो टिटेनस का टीका लगा दिया और टिटेनस के मरीज को टाइफायड का। (सारे डाक्टर बडे चिन्तित भाव से उनकी ओर देखते हैं; लेकिन बी. बी. इससे परेशान न होकर विजयी-भाव से मुस्कराते है) बहरकैफ, दोनों ही अच्छे हो गए। 'जी हा, दोनों ही अच्छे हो गए !' सिवाय इसके कि पादरी नाइड़यों पर असर पड़ने की वजह से उठ-उठकर नाचने लगता है, लेकिन वह हट्टा-कट्टा पहले जैसा ही है, और गिरजे के चांसलर की सेहत तो पहले से कई गुना बेहतर है।

ब्लेन्किन्सोप : मैने भी ऐसी बाते होते हुए देखी है। लेकिन उनकी

का काम है। दिमाग—लेकिन दिमाग ही हर हालत पर काबू पा सकता है। नूसीफार्म सैक निरी बकवास है, जिस्म के अन्दर ऐसी कोई चीज नही होती। यह तो सिर्फ झिल्ली की इत्तफाकिया ऐंठन का नाम है, जो ढाई फीसदी आदमियों से ज़्यादा मे नही पैदा होती। वैसे मै वालपोल की खातिर खुश हूं कि इससे ऑपरेशन करवा लेना आजकल का फैशन बन गया है, क्योंकि वालपोल बड़ा प्यारा आदमी है। और फिर, जैसा कि मै अक्सर लोगों से कहा करता हूं, इस ऑपरेशन से उनको कोई नुकसान भी नहीं होता : दरअसल, मैंने तो देखा है कि लन्दन के सख्त मौसम मे रहने वालों की नाड़ियों को इस तरह झकझोरकर पन्द्रह दिन तक बिस्तर मे लिटा रखने से उनको बेहद फायदा होता है। लेकिन फिर भी यह एक हौलनाक धोखा है। (उठते हुए) खैर, अब मुझे चलना चाहिए। गुडबाई पैडी! (सर पैट्रिक गुर्राने जैसी आवाज़ करते हैं) गुडबाई, गुडबाई। गुडबाई, मेरे अजीज ब्लेन्किन्सोप, गुडबाई! गुडबाई, रीजन! अपनी सेहत के बारे मे परेशान मत हो। तुम खुद जानते हो कि तुम्हें क्या करना चाहिए। अगर तुम्हारा जिगर ठीक काम न कर रहा हो तो थोड़ा-सा पारा कभी नुक्सान नहीं करेगा। अगर बेचैनी महसूस करते हो तो ब्रोमाइड का इस्तेमाल कर देखो। अगर उससे भी कोई फायदा न हो तो कोई स्टीमुलेन्ट लो, समझे; थोड़ा-सा फासफोरस और स्ट्रिचनीन। अगर नीद नही आती हो तो ट्रायनोल, ट्रायनोल, ट्राय

सर पैट्रिक : (रूखे स्वर मे) लेकिन दवाई हर्गिज नहीं, कौली, याद रखना।

बी. बी. : कतई नही । तुम बिल्कुल ठीक कहते हो, सर पैट्रिक ! फौरी तकलीफ रफा करने के लिए जरूर लो, लेकिन इलाज के रूप में कतई नही, नही । और चाहे जो करो, केमिस्ट की दुकान के पास कभी मत फटकना, रीजन ।

रीजन : (दरवाज़े तक पहुचाने के लिए साथ जाते हुए) ऐसा ही करूंगा। और नाइट के खिताब के लिए शुक्रिया । गुडबाई ।

बी. बी. : (दरवाज़े के पास रुककर, आंख मे टिमटिमाती हुई चमक से मुस्कराकर) और ज़रा बताना, तुम्हारी यह मरीजा कौन है ?

रीजन : कौन-सी ?

बी. बी. : जो नीचे बैठी है । बड़ी हसीन औरत है । खाविन्द तपेदिक का मरीज है ।

रीजन : क्या वह अभी तक यहीं है ?

ऐम्मी : आइए न, सर रैल्फ । आपकी बीवी गाड़ी में बैठी इन्तजार कर रही हैं ।

बी. बी. : ओह ! गुडबाई । (वह हठात् चले जाते हैं)

रीजन : ऐम्मी, क्या वह अभी तक नीचे है ? अगर हो तो उससे आखिरी बार कह दो कि मै न उससे मिल सकता हूं, न मिलूंगा ही । सुना तुमने ?

ऐम्मी : ओह, वह जल्दी मे नही है । उसे इसकी भी परवाह नही कि कितनी देर इन्तजार करनी पड़ेगी । (बाहर जाती है)

ब्लेन्किन्सोप : मुझे भी अब जाना चाहिए । काम छोड़कर मै जितना भी वक्त बाहर गुज़ारता हूं, अठारह पेन्स फी घंटे के हिसाब से उतना ही मेरा नुकसान हो जाता है । गुडबाई, सर पैट्रिक ।

सर पैट्रिक : गुडबाई, गुडबाई ।

वजह बताना मुश्किल है।

बी. बी. : (कठोरतापूर्वक) ब्लेन्किन्सोप, ऐसी कोई चीज नहीं, साइन्स जिसकी वजह नही बता सकती। मैने क्या किया ? क्या मै हाथ पर हाथ रखकर बैठ गया और मैने सोच लिया कि इसकी वजह तो मालूम ही नही की जा सकती ? जी नही। मैने अपने दिमाग का इस्तेमाल किया। मैने साइन्टिफिक उसूलों के मुताबिक इस केस का मतलब खोज निकाला। मैने अपने-आपसे सवाल किया कि आखिर बात क्या है कि टिटेनस के केस मे टाईफायड का टीका देने से पादरी मरा नही और टाईफायड के केस मे टिटेनस का टीका देने से गिरजे का चांसलर भी ज़िन्दा बच रहा ? रीजन यह मसला तुम्हारे लिए काबिले-गौर है। सोचिए सर पैट्रिक ! ब्लेन्किन्सोप, तुम भी इसपर गौर करो। और वालपोल, बिना तअस्सुब के तुम इस सवाल को देखने की कोशिश करो। एक एन्टी-टॉक्सिन का असली काम क्या होता है ? महज फैगोसाइट्स को उकसाना। बहुत खूब। अब अगर तुम फैगोसाइट्स को उकसा सकते हो, तो इस बात से क्या फ़र्क पडता है कि इस मकसद के लिए तुमने खास किस्म का सीरम इस्तेमाल किया है ? हा हा ? है न ? देखा तुमने ? इसका मतलब समझे ? तब से मै हर किस्म के एन्टी-टॉक्सिन टीकों को बिल्कुल मनमाने ढंग से इस्तेमाल करता आ रहा हू, और वे हर केस मे फायदेमंद साबित हुए हैं। रीजन, मैने नन्हे प्रिंस को तुम्हारा टीका लगाया, क्योंकि मै तुम्हें ऊपर उठाना चाहता था ; लेकिन दो साल पहले मैने स्कार्लेट बुखार के एक मरीज को पाश्चर इन्स्टीट्यूट का हाइड्रोफोबिया सीरम लगाकर

तजुर्बा किया था, और वह बेहद कारगर साबित हुआ। उसने फैगोसाइट्स को उकसा दिया और फैगोसाइट्स ने बाकी काम आप ही कर डाला। यही वजह है कि सर पैट्रिक के बाप इस नतीजे पर पहुंचे थे कि टीके से हर किस्म के बुखार दूर किए जा सकते है। टीका फैगोसाइट्स को उकसा देता है। (इस प्रदर्शन से थककर वे अपनी कुर्सी मे धम से बैठ जाते हैं और सब लोगों की ओर बडी शान से देखकर मुस्कराते हैं।)

ऐम्मी : (अन्दर झाकते हुए) मिस्टर वालपोल, आपकी मोटर आपको लेने के लिए आ रही है और इससे सर पैट्रिक की गाड़ी के घोड़े बिदक उठे है। इसलिए जल्दी कीजिए।

वालपोल : (उठते हुए) गुडबाई, रीजन।

रीजन : गुडबाई, और बहुत-बहुत शुक्रिया।

बी. बी. : तुम्हें मेरी बात का नुक्ता दिखाई दे गया न, वालपोल ?

ऐम्मी : सर रैल्फ, इनको और मत रोकिए, नही तो गाड़ी नीचे पहुंच जाएगी।

वालपोल : मै आ रहा हूं। (बी. बी. से) आपकी बात के नुक्ते में कुछ भी नही है। फैगोसाइट्स महज बकवास है। सारे लोग खून मे जहरबाद के मरीज होते हैं और नश्तर ही उनका असली इलाज है। बाई-बाई, सर पैडी ! तुमसे मिलकर बड़ी खुशी हुई, मिस्टर ब्लेन्किन्सोप। अच्छा ऐम्मी, चलो। (वह ऐम्मी के पीछे-पीछे जाता है।)

बी. बी. : (खेदपूर्वक) वालपोल में अक्ल की कमी है। वह महज़ सर्जन है। आपरेशन करने मे अपना सानी नही रखता, लेकिन बहरहाल, चीर-फाड़ ऐसी कौन-सी बड़ी चीज है ? सिर्फ हाथ

का काम है। दिमाग—लेकिन दिमाग ही हर हालत पर काबू पा सकता है। नूसीफार्म सैक निरी बकवास है, जिस्म के अन्दर ऐसी कोई चीज नही होती। यह तो सिर्फ झिल्ली की इत्तफाकिया ऐठन का नाम है, जो ढाई फीसदी आदमियों से ज़्यादा मे नही पैदा होती। वैसे मै वालपोल की खातिर खुश हूं कि इससे ऑपरेशन करवा लेना आजकल का फैशन बन गया है, क्योंकि वालपोल बड़ा प्यारा आदमी है। और फिर, जैसा कि मै अक्सर लोगों से कहा करता हूं, इस ऑपरेशन से उनको कोई नुकसान भी नही होता : दरअसल, मैंने तो देखा है कि लन्दन के सख्त मौसम मे रहने वालों की नाड़ियों को इस तरह झकझोरकर पन्द्रह दिन तक बिस्तर में लिटा रखने से उनको बेहद फायदा होता है। लेकिन फिर भी यह एक हौलनाक धोखा है। (उठते हुए) खैर, अब मुझे चलना चाहिए। गुडबाई पैडी! (सर पैट्रिक गुर्राने जैसी आवाज़ करते हैं) गुडबाई, गुडबाई। गुडबाई, मेरे अजीज ब्लेन्किन्सोप, गुडबाई! गुडबाई, रीजन! अपनी सेहत के बारे मे परेशान मत हो। तुम खुद जानते हो कि तुम्हे क्या करना चाहिए। अगर तुम्हारा जिगर ठीक काम न कर रहा हो तो थोड़ा-सा पारा कभी नुक्सान नहीं करेगा। अगर बेचैनी महसूस करते हो तो ब्रोमाइड का इस्तेमाल कर देखो। अगर उससे भी कोई फायदा न हो तो कोई स्टीमुलेन्ट लो, समझे; थोड़ा-सा फासफोरस और स्ट्रिचनीन। अगर नीद नही आती हो तो ट्रायनोल, ट्रायनोल, ट्राय

सर पैट्रिक : (रूखे स्वर में) लेकिन दवाई हर्गिज़ नहीं, कौली, याद रखना।

बी. बी. : कतई नही। तुम बिल्कुल ठीक कहते हो, सर पैट्रिक! फौरी तकलीफ रफा करने के लिए ज़रूर लो, लेकिन इलाज के रूप मे कतई नही, नही। और चाहे जो करो, केमिस्ट की दुकान के पास कभी मत फटकना, रीजन।

रीजन : (दरवाज़े तक पहुचाने के लिए साथ जाते हुए) ऐसा ही करूंगा। और नाइट के खिताब के लिए शुक्रिया। गुडबाई।

बी. बी. : (दरवाज़े के पास रुककर, आंख मे टिमटिमाती हुई चमक से मुस्कराकर) और ज़रा बताना, तुम्हारी यह मरीजा कौन है ?

रीजन : कौन-सी ?

बी. बी. : जो नीचे बैठी है। बड़ी हसीन औरत है। खाविन्द तपेदिक का मरीज है।

रीजन : क्या वह अभी तक यहीं है ?

ऐम्मी : आइए न, सर रैल्फ। आपकी बीवी गाड़ी में बैठी इन्तज़ार कर रही है।

बी. बी. : ओह ! गुडबाई। (वह हठात् चले जाते हैं)

रीजन : ऐम्मी, क्या वह अभी तक नीचे है ? अगर हो तो उससे आखिरी बार कह दो कि मै न उससे मिल सकता हूं, न मिलूंगा ही। सुना तुमने ?

ऐम्मी : ओह, वह जल्दी मे नही है। उसे इसकी भी परवाह नही कि कितनी देर इन्तजार करनी पड़ेगी। (बाहर जाती है)

ब्लेन्किन्सोप : मुझे भी अब जाना चाहिए। काम छोड़कर मै जितना भी वक्त बाहर गुजारता हूं, अठारह पेन्स फी घंटे के हिसाब से उतना ही मेरा नुकसान हो जाता है। गुडबाई, सर पैट्रिक।

सर पैट्रिक : गुडबाई, गुडबाई।

रीजन : इस हफ्ते किसी दिन आकर मेरे साथ लंच खाओ।

ब्लेन्किन्सोप : यह मेरी हैसियत से बाहर की बात है, मेरे अजीज़। इसके अलावा तुम्हारा लंच खाकर मै एक हफ्ते तक अपने खाने की ओर आंख उठाकर नही देख सकूगा। फिर भी दावत के लिए शुक्रिया।

रीजन : (ब्लेन्किन्सोप की मुफलिसी से दुखी होकर) क्या मै तुम्हारी कोई मदद कर सकता हूं ?

ब्लेन्किन्सोप : अच्छा तो, क्या तुम्हारे पास कोई पुराना फ्राक-कोट फालतू पड़ा है ? बात यू है कि जो तुम्हें पुराना लगेगा, वह मेरे लिए नया होगा। इसलिए कभी अगर अपने फालतू कपड़े निकालना चाहो तो मुझे याद रखना। (जल्दी से चला जाता है।)

रीजन : (उसके पीछे रखते हुए) बेचारा ! (सर पैट्रिक की ओर मुड़कर) तो जनाब, इस वजह से उन्होंने मुझे नाइट का खिताब दिया। और यह है आपका डाक्टरी का पेशा !

सर पैट्रिक : फिर भी बहुत अच्छा पेशा है, मेरे बरखुरदार ! मरीज़ों की जहालत और वहमपरस्ती के बारे मे जब तुम्हें भी उतनी ही जानकारी हो जाएगी, जितनी मुझे है, तो तुम्हे इस बात पर ताज्जुब होगा कि हमारी लियाकत जितनी दिखाई देती है, दरअसल उससे आधी भी नही है।

रीजन : हमारा पेशा पेशा नही एक भयानक साजिश है।

सर पैट्रिक : सभी पेशे आम लोगों के खिलाफ की गई साजिशे है। हम सभी तुम्हारी तरह के जीनियस नहीं हो सकते। बीमार तो हर बेवकूफ पड़ सकता है, लेकिन हर बेवकूफ अच्छा डाक्टर नही बन सकता। अच्छे डाक्टरों की तादाद तो उंगलियों पर

गिनने लायक भी नहीं है। और फिर भी मज़ा यह है कि ब्लूमफील्ड बोनिगटन शायद तुमसे कम ही लोगों की जान लेता है।

रीजन : ओह, ऐन मुमकिन है। लेकिन उन्हें कम से कम टीके और एण्टी-टॉक्सिन का फर्क तो जानना चाहिए। फैगोसाइट्स को उकसा दो! मगर टीका तो फैगोसाइट्स पर कोई असर नहीं करता। उनका दावा एकदम गलत है, बेबुनियाद और खतरनाक है। उनके हाथ मे सीरम का टच्यूब पकड़ा देना कत्ल करने के बराबर है, साफ कत्ल करने के बराबर।

ऐम्मी : (लौटती हुई) जनाब, सर पैट्रिक इस तूफान में आप कितनी देर तक अपने घोड़ों को खड़ा रहने देना चाहते हैं ?

सर पैट्रिक : इससे तुम्हें मतलब ? गुस्ताख बुढिया !

ऐम्मी : बस, बस, जाने भी दे। मेरे ऊपर मत बरसिए। और फिर कौली के काम का वक्त भी तो हो गया है।

रीजन : तमीज से पेश आओ, ऐम्मी। जाओ यहां से।

ऐम्मी : ओह, मैने तुम्हें तमीज से रहना सिखाने से पहले ही तमीज से पेश आना सीख लिया था। डाक्टरों की मै नस-नस से वाकिफ हूं : बैठे अपने आपके बारे मे बातें करते रहते है, जब कि उन्हे अपने गरीब मरीजों के साथ होना चाहिए। और मै घोड़ों के बारे मे भी जानती हूं, सर पैट्रिक। मै देहात मे ही बड़ी हुई थी। अब भले आदमी की तरह उठिए और चलिए।

सर पैट्रिक : (उठते हुए) बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। गुडबाई कौली। (रीजन के कंधे थपथपाकर बाहर जाते हैं। दरवाज़े पर एक क्षण के लिए विचार-मग्न मुद्रा मे मुड़कर ऐम्मी की ओर देखते हुए गंभीर विश्वास से कहते है।) तुम एक निहायत बदसूरत चुड़ैल

हो, इसमे कोई मुगालता नहीं है।

ऐम्मी : (क्रोध से तिलमिलाकर, पीछे से चिल्लाती हुई) तुम खुद भी तो खूबसूरत नहीं हो। (रीजन से, उद्विग्न स्वर मे) इन लोगों को शराफत छू नहीं गई। इनका ख्याल है कि मुझसे जो मन में आए कह सकते हैं। और तुम उन्हे शह देते हो, हां तुम उन्हें शह देते हो। मै उन्हें अपनी औकात में रहना सिखा दूंगी। अच्छा, अब बताओ : तुम उस गरीब औरत से मिलोगे या नहीं ?

रीजन : मै तुमसे पचासवी बार कह रहा हूं कि मैं किसीको नही देखूंगा। उसे जाने को कह दो।

ऐम्मी : ओह, 'उसे जाने को कह दो', यह सुन-सुनकर तो मै थक गई। वापस जाने से उस बेचारी को क्या फायदा होगा ?

रीजन : ऐम्मी, क्या चाहती हो कि मै तुम्हें डांटकर यह बात समझाऊं ?

ऐम्मी : (बहलाती हुई) आओ, मान भी जाओ। चलो मुझे खुश करने की खातिर ही बस एक मिनट के लिए उसे देख लो। बड़े नेक बच्चे हो ! उसने मुझे आधा क्राउन दिया है। उसका ख्याल है कि तुमसे मिल सकने पर ही उसके खाविन्द की जिन्दगी या मौत का सवाल मुनहसर करता है। अपने खाविन्द की ज़िन्दगी की कीमत सिर्फ आधा क्राउन ही लगाती है वह !

रीजन : अपने खाविन्द की जिन्दगी की कीमत सिर्फ आधा क्राउन ही लगाती है ?

ऐम्मी : बात यू है कि उस गरीब के पास सिर्फ इतना ही है। दूसरी औरते तो तुमसे सिर्फ अपने बारे में बातें करने के लिए आधा पौण्ड खर्च करने की भी परवाह नही करती—गंदी कही की !

इसके अलावा, यह औरत आज भर के लिए तुम्हारे मिजाज को खुशगवार बना देगी, क्योंकि उसे देखना एक नेक काम होगा; और वह ऐसी औरत है जो तुम्हारा पल्लू नही छोड़ेगी।

रीजन : खैर, वह घाटे में तो नही रही। आधे क्राउन में उसने सर रैल्फ ब्लूमफील्ड बोनिंगटन और कटलर वालपोल की सलाह ले ली है। छः गिन्नी तो इसके ही बनते है। मेरा तो ख्याल है कि उसने ब्लेन्किन्सोप की सलाह भी जरूर ली होगी। इसके अठारह पेन्स और जोड़ लो।

ऐम्मी : तो तुम मेरी खातिर उसे देखोगे, देखोगे न ?

रीजन : ओह, उसे ऊपर भेज दो और जाओ जहन्नुम मे।

[ऐम्मी संतुष्ट होकर दुल्की की चाल बाहर जाती है। रीजन बुलाता है।]

रेडपैनी !

रेडपैनी : (दरवाज़े पर आकर) जी, क्या बात है ?

रीजन : एक मरीजा ऊपर आ रही है। अगर पांच मिनट के अन्दर वह यहां से चली न जाए तो तुम अस्पताल से ज़रूरी बुलावा आया है, यह खबर लेकर अन्दर आ जाना। समझ गए। उसे यहां से चले जाना चाहिए, यह बताने के लिए एक सख्त इशारे की जरूरत पड़ेगी।

रेडपैनी : बहुत अच्छा ! (वह गायब हो जाता है।)

[रीजन शीशे के सामने जाकर अपनी टाई ठीक करता है।]

ऐम्मी : (घोषणा करते हुए) मिसेज डूबेडाट। (रीजन शीशे के सामने से हटकर अपनी मेज़ पर जाता है।)

[महिला अन्दर आती है। ऐम्मी बाहर जाकर दरवाज़ा बन्द कर

देती है। रीजन, जिसने अभेद्य और दूरागत-सा पेशेवर रुख अख्तियार कर लिया है, महिला की ओर मुड़कर उसे एक इशारे से सोफे पर बैठने की दावत देता है।

मिसेज़ डूवेडाट असन्दिग्ध रूप से अत्यन्त सुन्दर नवयुवती है। उसके अन्दर एक जगली पशु जैसा तीव्र आकर्षण और रोमान्स का भाव है, साथ ही एक कुलीन महिला की गरिमा और शालीनता भी है। रीजन, जो स्वभावतः नारी-सौदर्य के प्रति आर्कषित हो जाता है, अनायास आत्म-रक्षात्मक मुद्रा बना लेता है और अपने रुख को और भी कठोर कर लेता है। उसको ऐसा लगा है कि यह महिला बहुत बढिया पोशाक पहने हुए है। दरअसल उसका शरीर इतना सुडौल है कि उसपर कैसी भी पोशाक फब जाएगी। और वह इस शान और अदा से चलती है कि लगता है कि वह उन विशिष्ट महिलाओ मे से है जिन्हे अपनी गिरी हुई सामाजिक स्थिति के बावजूद वे संदेह और भय नही सताते जिनके कारण निम्न-मध्यवर्ग की स्त्रियों की चाल-ढाल इतनी फूहड़ हो जाती है। वह लम्बी, पतली और हृष्ट-पुष्ट है। उसके बाल काले हैं और इस तरह काढ़े गए है कि देखने मे बाल ही नज़र आते हैं, चिड़ियो के घोसले या भांड के सिर पर रखी बनावटी बालो की टोपी नही, (उन दिनो इन दो नमूनो के बीच ही फैशन की होड़ चल रही थी)। उसकी आखे अप्रत्याशित रूप से संकरी, अन्तर्भेदी और बरौनियो की काली रेखा से आवेष्टित है। वह जब उत्तेजित हो जाती है या एकाएक आखें खोल देती है तो उसकी आखो का भाव हृदय मे खलबली मचा देता है। उसके स्वर मे एक मधुर अल्हड़पन है और वह क्षिप्र-चरण नारी है। इस समय वह हताश करने वाली चिन्ता से उद्विग्न है। उसके हाथ मे एक पोर्टफोलियो है।]

मिसेज़ डूबेडाट : (धीमे आग्रही स्वर मे) डाक्टर—

रीजन : (तपाक से) ठहरो। इससे पहले कि तुम अपनी बात शुरू करो, मै साफ कह देना चाहता हूं कि मै तुम्हारे लिए कुछ नही

कर सकता। मुझे कतई फुरसत नही है। यह पैगाम मैने अपनी बूढ़ी नौकरानी के ज़रिए भेजा था, लेकिन तुमने नहीं माना।

मिसेज़ डूबेडाट : मैं कैसे मान सकती थी ?

रीजन : तुमने उसको रिश्वत दी।

मिसेज़ डूबेडाट : मै—

रीजन : सफाई देने से कोई फायदा नहीं। उसने मिन्नते करके तुम्हें देखने के लिए मुझे मजबूर कर दिया। खैर, अब तुम मेरी बात पर यकीन करो कि दुनियाभर की हमदर्दी रखकर भी मै कोई नया केस हाथ मे नही ले सकता।

मिसेज़ डूबेडाट : डाक्टर, आपको मेरे खाविन्द की जिन्दगी बचानी ही पड़ेगी। आपको यह करना ही होगा। सारी बातें सुनकर आप खुद समझ जाएंगे कि आपको यह करना ही होगा। औरों की तरह का यह कोई मामूली केस नही है। दुनिया भर में उसके जैसा आदमी नही, ओह यकीन कीजिए, वह औरों के जैसा नही है। मै आपको यह साबित करके दिखा दूगी। (अपने पोर्टफोलियो को टटोलते हुए) मै आपको दिखाने के लिए कुछ चीजे लाई हूं। और आप उसकी जिन्दगी बचा सकते है : अखबारों का कहना है कि आप यह कर सकते हैं।

रीजन : उसे क्या हुआ ? तपेदिक ?

मिसेज़ डूबेडाट : हां, उसका बाया फेफड़ा—

रीजन : हूं, मुझे इस बारे मे बताने की कोई जरूरत नहीं है।

मिसेज़ डूबेडाट : आप उसको अच्छा कर सकते है, अगर आप सिर्फ इसका इरादा कर ले। यह सच है कि आप उसे

अच्छा कर सकते है, है न ? (तीव्र पीड़ा से) ओह, मेहरबानी करके मुझे बताइए न।

रीजन : (चेतावनी देते हुए) क्या तुम खामोश रहकर अपने ऊपर काबू रखोगी या नही ?

मिसेज़ डूबेडाट : जी हां। माफ कीजिएगा। मै जानती हूं कि मुझे (फिर उद्वेग फूट पड़ता है।) ओह, मेहरबानी- करके सिर्फ यह कह दीजिए कि आप उसे अच्छा कर सकते हैं, फिर मै बिल्कुल ठीक हो जाऊंगी।

रीजन : (क्रुद्ध स्वर मे) मै मरीज को अच्छा करने के सब्ज बाग दिखाने वाले डाक्टरों मे से नही हूं। तुम्हें अगर अच्छा करने की गारन्टी चाहिए तो बेहतर है कि उनके पास जाओ जो ऐसी गारन्टी बेचते है। (सुस्थिर होते हुए, अपने स्वर पर लज्जित होकर) लेकिन अस्पताल मे मेरे पास तपेदिक के दस मरीज है जिनकी जिन्दगी, मेरा ख्याल है, मै शायद बचा सकता हूं।

मिसेज़ डूबेडाट : खुदा का शुक्र है !

रीजन : ज़रा ठहरो। उन दस मरीजों के बारे मे यह कयास कर लो कि वे समन्दर में बांस की एक कश्ती पर बैठे हुए लोग हैं, जिनका जहाज़ डूब गया है—वह कश्ती इतनी छोटी है कि मुश्किल से इन दस आदमियों की जान ही बचा सकती है—एक और इन्सान का बोझ वह नही संभाल सकती। ऐसी हालत मे लहरों मे से एक सिर उस कश्ती की बगल मे उठता है। एक और आदमी उस कश्ती पर चढ़ने की मिन्नत करता है। वह कश्ती के कप्तान से गुजारिश करता है कि वह उसकी जान बचाए। लेकिन कप्तान तभी ऐसा कर सकता है जब वह दस

में से किसी एक को समन्दर में धकेलकर डुबो दे ताकि नये आदमी के लिए कश्ती मे जगह हो सके। तुम मुझसे ऐसा ही करने के लिए कह रही हो।

मिसेज डूबेडाट : लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? मेरी समझ में कुछ नही आता। जरूर ही—

रीजन : तुम्हें मुझपर यकीन करना चाहिए कि बात ऐसी ही है। मेरी लेबोरेटरी, मेरे कारकुन और मै खुद, सभी जी-जान से जुटे हुए है। हम अपनी भरसक पूरी कोशिश कर रहे है। यह इलाज अभी नया है। इसमें काफी वक्त, रकम और काबलियत की जरूरत पड़ती है, और हमारे पास नया केस लेने के लिए इनमें से कोई चीज फालतू नही है। हमारे ये दस केस भी चुने हुए केस है। क्या तुम समझती हो कि चुने हुए से मेरा क्या मतलब है?

मिसेज डूबेडाट : चुने हुए। नही, मै नही समझी।

रीजन : (कठोरतापूर्वक) तुमको समझना ही पड़ेगा। तुम्हें यह बात समझकर हकीकत का सामना करना चाहिए। उन दस केसों को हाथ में लेते वक्त मुझे हरेक के बारे मे सिर्फ यही नहीं सोचना पड़ा था कि उस आदमी की जान बचाई भी जा सकेगी या नहीं बल्कि यह भी कि क्या उसकी जान बचाने के काबिल है। पचास मरीजों में से मुझे सिर्फ दस चुनने थे, और चालीस को मौत के रहमो-करम पर छोड़ देना पड़ा था। इन चालीस लोगों में से कुछ की नौजवान बीविया और नन्हे-नन्हे बच्चे भी थे। अगर उन लोगों के मर्ज की नाजुक हालत उनको बचा सकती तो उन्हें दस बार बचा लिया जाता। मुझे इसमे शक नहीं कि तुम्हारे

केस की हालत भी नाजुक है। मै तुम्हारी आंखों में भरे आंसुओं को देख सकता हूं। (वह जल्दी से आंखें पोंछती है।) मै जानता हूं कि मेरी वात खत्म होते ही तुम अपनी आरज़ू-मिन्नतों की वौछार करने के लिए तैयार वैठी हो; लेकिन यह फजूल होगा। तुमको किसी और डाक्टर के पास जाना चाहिए।

मिसेज़ डूबेडाट : लेकिन क्या आप किसी दूसरे डाक्टर का नाम वता सकते है जो आपके राज को समझता है ?

रीजन : मेरा कोई राज नहीं है। मै कोई नीम-हकीम नही हूं।

मिसेज़ डूबेडाट : मेरी गुस्ताखी माफ हो। मेरी मंशा ऐसी गलत वात कहने की नही थी। मेरी समझ मे नहीं आता कि आपसे किस तरह वात करूं। ओह, मै मिन्नत करती हूं कि आप नाराज न हों।

रीजन : (फिर किंचित् लज्जित होकर) वस ! वस ! इसकी फिक्र न करो। (अपने को ढीला छोड़कर वैठ जाता है।) वहरहाल, जो भी हो, मै भी फज़ूल वकवास कर रहा हूं। सच तो यह है कि मै खुद एक नीम-हकीम हूं—ऐसा नीम-हकीम, जिसे डाक्टरी की डिग्री हासिल है। लेकिन मेरी ईजाद अभी तक पेटेन्ट नही हुई।

मिसेज़ डूबेडाट : तो क्या कोई डाक्टर नही जो मेरे खाविन्द को अच्छा कर सके ? ओह, फिर वो ऐसा करते क्यों नही ? मै कई डाक्टरों से उसका इलाज करवा चुकी हूं। इतना कुछ खर्च भी कर चुकी। वस अगर आप किसी और डाक्टर का नाम ही वता दे।

रीजन : यों तो आज हर राह चलता आदमी एक डाक्टर है। लेकिन मेरे सिवा उन चंद लोगों को छोड़कर जिन्हे मै सेन्ट एनी के

अस्पताल में ट्रेन कर रहा हूं, अभी ऐसा आदमी कोई नहीं है जो औप्सोनिन के इलाज को पूरी तरह समझता हो। लेकिन हम सबके हाथ भरे हुए है। मुझे अफसोस है, लेकिन इससे ज़्यादा मै कुछ नही कह सकता। (उठते हुए) गुड मॉर्निंग।

मिसेज डूबेडाट : (एकाएक और हताश भाव से अपने पोर्टफोलियो से कुछ चित्र निकालती है।) डाक्टर, जरा इनकी ओर देखिए। आप तस्वीर को समझते है : आपके वेटिंग-रूम मे कुछ अच्छी तस्वीरे टंगी हैं। इनकी ओर एक नजर डाले। ये उसकी बनाई हुई है।

रीजन : मेरे देखने से कोई फायद नही। (फिर भी वह उनकी ओर देखता है।) हैलो! (एक चित्र को लेकर वह खिडकी के पास जाकर गौर से देखता है।) वाकई, यह असली चीज है। वाकई, वाकई। (फिर वह दूसरे चित्र को देखकर वापस करता है।) ये बहुत अच्छे है। अभी पूरे नही हुए, है न?

मिसेज डूबेडाट : वह इतनी जल्दी थक जो जाता है। लेकिन आप देखते हैं, देखते है न, कि वह कितना बड़ा जीनियस है? अब आपको इत्मीनान हो गया होगा कि उसकी जिन्दगी बचाने के काबिल है। ओह, डाक्टर, मैंने उससे सिर्फ इसी इरादे से शादी की थी कि मै उसे अपना काम शुरू करने मे मदद करूंगी। मेरे पास इतनी दौलत थी कि उससे मै उसको शुरू के कठिन दिनों से पार ले जाती—उसे मौका देती कि वह अपनी इन्सपिरेशन के मुताबिक तब तक चल सकता जब तक कि लोग उसकी जीनियस का लोहा न मान लेते। और मै एक मॉडल के रूप मे भी उसके काम आती थी, उसकी बनाई मेरी तस्वीरे हाथों-हाथ बिक जाती थी।

रीजन : तुम्हारे पास उनमें से कोई है ?

मिसेज डूबेडाट : (एक चित्र निकालती हुई) सिर्फ यही एक है। यह सबसे पहली तस्वीर थी।

रीजन : (अपनी आखो से निगलता हुआ) यह एक शानदार तस्वीर है। इसका नाम जेनीफर क्यों है ?

मिसेज डूबेडाट : मेरा नाम जेनीफर है।

रीजन : अजब-सा नाम है।

मिसेज डूबेडाट : कार्नवाल में अजब नही होता। मै कॉर्निश हूं। आपके यहां इसी नाम को गुनेवियर पुकारते हैं।

रीजन : (दोनों नामों को किंचित् रस लेकर दुहराते हुए) गुनेवियर। जेनीफर (चित्र की ओर दुबारा देखते हुए) वाकई, यह एक शानदार तस्वीर है। माफ करना, लेकिन क्या पूछ सकता हूं कि यह तस्वीर बिक्री के लिए है या नहीं ? मै इसे खरीद लूंगा।

मिसेज डूबेडाट : ओह, आप इसे रख लीजिए। यह मेरा अपना है। उसने मुझे भेंट किया था। इसे रखिए। आप सभी को रख लीजिए। आप सब कुछ ले लीजिए : जो चाहें मांग, लीजिए, लेकिन उसकी जान बचा दीजिए। आप उसकी जान बचा सकते हैं, आप जरूर बचाएंगे, आपको बचानी ही पड़ेगी।

रेडपैनी : (पूरी घबराहट भरी मुद्रा मे प्रवेश करता है।) उन्होंने अभी अस्पताल से टेलीफोन किया है कि आपको फौरन वहां पहुंचना चाहिए—एक मरीज मौत की घड़ियां गिन रहा है। गाड़ी इन्तजार कर रही है।

रीजन : (असहिष्णुता से) ओह, क्या बकवास है ! जाओ यहां से। (अत्यन्त क्रोध से) इस तरह मेरे काम मे दखल देने का तुम्हारा

क्या मतलब है ?

रेडपैनी : लेकिन—

रीजन : खामोश ! देखते नहीं कि मै किसीसे बात कर रहा हूं ? भाग जाओ।

[हैरान रेडपैनी वहा से ग़ायब हो जाता है ।]

मिसेज डूबेडाट : (उठते हुए) डाक्टर, जाने से पहले सिर्फ एक मिनट और मेरी सुन लीजिए ।

रीजन : बैठ जाओ । कोई खास बात नही है ।

मिसेज डूबेडाट : लेकिन वह बेचारा मरीज । उसने कहा कि वह मर रहा है ।

रीजन : ओह, वह अब तक मर चुका होगा । उसकी फिक्र मत करो । बैठ जाओ ।

मिसेज डूबेडाट : (बैठते हुए रो पड़ती है।) ओह, आप लोगों मे से कोई भी तो परवाह नही करता । आप रोज़ लोगों को मरते हुए देखा क़रते है ।

रीजन : (उसे थपथपाते हुए) कैसी फजूल बात है । कुछ भी तो नही हुआ । मैने खुद ही उसे ताकीद की थी कि वह अन्दर आकर यह बात कहे । मेरा ख्याल था कि मुझे तुमसे अपना पिण्ड छुड़ाने की जरूरत पड़ जाएगी ।

मिसेज डूबेडाट : (इस झूठ से स्तम्भित होकर) ओह !

रीजन : इतनी हैरत मे आकर देखने की जरूरत नही है । कोई भी तो नही मर रहा ।

मिसेज डूबेडाट : मेरा खाविन्द तो मर रहा है ।

रीजन . (अपने को सभालते हुए) आह, सचमुच । मै तुम्हारे खाविन्द

को तो भूल ही गया था। मिसेज डूबेडाट, क्या तुम मुझसे कोई बहुत गंभीर काम करने के लिए कह रही हो ?

मिसेज़ डूबेडाट : मै आपसे एक अजीम इन्सान की जिन्दगी बचाने को कह रही हूं।

रीजन : तुम मुझे कह रही हो कि मै उसकी खातिर एक दूसरे आदमी का कत्ल कर दूं। क्योंकि अगर मै कोई नया केस ले लूं तो मुझे अपने मरीजों मे से एक को पुराने ढंग के मामूली इलाज के हवाले कर देना पड़ेगा। खैर, ऐसा करने से मै हिचकिचाता नही। मुझे पहले भी ऐसा करना पड़ा है, और मै फिर ऐसा कर सकता हूं अगर तुम मुझे यह यकीन दिला सको कि मैं दस मे से सबसे बेकार और अदना इन्सान की जिस जिन्दगी को बचा रहा हूं उसके मुकाबले में तुम्हारे खाविन्द की जिन्दगी ज़्यादा अहम और जरूरी है।

मिसेज़ डूबेडाट : उसने ये तस्वीरें बनाई थी; लेकिन ये उसकी बेहतरीन तस्वीरे नही हैं—उसकी बेहतरीन तस्वीरों से इनका कोई मुकाबला ही नही हो सकता। मै जान-बूझकर उन तस्वीरों को साथ नही लाई : बहुत थोड़े लोग ही उनको पसन्द कर पाते है। उसकी उम्र अभी महज तेईस साल है। उसकी सारी जिन्दगी अभी सामने पड़ी है। क्या आप उसको अपने पास लाने की इजाजत नही देगे ? क्या आप उससे बात नही करना चाहेगे ? क्या खुद उसको देखना पसंद नही करेगे ?

रीजन : क्या उसकी सेहत ऐसी है कि वह रिशमाड के स्टार एण्ड गार्टर होटल मे डिनर पर आ सके ?

मिसेज़ डूबेडाट : ओह, जरूर। लेकिन क्यों ?

रीजन : मै बताता हूं । मुझे जो नाइट का खिताब मिला है उसके तुफ़ैल मे मै अपने सभी पुराने दोस्तों को डिनर की दावत दे रहा हूं—तुमने अखबारों मे यह खबर पढ़ी होगी, पढ़ी है न ?

मिसेज डूबेडाट : जी हां, जी हां । उसीसे तो मुझे आपके बारे मे मालूम हुआ ।

रीजन : यह डाक्टरों का डिनर होगा, और यह कुवारों का डिनर भी होता । मै खुद कुवारा हूं । खैर, अगर तुम मेरी ओर से मेजबानी करो और अपने खाविन्द को भी साथ लाओ तो वह मुझसे मिल सकेगा, साथ ही वह मेरे पेशे की कुछ आलातरीन हस्तियों से भी मिल सकेगा—सर पैट्रिक कलेन, सर रैल्फ ब्लूमफील्ड बौनिंगटन, कटलर वालपोल वगैरह-वगैरह । मै उसका केस उनके सामने पेश कर दूंगा; और हम सब मिलकर उसके बारे मे जो राय कायम करेंगे, उसपर ही तुम्हारे खाविन्द के इलाज का सवाल मुनहसर करेगा । बोलो, तुम आओगी ?

मिसेज डूबेडाट : जी, हां, मै जरूर आऊंगी । ओह, शुक्रिया, शुक्रिया । और क्या मै उसकी कुछ तस्वीरें भी साथ लाऊं—सचमुच बेहतरीन किस्म की ?

रीजन : हां, जरूर । मै कल दिन मे किसी वक्त डिनर की तारीख की इत्तला भेज दूगा । अपना पता मुझे दे जाओ ।

मिसेज डूबेडाट : बार-बार आपका शुक्रिया । आपने मुझे कितना सुखी बना दिया है । मैं जानती हूं कि आप उसकी तारीफ करेंगे और उसे पसन्द करेंगे—यह रहा मेरा पता । (रीजन को अपना कार्ड देती है।)

रीजन : शुक्रिया । (घंटी बजाता है।)

मिसेज़ डूबेडाट : (सकपकाकर) क्या मै—क्या कोई—मैं क्या—मेरा मतलब है—(वह शर्म से लाल हो जाती है और घबराहट में चुप खड़ी रह जाती है।)

रीजन : क्या बात है ?

मिसेज़ डूबेडाट : इस कन्सल्टेशन के लिए आपकी फीस ?

रीजन : ओह, यह तो मै भूल ही गया। सारे इलाज की फीस जिसमें अच्छा होना भी शामिल है, उसकी चहेती माडल की एक खूबसूरत-सी तस्वीर हो—क्या इसपर हम राजी हो सकते है ?

मिसेज़ डूबेडाट : ओह, आप बड़े रहमदिल है। आपका शुक्रिया। मै जानती हूं कि आप उसे जरूर अच्छा कर देंगे। अच्छा, गुडबाई।

रीजन : मै जरूर करूंगा। गुडबाई। (दोनों हाथ मिलाते है।) हां, याद आया, तुम जानती हो न कि तपेदिक छूत की बीमारी है ? मुझे उम्मीद है कि तुम पूरी एहतियात बरतती हो।

मिसेज़ डूबेडाट : मै इस बात को भुला ही नही सकती। होटलों में वे लोग हमारे साथ कोढ़ियों के साथ जैसा बर्ताव करते है।

ऐम्मी : (दरवाजे से) अच्छा प्यारी ! तुमने इसको मोह लिया न ?

रीजन : हां। दरवाजे पर अपनी ड्यूटी दो और अपनी ज़बान बंद रखो।

ऐम्मी : बड़े नेक लड़के हो। (मिसेज़ डूबेडाट के साथ बाहर जाती है।)

रीजन : (अकेले मे) कन्सल्टेशन मुफ्त। इलाज शर्तिया ! (एक लम्बी आह भरता है।)

दूसरा अंक

[रिशमांड में स्टार और गार्टर के छज्जे पर डिनर के बाद। ग्रीष्म का निरभ्र आकाश। रह-रहकर दूर से गुज़रती हुई ट्रेन की आवाज़ और नीचे टेम्स नदी मे चलने वाली नावो के चप्पुओ की छप्‌छप्‌ आवाज़ के अलावा और कोई चीज़ इस स्थान की निस्तब्धता भंग नही करती। डिनर खत्म हो चुका है और आठ मे से तीन कुर्सियां खाली पड़ी है। दर्शको की ओर पीठ किए सर पैट्रिक रीजन के साथ चौकोर मेज पर बैठे है। उनके सामने की दोनों कुर्सियां खाली पडी हैं। उनके दाहिनी ओर पहली कुर्सी खाली है, लेकिन दूसरी कुर्सी को पूरी तरह घेर कर बी. बी. बैठे हुए हैं, जो चन्द्रमा की किरणो का आनन्द ले रहे हैं। उनकी बाईं ओर शुत्जमेकर और वालपोल हैं। होटल का दरवाज़ा उनके दाहिने ओर है, वी. बी. की पीठ की तरफ। पाचो व्यक्ति खाने से तृप्त होकर और शराब के जाम पीकर अब खामोशी से कॉफी और सिगरेट का मज़ा ले रहे हैं।

मिसेज़ डूबेडाट जाने के लिए शॉल ओढकर छज्जे पर आती है। सर पैट्रिक को छोडकर सभी उठ खड़े होते हैं। लेकिन वह बी. वी. की बगल मे बड़ी खाली कुर्सी पर बैठ जाती है। सब लोग फिर बैठ जाते हैं।]

मिसेज़ डूबेडाट : (अन्दर दाखिल होते हुए) लुई अभी आ जाएगा। वह डाक्टर ब्लेकिसोप को समझा रहा है कि टेलीफोन किस तरह करना चाहिए। (बैठ जाती है।) ओह, मुझे कितना अफ-सोस है कि हमे अब जाना है। यह बड़े शर्म की बात लगती है, इस हसीन रात मे, और जब कि हमने आज इतना लुत्फ उठाया है।

रीजन : मै नहीं समझता कि आधा घंटा और रुक जाने से मिस्टर डूबेडाट को जरा भी नुकसान होगा।

सर पैट्रिक : बस, बस, कौली, बस, बस ! जाने भी दो। तुम अपने खाविन्द को घर ले जाओ, मिसेज डूबेडाट; और उसे ग्यारह बजे से पहले ही बिस्तर में सुला देना।

बी. बी. : हां, हां ! ग्यारह से पहले विस्तर मे। विल्कुल ठीक। विल्कुल ठीक। तुम्हारे जाने का मुझे सख्त अफसोस है, मेरी अजीज मिसेज डूबेडाट। लेकिन सर पैट्रिक के आर्डर-अ-अ-टायर और सिडान के कानून होते है।

वालपोल : आइए मै आपको अपनी मोटर मे घर तक छोड़ आऊं।

सर पैट्रिक : नही। तुम्हें अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए, वालपोल ! तुम्हारी मोटर मिस्टर और मिसेज डूबेडाट को सिर्फ स्टेशन तक ले जाएगी। रात के वक्त खुली गाड़ी मे इतनी दूर जाना भी उसके लिए वहुत ज्यादा है।

मिसेज़ डूबेडाट : ओह, मेरा ख्याल है कि ट्रेन से जाना ही बेहतर होगा।

रीजन : खैर, मिसेज़ डूबेडाट, आज हम लोगों की शाम बड़े मजे से गुजरी।

वालपोल : वड़े मज़े से।

बी. वी. : वेहद पुरलुत्फ खुशगवार और जिन्दगी भर याद रहनेवाली शाम थी यह !

मिसेज़ डूबेडाट : (शर्मीली चिन्तापूर्वक) आपको लुई कैसा लगा ? या मेरा यह पूछना गलत है ?

रीजन : गलत क्यों ? हम सभी उसपर फिदा हो चुके हैं।

वालपोल : उससे बेहद खुश है ।

बी. बी. : उससे मिलकर हमें दिली मसर्रत हुई है। बल्कि यह हमारी खुशकिस्मती है, सचमुच खुशकिस्मती थी ।

सर पैट्रिक : (गुर्राने जैसी आवाज निकालते हैं।)

मिसेज डूबेडाट : (जल्दी से) सर पैट्रिक ! क्या आप उससे नाराज है ?

सर पैट्रिक : (सावधानी से) मै उसकी तस्वीरों की बेहद कद्र करता हूं, मदाम ।

मिसेज डूबेडाट : जी, लेकिन मेरा मतलब था कि—

रीजन : तुम यहां से खुश-खुश लौटोगी । उसकी जिन्दगी बचाने के काबिल है। उसको जरूर बचाना चाहिए और बचाया जाएगा ।

[मिसेज डूबेडाट उठती है और खुशी, संतोष और कृतज्ञता से उसकी सास फूल जाती है । सर पैट्रिक और शुत्जमेकर को छोड़कर सभी उठ खडे होते हैं और उसे दिलासा देने के लिए उसकी ओर बढते है ।]

बी. बी. : जरूर ! ज़रूर !

वालपोल : अगर आपको मालूम हो कि इस केस मे क्या करना चाहिए तो उसे बचाने मे आपको कोई बड़ी मुश्किल सामने नही आएगी ।

मिसेज डूबेडाट : ओह, मै आपका शुक्रिया कैसे अदा कर सकूंगी ! आज रात से मै भी अपने को सुखी समझने लगूंगी । आप नही जानते, मुझे कैसा महसूस हो रहा है ।

[रोती हुई बैठ जाती है । वे सब उसे सान्त्वना देने के लिए उसके गिर्द जमा हो जाते हैं।]

बी. बी. : प्यारी मिसेज डूबेडाट ! बस-बस ! बस-बस ! (अत्यन्त

आग्रही स्वर में) बस-बस !

वालपोल : हम लोगों की फिक्र न करें। जी खोलकर रो लें।

रीजन : नही; रोग्रो नही। तुम्हारे खाविन्द को यह पता नहीं चलना चाहिए कि हम लोग उसके बारे में बातें कर रहे थे।

मिसेज डूबेडाट : (जल्दी से अपने को सुस्थिर करने की चेष्टा करते हुए) नही, कतई नही। मेहरबानी करके मुझसे नाराज न हों। एक डाक्टर होना कितनी शानदार बात होती होगी ! (वे सब हंसते हैं।) हंसिए मत। आपको नही मालूम क़ि आपने मेरे लिए कितना-कुछ कर दिया है। मुझे आज से पहले यह तक नही मालूम था कि मेरे अन्दर कितना भयानक डर समा गया था—किस तरह मै बुरे से बुरे अंजाम का डरावना तसव्वुर करने लगी थी। खतरा कितना बड़ा है, यह जानने तक की हिम्मत मुझमें नही थी। लेकिन अब सकून हासिल हुआ है, अब मै जानती हूं।

[लुई डूबेडाट होटल से आता है। वह ओवरकोट पहने है और उसका गला एक शॉल मे लिपटा है। वह तेईस वर्ष का एक दुबला-पतला नौजवान है, शरीर से अभी बालक है, सुन्दर है लेकिन जनखा नही है। उसकी आखे नीली हैं। वह इस तरकीब से आपके चेहरे पर आंखें गडाता है और साथ मे खुलकर मुस्करा देता है कि तुरन्त आपका मन मोह लेता है। हालाकि वह बेचैन रहने का आदी है और उसकी निरीक्षण-शक्ति बहुत तेज़ है और जल्दी ही चीज़ो को भांप लेता है, फिर भी वह शर्मीला कतई नही है। वह उम्र में जेनीफर से छोटा है, लेकिन उससे इस बडप्पन से पेश आता है, जैसे यह बिल्कुल स्वाभाविक हो। डाक्टरो का रौब उस-पर कतई हावी नही होता। न सर पैट्रिक की लम्बी उम्र, न ब्लूमफील्ड बौनिंगटन का शाहाना अन्दाज ही उसपर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। वह बिल्ली की तरह अपने स्वाभाविक रूप मे ही सबसे पेश आता है। वह

इन लोगों के साथ इस अन्दाज़ से व्यवहार करता है जैसे अधिकतर लोग चीज़ों के साथ व्यवहार करते हैं, हालाकि वह इस मौके पर जानबूझकर इन सबके प्रति प्रीतिकर व्यवहार करने की कोशिश कर रहा है। उन लोगों की तरह जिनपर यह भरोसा किया जा सकता है कि वे अपनी देखभाल खुद कर सकते हैं, उसके साथ बैठकर वक्त गुजारना खुशगवार लगता है। और लोगों की कल्पना को जगाकर छू लेने की उसके भीतर के कलाकार की शक्ति ऐसी है कि उसके श्रोता उसे अनेक गुणों और शक्तियो का स्वामी होने की धारणा बना लेते है, चाहे उसमे वे गुण और शक्तिया सचमुच हों या न हो।]

लुई : (रीजन की कुर्सी के पीछे अपने दस्ताने चढाते हुए) अच्छा जिन्नी-गुन्नी ! मोटर आ गई।

रीजन : आप इन्हे इस तरह अपने खूबसूरत नाम को बिगाड़ने की इजाज़त क्यों देती हो, मिसेज़ डूबेडाट ?

मिसेज डूबेडाट : ओह, शानदार मौकों पर मै जेनीफर बन जाती हूं।

बी. बी. : तुम तो कुंवारे हो; तुम इन बातों को नहीं समझ सकते, रीजन। मेरी ओर देखो, (सब देखते है।) मेरे भी दो नाम हैं। घरेलू झगड़ों के वक्त मुझे सिर्फ रैल्फ के नाम से पुकारा जाता है। लेकिन जब घर मे सूरज की सुहानी धूप खिली होती है, उस वक्त मै बीडल-डीडल-डम्किन्स बन जाता हूं। शादी शुदा जिन्दगी ऐसी ही होती है। मिस्टर डूबेडाट, जाने से पहले क्या आप मेरे ऊपर एक इनायत कर सकेंगे ? क्या आप इस मीनू-कार्ड पर अपने दस्तखत कर देंगे, उस स्केच के नीचे जो आपने मेरा बनाया है ?

वालपोल : जी हां, और मेरे स्केच के नीचे भी, अगर इतनी इनायत और कर सकें।

लुई : जरूर, जरूर । (बैठकर मीनू-कार्डों पर दस्तखत करता है ।)

मिसेज डूबेडाट : और डाक्टर शुत्जमेकर के कार्ड पर दस्तखत नहीं करोगे, लुई ?

लुई : मेरा ख्याल तो नही कि डा० शुत्ज़मेकर को अपनी पोर्ट्रेट पसन्द आई है। मै इसे फाड़े देता हूं । (वह मेज पर आगे को झुककर डा० शुत्ज़मेकर का मीनू-कार्ड उठा लेता है और फाड़ने को होता है। शुत्ज़मेकर किसी प्रकार का संकेत नही करते ।)

रीजन : नहीं, नहीं । अगर लूनी को यह नही चाहिए, तो मुझे दे दो ।

लुई : मैं बड़ी खुशी से आपके लिए इसपर दस्तखत कर दूंगा । (दस्तखत करके रीजन को देता है।) मैंने अभी रात के वक्त नदी के मंजर का खाका नोट किया है। इसपर काम करने से एक शानदार तस्वीर बन जाएगी । (वह एक पॉकेट स्केच-बुक उनको दिखाता है।) मेरा ख्याल है कि मैं इसको 'रुपहली डेन्यूब' का नाम दूंगा ।

बी. बी. : आह, बहुत खूब ! बहुत खूब !

वालपोल : बहुत प्यारा नाम होगा। पेस्टल कलर के तो आप माहिर हैं।

[लुई पहले तो संकोचवश खांसता है, फिर दिक का दौरा पड़ने के कारण।]

सर पैट्रिक : अच्छा, मिस्टर डूबेडाट, आपको रात की हवा अब काफी मिल गई । मदाम, इनको घर ले जाएं ।

मिसेज डूबेडाट : जी हां । लुई, चलो ।

रीजन : कतई न डरे। कतई परवाह न करें। मैं यह खांसी ठीक कर दूंगा ।

बी. बी. : हम फ़ैगोसाइट्स को उकसा देंगे। (स्नेहपूर्ण आवेश के साथ जेनीफर से हाथ मिलाता है।) गुडनाइट, मिसेज डूबेडाट। गुड नाइट। गुड नाइट।

वालपोल : फैगोसाइट्स अगर नाकामयाब रहें तो मेरे पास आइएगा। मैं आपको फिर तन्दुरुस्त बना दूंगा।

लुई : गुड नाइट, सर पैट्रिक। आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई।

सर पैट्रिक : 'नाइट!(आधी गुर्राहट के साथ)

मिसेज़ डूबेडाट : गुड नाइट, सर पैट्रिक।

सर पैट्रिक : अपने को गले तक ढककर रखें। यह मत सोचे कि चूंकि आपके फेफड़े मिस्टर डूबेडाट से ज़्यादा मजबूत है तो वे लोहे के बने हुए है। गुड नाइट।

मिसेज़ डूबेडाट : शुक्रिया। शुक्रिया। मुझे कोई चीज नुकसान नहीं पहुंचाती। गुड नाइट।

[लुई होटल के मार्ग से जाता है। वह शुत्ज़मेकर की ओर ध्यान भी नही देता। मिसेज़ डूबेडाट पहले तो हिचकिचाती है, फिर झुककर अभिवादन करती है। शुत्जमेकर उठकर, जर्मन ढग से, अभिवादन का उत्तर देता है। वह बाहर जाती है। रीजन उसके साथ है। बाकी लोग अपनी-अपनी कुर्सियो पर बैठकर विचारमग्न हो जाते है या खामोशी से सिगरेट पीते है।]

बी. बी. : (सामंजस्यपूर्ण स्वर मे) बड़ा खू-श मिजाज जोड़ा है! लाला-रुख, पैकरे-जमाल औरत! फ़नकार लड़का! क़ाबिले-तारीफ़ फ़न! हसीन जिस्म। शानदार शाम! बेहद कामयाब! दिल-चस्प केस! खुशगवार रात! ख़ुशनुमा मंजर! शानदार डिनर! रूह-आफ़ज़ा बातचीत। पुर सकून पिकनिक! बढ़िया शराब!

सुखदायी अंत। दिलकश शुक्रगुज़ारी ! खुशनसीब रीजन—

रीजन : (लौटते हुए) क्या बात है ? तुमने मुझे बुलाया था, बी. बी ?

(जाकर सर पैट्रिक की बगल मे अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है।)

बी. बी. : नही, नही ! मै तो सिर्फ तुम्हें इस कामयाब शाम के लिए मुबारक दे रहा था। दिल-फरेब औरत ! खुशखल्क और खुशमिजाज ! हसीन अन्दाज़—

[होटल से निकलकर ब्लेंकिसोप आता है और रीजन की बगल में खाली कुर्सी पर बैठ जाता है।]

ब्लेंकिसोप : इस तरह बीच मे उठकर जाने का मुझे सख्त अफसोस है, रीजन। लेकिन पुलिस ने टेलीफोन करके बुलाया था। हमारे चौराहे पर उन्हें एक ग्वाले की आधी लाश मिली है, जिसकी जेब मे मेरे हाथ का लिखा एक नुस्खा भी था। मिसेज डूबेडाट कहां हैं ?

रीजन : चली गईं।

ब्लेंकिसोप : (उठकर। पीला पड़ जाता है।) चली गईं !

रीजन : अभी-अभी गई है।

ब्लेंकिसोप : शायद मै उन्हें रास्ते मे ही पकड़ लूं—

[होटल की ओर भागता है।]

वालपोल : (पीछे से पुकारते हुए) वह तो मोटर में है, भले आदमी। मीलों निकल गया होगा। तुम नही—(बीच मे ही रुककर) कोई फायदा नही।

रीजन : ये लोग सचमुच बहुत नेक है। इसमे शक नहीं कि पहले मेरा ख्याल था कि उसका खाविन्द जरूर कोई नाकाबिले बर्दाश्त शोहदा और लफंगा होगा। लेकिन वह अपने ढंग से

उतना ही प्यारा इन्सान है, जितनी प्यारी वह है। और वह वाकई एक जीनियस है। यह एक ऐसा केस है, जिसकी जिन्दगी सचमुच बचाने के काबिल है। किसी और को मौत के रहमो-करम पर छोड़ना पड़ेगा, लेकिन इससे बदतर आदमी को चुनना हर सूरत मे आसान होगा।

सर पैट्रिक : तुम कैसे जानते हो ?

रीजन : बस जाने भी दो, सर पैट्रिक, गुर्राना बंद करो। लो कुछ और पियो।

सर पैट्रिक : नही, शुक्रिया।

रीजन : क्या आपको डूबेडाट में कोई बुराई नजर आई, बी. बी ?

बी बी. : ओह, बहुत प्यारा नौजवान है। इसके अलावा, उसमे बुराई हो भी क्या सकती है ? उसकी ओर एक नजर देखो। उसमें क्या बुराई हो सकती है ?

सर पैट्रिक : हर इंसान मे कम से कम दो बुराइयां तो हो ही सकती हैं। उनमें से एक तो जेब होती है और दूसरी औरत। जब तुम्हें यह न मालूम हो कि इन दोनों मामलों मे उसका अखलाक दुरुस्त है, तब तक तुम उसके बारे मे कुछ नहीं जानते।

बी. बी. : आह, नाकदर ! नाकदर !

वालपोल : जहां तक उसकी जेब का सवाल है, कम से कम फिलहाल तो वह भरी हुई है। डिनर से पहले उसने, एक फनकार को पैसों की कितनी तंगी रहती है, इस बारे में मुझसे खुलकर बात की थी। उसने कहा कि उसमें कोई ऐब नही है और वह हमेशा हाथ रोककर खर्च करता है, लेकिन बस एक ही फजूलखर्ची है, जिसमे पड़ने से वह अपने को रोक नही पाता, हालाकि उसकी हैसियत

यह गवारा नही करती । यह फजूलखर्ची है, अपनी बीवी को बढ़िया पोशाक पहनाना । सो मैने कहा, 'बोलो क्या चाहते हो। लो मुझसे ये बीस पौण्ड ले लो और जब तुम्हारी कश्ती किनारे लगे तो मुझे यह रकम लौटा देना ।' इस बारे में उसका सलूक बहुत नफीस था । उसने एक जां-बाज़ इन्सान की तरह यह रकम ले ली । इससे वह गरीब कितना खुश महसूस कर रहा था, यह देखकर मुझे दिली मसर्रत हुई ।

बी. बी. : (जो बढती हुई परेशानी से वालपोल की बात सुनता रहा था) लेकिन—लेकिन—लेकिन—यह किस वक्त की बात है, क्या मैं पूछ सकता हूं ?

वालपोल : उसी वक्त की जब मै नीचे नदी के किनारे जाकर आपके साथ शामिल हुआ था ।

बी. बी. : लेकिन मेरे अजीज वालपोल, उससे जरा पहले ही तो उसने मुझसे दस पौड कर्ज लिए थे ।

वालपोल : क्या !

सर पैट्रिक : (गुर्राने जैसी आवाज़ करते है ।)

बी. बी. : (दुलार से) बस, बस ! खैर, इसको कर्ज मांगना मुश्किल से कहा जा सकता है; क्योंकि उसने कहा कि खुदा ही जानता है वह यह रकम कब लौटा पाएगा । मै इन्कार नही कर सकता था । लगता है, जैसे मिसेज डूबेडाट को मुझसे कुछ लगाव हो गया है ।

वालपोल : (जल्दी से) नही, मुझसे हो गया है ।

बी. बी. : कतई नही । हमारी बातचीत मे तुम्हारे नाम का तो ज़िक्र भी नही आया । वह अपने काम मे इतना मशगूल रहता

है कि उसे अपनी बीवी को काफी वक्त के लिए अकेला छोड़ना पड़ता है। और वह गरीब और मासूम नौजवान—दरअसल उसे मेरी पोजीशन का पता नही है और न वह जानता है कि मै खुद कितना मसरूफ आदमी हूं—वह चाहता है कि मै उसके घर अक्सर जाया करूं और उसकी बीवी की दिलजोई किया करू ।

वालपोल : ठीक यही बात उसने मुझसे भी कही थी ।

बी. बी : छिः ! छिः ! छिः ! कितनी वाहियात बात है !

[परेशानी की हालत मे उठकर जगले के पास जाता है और व्यग्र भाव से नीचे का दृश्य देखता है ।]

वालपोल : सुनो रीजन, अब यह मामला संगीन बनता जा रहा है ।

[ब्लेंकिसोप अत्यन्त परेशान और दुखी हालत मे लौटता है, लेकिन यह दिखाने की चेष्टा करता है, जैसे बिल्कुल उदासीन हो ।]

रीजन : अच्छा, तुम उसे पकड़ पाए या नही ?

ब्लेंकिसोप : नही ! माफ करें, मुझे इस तरह भागना पड़ा । (मेज के छोर पर बी. बी. के पास बैठ जाता है ।)

वालपोल : कोई खास बात हो गई ?

ब्लेंकिसोप : अरे नही ! महज़ एक छोटी-सी काबिले-मजाक बात है । खैर अब कुछ नही किया जा सकता । जाने भी दे ।

रीजन : क्या यह बात डूबेडाट से ताल्लुक रखती है ?

ब्लेंकिसोप : (रुआंसा होकर) यह बात मुझे अपने तक ही रखनी चाहिए—मैं जानता हूं । रीजन, मै बयान नहीं कर सकता कि तुम्हारी इतनी मेहरबानियों के बावजूद मै तुम्हारी डिनर टेबिल पर अपनी गरीबी और मुफलिसी की दास्तान छेड़ने को मजबूर

होकर अपने दिल में कितना शर्मिन्दा हो रहा हूं। बात यह नहीं है कि तुम मुझे फिर कभी नहीं बुलाओगे, बल्कि यह कि यह बात इतनी शर्मनाक है। और मेरी कितनी खाहिश थी कि पुराने दिनों की तरह कम से कम एक शाम तो मै अपनी सारी चिन्ताओं को पीछे छोड़कर अपने ड्रेस-सूट में गुजारूंगा (यह सूट अभी भी औरों के आगे पहनने के काबिल है, तुम खुद ही देख सकते हो।)

रीजन : लेकिन हुआ क्या है ?

ब्लॉंकसोप : ओह, कुछ नही। बात हंसी के काबिल है। मैने बड़ी मुश्किल से आज की सैर के लिए चार शिलिंग बचाए थे। यहां पहुंचने के लिए मुझे एक शिलिंग और चार पेन्स खर्चने पड़े। खैर, तो डूबेडाट ने मुझसे आधा क्राउन उधार मागा क्योंकि उसे उस चेम्बरमेड को टिप देना था जिसके पास उसकी बीवी ने अपना ओवरकोट और शॉल रखा था। उसने कहा कि यह रकम उसे सिर्फ पांच मिनट के लिए चाहिए; क्योंकि उसकी पर्स बीवी के पास है। सो मैने उसे आधा क्राउन दे दिया। और वह मुझे यह रकम वापस करना भूल गया। अब मेरे पास लौटाने के लिए सिर्फ दो पेन्स बचे है।

रीजन : ओह, इसकी फिक्र मत करो—

ब्लॉंकसोप : (दृढ़तापूर्वक उसको रोकते हुए) नही, मुझे मालूम है कि तुम क्या कहना चाहते हो; लेकिन मै तुमसे कुछ नही लूंगा। मैने कभी एक पैनी तक कर्ज नही ली और न कभी लूगा। मेरे पास दोस्तों के अलावा और कुछ नही बचा, और मै उनको भी बेचने के लिए तैयार नहीं हूं। आप लोगों में से अगर कोई

मुझसे मिलते वक्त यह सोचने लगे कि मेरा दोस्ताना सलूक आखिर मे पांच शिलिंग कर्ज मागने की खातिर है, तो समझ लीजिए, मेरे लिए तो सब कुछ खत्म हो गया । मै तुम्हारे पुराने कपड़े ले सकता हूं, कौली, ताकि अपने कपड़ों में कही सड़क पर मिल जाऊं तो तुम्हें मुझसे बात करने में शर्म महसूस न हो, लेकिन मै एक पैनी भी कर्ज नही लूगा । दो पेन्स में जितनी दूर तक रेल ले जाएगी, रेल से जाऊंगा, बाकी फासला पैदल तय करूंगा ।

वालपोल : बन्दानवाज, आप सारा फासला मेरी मोटर में तय करेंगे। (सव लोगो की जान मे जान आती है और वालपोल जल्दी से इस दुःखदायी प्रसंग को वदलने के लिए कहता है।) खैर, क्या वह आपसे भी कुछ झटक ले गया, डाक्टर शुल्ज़मेकर ?

शुल्जमेकर (नकारात्मक ढग से सिर हिलाता है।)

वालपोल : आपने उसकी पेन्टिग पसंद नही की, मेरा ख्याल है ।

शुल्जमेकर : जी हां, खूब पसन्द की । मेरी तो बड़ी खाहिश थी कि उस स्केच को रख लेता और उसपर उसके दस्तखत भी ले लेता ।

बी. बी. : फिर आपने लिया क्यो नही ?

शुल्जमेकर : देखिए, बात यह है कि मिस्टर वालपोल से बात खत्म करने के बाद वह जब मुझसे मिला तो कहने लगा कि सिर्फ यहूदियों मे ही आर्ट को समझने की सलाहियत होती है और हालांकि वह आप लोगों की नाखांदा बकवास सुनने के लिए मजबूर था, लेकिन मैने उसके खाकों और तस्वीरों के बारे मे जो राय जाहिर की थी, वह दरअसल उससे बहुत खुश हुआ

था। उसने यह भी कहा कि उसकी बीवी मेरी काबलियत से बहुत मुतअस्सर हुई है, और यह कि उसे यहूदी हमेशा पसन्द आते हैं। फिर उसने उन खाकों की जमानत पर मुझसे पचास पौड पेशगी मांगे।

बी. बी., वालपोल, ब्लेंकिसोप, सर पैट्रिक : (सब एक साथ चिल्लाते हुए) नही, नही ! क्या सचमुच ! ठंडे दिल से ! क्या ! पचास और ! जरा ख्याल तो करो ! (गुर्राने जैसी आवाज करते हैं।)

शुत्ज़मेकर : यकीनन मै एक अजनबी को इस तरह कर्ज नही दे सकता था।

बी. बी. : मै तुम्हारे 'ना' कहने के हौसले की दाद देता हूं, मिस्टर शुत्ज़मेकर। दरअसल मै भी जानता था कि मुझे एक नौजवान को इस तरह कर्ज नही देना चाहिए। लेकिन उसे इन्कार करने की मुझे हिम्मत ही नही हुई। मै इन्कार कर भी नही सकता था, तुम तो जानते ही हो, क्या मै कर सकता था ?

शुत्जमेकर : मेरी समझ मे यह बात नहीं आती। मुझे लगा कि मै उसे कर्ज हर्गिज नही दे सकता था।

वालपोल : उसने फिर क्या कहा ?

शुत्जमेकर : यू ही, उसने उड़ती हुई फब्ती कसी और किसी यहूदी का हवाला दिया जो एक शरीफ आदमी के जजबात को समझ नही सकता था। खैर जनाब, मुझे कहना ही पड़ता है कि आप शरीफ लोगों को दरअसल खुश करना बहुत मुश्किल काम है। अगर हम लोग कर्ज दे देते है तो आप लोग कहते है कि हम यहूदियों मे शराफत नही है और अगर कर्ज नही देते तब भी

आप यही बात कहते है । मेरा इरादा उसके साथ बुरा सलूक करने का हर्गिज नही था, बल्कि मैने उससे कह भी दिया कि अगर वह यहूदी होता तो मैं यह रकम उसे जरूर दे देता ।

सर पैट्रिक : (गुर्राने जैसी आवाज़ करके) और इसपर उसने क्या कहा ?

शुल्जमेकर : ओह, इसपर वह मुझे इत्मीनान दिलाने लगा कि वह भी खुदा की चुनी हुई कौम का ही फर्द है—उसके आर्ट से यह साफ जाहिर था, और उसका नाम भी उतना ही बिदेसी था, जितना कि मेरा है । फिर वह बोला कि उसे पचास पौण्ड नही चाहिए, वह तो सिर्फ मजाक कर रहा था। दरअसल उसे सिर्फ दो गिन्नियों की ही जरूरत थी।

बी. बी. : हर्गिज़ नही, हर्गिज़ नही, मिस्टर शुल्जमेकर। यह आखिरी बात आपने अपने मन से गढ़ दी है । सच बताइए, उसने क्या कहा ?

शुल्जमेकर : जी नही, मिस्टर डूबेडाट जैसे लोगों की फितरत के बारे में नमक-मिर्च लगाकर कहानियां गढ़ने की जरूरत नही होती।

ब्लेंकिसोप : फिर भी आप दोनों वक्त पड़ने पर एक दूसरे की मदद तो करेंगे ही—मेरा मतलब है आप लोग जो खुदा की चुनी हुई कौम के है। ठीक है न मिस्टर शुल्जमेकर ।

शुल्जमेकर : कतई नही । जाती तौर पर मुझे यहूदियों से अंग्रेज़ ज़्यादा पसन्द है और मै ज़्यादातर उनसे ही मेल-जोल रखता हूं । यह बिल्कुल कुदरती बात है, क्योंकि खुद यहूदी होने की वजह से मेरे लिए एक यहूदी में कोई खास दिलचस्पी की चीज नहीं है, जबकि एक अंग्रेज़ में हमेशा ही कोई न कोई दिलचस्प

(मेड से) लड़की, फिलहाल तो तुम्हें इतने से ही सब्र करना पड़ेगा। (रीजन उसे अपना कार्ड निकालकर देता है।) तुम्हारा नाम क्या है?

मेड : मिनी टिनवेल, जनाब।

सर पैट्रिक : अच्छा तो तुम इन हजरत की मार्फत उसको एक खत लिखो। वह खत उस तक पहुंचा दिया जाएगा। बस अब तुम भाग जाओ।

मेड : शुक्रिया जनाब। मुझे यकीन है कि आप लोग मेरे साथ कैसा भी बदसलूक नही होने देगे। जनाब, आप सबका बहुत-बहुत शुक्रिया। मैंने आपसे बाते करने की जो आजादी ली, उसके लिए मुझे माफ फरमाएं।

[वह होटल मे चली जाती है। सब लोग खामोशी से उसकी ओर देखते हैं।]

रीजन : (उसके चले जाने के बाद) क्या आप लोगों को इस बात का ऐहसास है कि हम मिसेज डूबेडाट से वायदा कर चुके है कि हम इस नौजवान की जिन्दगी बचाएंगे।

ब्लेंकिसोप : उसे हुआ क्या है?

रीजन : तपेदिक।

ब्लेंकिसोप : (उत्सुकतापूर्वक) और क्या तुम इस मर्ज को अच्छा कर सकते हो?

रीजन : यकीनन।

ब्लेंकिसोप : तब तो मेरी भी ख्वाहिश होती है कि काश तुम मुझे भी अच्छा कर देते। बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि मेरा बायां फेफड़ा गल चुका है।

रीजन, बी. बी. (सब एक साथ) : क्या कहा ! तुम्हारा फेफड़ा जा रहा है ! मेरे अजीज, ब्लेंकिसोप, कैसी हौलनाक बात कह रहे हो तुम ? (ब्लेंकिसोप के प्रति चिन्ता से उद्विग्न होकर जंगले से लौट आता है।)

सर पैट्रिक, वाल्पोल (सब एक साथ) : अरे ! अरे ! क्या बात है ? सुनो ! इस बारे मे कतई लापरवाही मत बरतो, समझे ?

ब्लेंकिसोप : (कानों मे उगलियां रखते हुए) नही, नही; इन बातों से कोई फायदा नहीं । मुझे मालूम है कि तुम मुझे अब क्या-क्या करने का मशवरा दोगे । मै दूसरों को अक्सर ये बाते बताया करता हू । दरअसल अपनी देखभाल करने का खर्च उठाने की हैसियत मेरी नही है, इसलिए यह बात यही खत्म हुई । अगर पन्द्रह दिन की छुट्टी लेने से ही मेरी जिन्दगी बच सकती है तो मुझे मरना पड़ेगा । मुझे भी औरों की ही तरह, जैसे-तैसे ज़िन्दगी का बोझ ढोते जाना होगा । हम सब सेन्ट मोरित्स या मिस्र नही जा सकते, यह आप भी जानते है, सर रैल्फ । इस-लिए इसकी चर्चा न करे ।

[संकोचपूर्ण खामोशी]

सर पैट्रिक : (गुर्राते हुए कठोर मुद्रा में रीजन की ओर देखते हैं।)

शुत्जमेकर : (अपनी घडी देखकर उठते हुए) मुझे अब चलना चाहिए । आज की शाम बड़ी खुशगवार रही, कौली । अगर तुम्हे एतराज न हो तो मेरी पोर्ट्रेट मुझे दे दो । मै मिस्टर डूबेडाट को इसके लिए वे दो गिन्निया भेज दूगा, जो उन्होंने मांगी थी ।

रीजन : (उसे मीनू-कार्ड देते हुए) ओह, ऐसा हर्गिज मत करना, लूनी ।

था। उसने यह भी कहा कि उसकी बीवी मेरी काबलियत से बहुत मुतअस्सर हुई है, और यह कि उसे यहूदी हमेशा पसन्द आते है। फिर उसने उन खाकों की जमानत पर मुझसे पचास पौड पेशगी मागे।

बी. बी. }
वालपोल }
ब्लैंकिसोप } (सब एक साथ चिल्लाते हुए) { नही, नहीं !क्या सचमुच !ठंडे दिल से ! क्या ! पचास और ! जरा ख्याल तो करो ! (गुर्राने जैसी आवाज़ करते हैं।)
सर पैट्रिक }

शुल्ज़मेकर : यकीनन मै एक अजनबी को इस तरह कर्ज़ नहीं दे सकता था।

बी. बी. : मै तुम्हारे 'ना' कहने के हौसले की दाद देता हूं, मिस्टर शुल्जमेकर। दरअसल मै भी जानता था कि मुझे एक नौजवान को इस तरह कर्ज नही देना चाहिए। लेकिन उसे इन्कार करने की मुझे हिम्मत ही नही हुई। मै इन्कार कर भी नही सकता था, तुम तो जानते ही हो, क्या मै कर सकता था?

शुल्ज़मेकर : मेरी समझ में यह बात नही आती। मुझे लगा कि मै उसे कर्ज हर्गिज नही दे सकता था।

वालपोल : उसने फिर क्या कहा?

शुल्ज़मेकर : यूं ही, उसने उड़ती हुई फब्ती कसी और किसी यहूदी का हवाला दिया जो एक शरीफ आदमी के जजबात को समझ नही सकता था। खैर जनाब, मुझे कहना ही पड़ता है कि आप शरीफ लोगों को दरअसल खुश करना वहुत मुश्किल काम है। अगर हम लोग कर्ज दे देते है तो आप लोग कहते है कि हम यहूदियों मे शराफत नही है और अगर कर्ज नही देते तब भी

आप यही बात कहते है। मेरा इरादा उसके साथ बुरा सलूक करने का हर्गिज नहीं था, बल्कि मैने उससे कह भी दिया कि अगर वह यहूदी होता तो मै यह रकम उसे जरूर दे देता।

सर पैट्रिक : (गुर्राने जैसी आवाज़ करके) और इसपर उसने क्या कहा?

शुल्ज़मेकर : ओह, इसपर वह मुझे इत्मीनान दिलाने लगा कि वह भी खुदा की चुनी हुई कौम का ही फर्द है—उसके आर्ट से यह साफ जाहिर था, और उसका नाम भी उतना ही बिदेसी था, जितना कि मेरा है। फिर वह बोला कि उसे पचास पौण्ड नही चाहिए, वह तो सिर्फ मजाक कर रहा था। दरअसल उसे सिर्फ दो गिन्नियों की ही जरूरत थी।

बी. बी. : हर्गिज नही, हर्गिज नही, मिस्टर शुल्जमेकर। यह आखिरी बात आपने अपने मन से गढ़ दी है। सच बताइए, उसने क्या कहा?

शुल्ज़मेकर : जी नही, मिस्टर डूबेडाट जैसे लोगों को फितरत के बारे में नमक-मिर्च लगाकर कहानियां गढ़ने की जरूरत नही होती।

ब्लेंकिसोप : फिर भी आप दोनों वक्त पड़ने पर एक दूसरे की मदद तो करेंगे ही—मेरा मतलब है आप लोग जो खुदा की चुनी हुई कौम के है। ठीक है न मिस्टर शुल्जमेकर।

शुल्ज़मेकर : कतई नही। जाती तौर पर मुझे यहूदियों से अंग्रेज ज़्यादा पसन्द है और मै ज़्यादातर उनसे ही मेल-जोल रखता हूं। यह बिल्कुल कुदरती बात है, क्योंकि खुद यहूदी होने की वजह से मेरे लिए एक यहूदी मे कोई खास दिलचस्पी की चीज नही है, जबकि एक अंग्रेज़ में हमेशा ही कोई न कोई दिलचस्प

और बिदेसी चीज होती है। अलबत्ता रुपये-पैसे के मामले मे यह बात लागू नही होती। यों समझिए कि जब कोई अंग्रेज उधार मांगता है, तो उसे सिर्फ इस बात की ही फिक्र और खाहिश होती है कि उसे किसी तरह चाही हुई रकम मिल जाए। उस वक्त वह, बिना देखे-समझे किसी भी इकरारनामे पर दस्तखत कर देता है, हालांकि अपने काम मे नुकसान होने पर इकरारनामे की शर्तों के मुताबिक उस रकम को लौटाने का उसका कतई इरादा नही होता। दरअसल वह सोचता है कि ऐसी हालत मे भी अगर आप अपनी रकम वापस चाहते है तो आप निहायत कमीने और ओछे आदमी हैं। बिल्कुल वेनिस के सौदागर की तरह, आप तो जानते ही है। लेकिन कोई यहूदी अगर इकरारनामे पर दस्तखत करता है तो समझ लीजिए कि वह उसके मुताबिक चलना चाहता है और चाहता है कि आप भी उसपर आमादा रहें। उसे अगर कुछ वक्त के लिए ही पैसा चाहिए, तो वह उधार मांग लेता है और जानता है कि वक्त की मियाद पूरी होने पर उसे वह रकम हर सूरत मे लौटा देनी है। अगर उसे मालूम है कि वह अदा नही कर सकता तो वह कर्ज नही बल्कि खैरात मांगता है।

रीजन : जाने भी दो, लूनी। क्या तुम्हारा मतलब है कि यहूदियों मे चोर और बदमाश होते ही नही ?

शुल्जमेकर : ओह, हर्गिज नहीं। लेकिन मै जरायम पेशा लोगों की बात नही कर रहा। मै तो सिर्फ ईमानदार अंग्रेजों से ईमानदार यहूदियों का मुकाबला कर रहा था। (होटल की एक सुनहरे बालों वाली, सुन्दर, लगभग पचीस वर्ष की मेड किंचित् चोरी के भाव से

होटल की ओर से आती है। वह रीजन के पास पहुंचती है।)

मेड : माफ कीजिएगा, जनाब—

रीजन : क्या है ?

मेड : माफ कीजिएगा, जनाब। होटल से इस बात का कोई ताल्लुक नही है। मुझे बाल्कनी पर आने की इजाजत नही। और अगर मै आपसे बात करते हुए देख ली गई तो मुझे बरखास्त कर दिया जाएगा—जब तक आप मेहरबानी करके यह न कह दें कि आपने मुझे यह पूछने के लिए बुलाया था कि आपकी मोटर स्टेशन से वापस आ गई या नही।

वालपोल : क्या आ गई ?

मेड : जी हां।

रीजन : अच्छा तो तुम चाहती क्या हो ?

मेड : उस शरीफ आदमी का पता मुझे बताने मे आपको कोई एतराज तो नहीं होगा, जनाब ?

रीजन : (सख्ती से) हां जरूर, मुझे सख्त एतराज है। तुम्हे यह पूछने का कोई हक नही।

मेड : जी हां, जनाब, मै जानती हूं कि देखने में यही लगता है कि मुझे पूछने का कोई हक नही है। लेकिन मै फिर क्या करूं ?

सर पैट्रिक : तुम्हें क्या हुआ है ?

मेड : कुछ नही जनाब। मै सिर्फ पता चाहती हूं।

बी. बी. : तुम्हारा मतलब उस नौजवान से है ?

मेड : जी हां, वही जो उस औरत के साथ, जिसे वह अपने साथ लाया था, ट्रेन पकड़ने के लिए मोटर में गया है।

रीजन : औरत ! तुम्हारा मतलब उस लेडी से है जिसने हम लोगों के

(मेड से) लड़की, फिलहाल तो तुम्हें इतने से ही सब्र करना पड़ेगा। (रीजन उसे अपना कार्ड निकालकर देता है।) तुम्हारा नाम क्या है ?

मेड : मिनी टिनवेल, जनाब।

सर पैट्रिक : अच्छा तो तुम इन हजरत की मार्फत उसको एक खत लिखो। वह खत उस तक पहुंचा दिया जाएगा। बस अब तुम भाग जाओ।

मेड : शुक्रिया जनाब। मुझे यकीन है कि आप लोग मेरे साथ कैसा भी बदसलूक नही होने देंगे। जनाब, आप सबका बहुत-बहुत शुक्रिया। मैंने आपसे बातें करने की जो आजादी ली, उसके लिए मुझे माफ फरमाएं।

[वह होटल में चली जाती है। सब लोग खामोशी से उसकी ओर देखते हैं।]

रीजन : (उसके चले जाने के बाद) क्या आप लोगों को इस बात का ऐहसास है कि हम मिसेज़ डूबेडाट से वायदा कर चुके है कि हम इस नौजवान की जिन्दगी बचाएगे।

ब्लेंकिसोप : उसे हुआ क्या है ?

रीजन : तपेदिक।

ब्लेंकिसोप : (उत्सुकतापूर्वक) और क्या तुम इस मर्ज को अच्छा कर सकते हो ?

रीजन : यकीनन।

ब्लेंकिसोप : तब तो मेरी भी ख्वाहिश होती है कि काश तुम मुझे भी अच्छा कर देते। बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि मेरा बायां फेफड़ा गल चुका है।

रीजन
बी. बी. (सब एक साथ) : क्या कहा ! तुम्हारा फेफड़ा जा रहा है ! मेरे अजीज, ब्लेंकिसोप, कैसी हौलनाक बात कह रहे हो तुम ? (ब्लेंकिसोप के प्रति चिन्ता से उद्विग्न होकर जंगले से लौट आता है।)

सर पैट्रिक
वालपोल (सब एक साथ) : अरे ! अरे ! क्या बात है ? सुनो ! इस बारे में कतई लापरवाही मत बरतो, समझे ?

ब्लेंकिसोप : (कानो मे उंगलियां रखते हुए) नहीं, नही; इन बातों से कोई फायदा नही । मुझे मालूम है कि तुम मुझे अब क्या-क्या करने का मशवरा दोगे । मै दूसरों को अक्सर ये बातें बताया करता हूं । दरअसल अपनी देखभाल करने का खर्च उठाने की हैसियत मेरी नही है, इसलिए यह बात यही खत्म हुई । अगर पन्द्रह दिन की छुट्टी लेने से ही मेरी जिन्दगी बच सकती है तो मुझे मरना पड़ेगा । मुझे भी औरों की ही तरह, जैसे-तैसे ज़िन्दगी का वोझ ढोते जाना होगा । हम सब सेन्ट मोरित्स या मिस्र नही जा सकते, यह आप भी जानते है, सर रैल्फ । इस-लिए इसकी चर्चा न करे ।

[सकोचपूर्ण खामोशी]

सर पैट्रिक : (गुर्राते हुए कठोर मुद्रा मे रीजन की ओर देखते है।)

शुल्जमेकर : (अपनी घड़ी देखकर उठते हुए) मुझे अब चलना चाहिए । आज की शाम बड़ी खुशगवार रही, कौली । अगर तुम्हें एतराज न हो तो मेरी पोर्ट्रेट मुझे दे दो । मै मिस्टर डूबेडाट को इसके लिए वे दो गिन्नियां भेज दूगा, जो उन्होंने मागी थी ।

रीजन : (उसे मीनू-कार्ड देते हुए) ओह, ऐसा हर्गिज़ मत करना, लूनी ।

साथ डिनर खाया था—यानी जो उस शरीफ नौजवान की वीवी है ?

मेड : उनकी वातों पर एतवार न कीजिए, जनाव। वह उसकी वीवी हो ही नही सकती। उसकी वीवी तो मै हूं।

बी. बी : } (हैरत भरे प्रतिवाद के स्वर में) होश करो, नेक वच्ची !
रीजन : } उसकी वीवी, तुम !
वालपोल : } क्या ! क्या कहा ! ओह यह तो एक दिल फरेव दास्तान वनती जा रही है, रीजन !

मेड : जनाव, अगर आपको शक हो तो मैं ऊपर जाकर एक मिनट मे अपनी शादी का कार्ड ला सकती हूं। उसका नाम मिस्टर लुई डूबेडाट है, है न ?

रीजन : हां।

मेड : लेकिन, जनाव, आप यकीन करें या न करें लेकिन कानूनी तौर पर तो मै ही मिसेज डूवेडाट हूं।

सर पैट्रिक : तो तुम अपने खाविन्द के साथ क्यों नही रहती ?

मेड : हमारे इखराजात पूरे नहीं होते थे, जनाव। मैंने तीस पौण्ड वचाकर रखे थे। वह तीस पौण्ड और वहुत-सी रकम जो उसने कर्ज ली थी हमने हनीमून के तीन हफ्तों मे ही खर्च कर दी। इसके वाद मुझे फिर अपनी नौकरी पर जाना पड़ा और वह तस्वीरें वनाने के लिए लन्दन चला गया। तव से उसने मुझे एक लाइन भी नहीं लिखी, न अपना पता ही भेजा। मैने भी इस वीच न उसे देखा न उसके वारे मे कहीं सुना ही। आज अचानक जव वह उस औरत के साथ मोटर में सवार हो रहा था कि मुझे खिड़की में से उसकी एक झलक दिखाई दे गई।

सर पैट्रिक : तो इस किस्से की शुरुआत दो बीवियों से होती है !

बी. बी. : देखिए, मै अपनी कसम खाकर कह सकता हूं कि मै तंग-दिली का इजहार नही करना चाहता, लेकिन मुझे अब शक होने लगा है कि हमारा यह नौजवान दोस्त बेहद लापरवाह आदमी है।

सर पैट्रिक : अब शक होने लगा है ! भले आदमी, तुम यह पता करने मे कि वह बदजात छोकरा एक छटा हुआ बदमाश है, अभी और कितना वक्त लोगे ?

ब्लेंकिसोप : ओह, ये बहुत सख्त अलफ़ाज़ है, सर पैट्रिक, बहुत सख्त अल्फाज़ । इसमे शक नही कि यह पॉलीगैमी का केस है, लेकिन वह अभी नादान छोकरा है और वह बला की खूबसूरत लड़की है। मिस्टर वालपोल, क्या मै आपकी बढ़िया सिगरेटो में से एक और ले सकता हूं ? (वह अपनी जगह से उठकर वालपोल की बगल मे जा बैठता है ।)

वालपोल : शौक से । (अपनी जेब टटोलता है।) ओह, क्या मुसीबत है ! आखिर कहां ?—(एकाएक याद आते ही) मैने कहा : हां, अब याद आया । मैने अपना सिगरेट-केस डूबेडाट् की ओर बढाया था और उसने वह फिर वापस नही किया । निरे सोने का था ।

मेड : आपको नुकसान पहुंचाने का इरादा उसका नही हो सकता । जनाब, वह ऐसी चीजों की ओर कभी तवज्जह नही देता । अगर आप मुझे उसका पता दे तो मै, जनाब, आपका सिगरेट-केस लाकर वापस कर दूंगी ।

रीजन : बोलिए मै क्या करूं ? इसको पता बता दूं या नहीं ?

सर पैट्रिक : इसे अपना पता दे दो; फिर बाद में देखा जाएगा ।

(मेड से) लड़की, फिलहाल तो तुम्हें इतने से ही सब्र करना पड़ेगा। (रीजन उसे अपना कार्ड निकालकर देता है।) तुम्हारा नाम क्या है ?

मेड : मिनी टिनवेल, जनाब।

सर पैट्रिक : अच्छा तो तुम इन हजरत की मार्फत उसको एक खत लिखो। वह खत उस तक पहुंचा दिया जाएगा। बस अब तुम भाग जाओ।

मेड : शुक्रिया जनाब। मुझे यकीन है कि आप लोग मेरे साथ कैसा भी बदसलूक नही होने देंगे। जनाब, आप सबका बहुत-बहुत शुक्रिया। मैंने आपसे बातें करने की जो आजादी ली, उसके लिए मुझे माफ फरमाएं।

[वह होटल में चली जाती है। सब लोग खामोशी से उसकी ओर देखते हैं।]

रीजन : (उसके चले जाने के बाद) क्या आप लोगों को इस बात का ऐहसास है कि हम मिसेज डूबेडाट से वायदा कर चुके है कि हम इस नौजवान की जिन्दगी बचाएंगे।

ब्लेंकिसोप : उसे हुआ क्या है ?

रीजन : तपेदिक।

ब्लेंकिसोप : (उत्सुकतापूर्वक) और क्या तुम इस मर्ज को अच्छा कर सकते हो ?

रीजन : यकीनन।

ब्लेंकिसोप : तब तो मेरी भी ख्वाहिश होती है कि काश तुम मुझे भी अच्छा कर देते। बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि मेरा बायां फेफड़ा गल चुका है।

रीजन
बी. बी. } (सब एक साथ) { क्या कहा ! तुम्हारा फेफड़ा जा रहा है ! मेरे अजीज, ब्लेकिसोप, कैसी हौलनाक बात कह रहे हो तुम ? (ब्लेकिसोप के प्रति चिन्ता से उद्विग्न होकर जगले से लौट आता है।)

सर पैट्रिक
वालपोल } (सब एक साथ) { अरे ! अरे ! क्या बात है ? सुनो ! इस बारे में कतई लापरवाही मत बरतो, समझे ?

ब्लेंकिसोप : (कानों मे उंगलियां रखते हुए) नही, नहीं; इन बातों से कोई फायदा नहीं । मुझे मालूम है कि तुम मुझे अब क्या-क्या करने का मशवरा दोगे । मै दूसरों को अक्सर ये बाते बताया करता हूं । दरअसल अपनी देखभाल करने का खर्च उठाने की हैसियत मेरी नही है, इसलिए यह बात यही खत्म हुई । अगर पन्द्रह दिन की छुट्टी लेने से ही मेरी जिन्दगी बच सकती है तो मुझे मरना पड़ेगा । मुझे भी औरों की ही तरह, जैसे-तैसे जिन्दगी का बोझ ढोते जाना होगा । हम सब सेन्ट मोरित्स या मिस्र नहीं जा सकते, यह आप भी जानते है, सर रैल्फ । इसलिए इसकी चर्चा न करें ।

[सकोचपूर्ण खामोशी]

सर पैट्रिक : (गुर्राते हुए कठोर मुद्रा मे रीजन की ओर देखते हैं।)

शुल्जमेकर : (अपनी घडी देखकर उठते हुए) मुझे अब चलना चाहिए । आज की शाम बड़ी खुशगवार रही, कौली । अगर तुम्हें एतराज न हो तो मेरी पोर्ट्रेट मुझे दे दो । मैं मिस्टर डूबेडाट को इसके लिए वे दो गिन्नियां भेज दूंगा, जो उन्होने मांगी थी ।

रीजन : (उसे मीनू-कार्ड देते हुए) ओह, ऐसा हर्गिज मत करना, लूनी ।

मेरा तो ख्याल नही कि उसे यह बात पसंद आएगी ।

शुत्जमेकर : अच्छा अगर तुम्हारा यह ख्याल है तो नहीं भेजूंगा । लेकिन मेरा ख्याल यह है कि तुम अभी डूबेडाट को समझ नही पाए हो । खैर यह शायद इसलिए है कि मैं एक यहूदी हूं । गुडनाइट, डाक्टर ब्लेंकिसोप (हाथ मिलाता है ।)

ब्लेंकिसोप : गुडनाइट सर—मेरा मतलब है, गुडनाइट ।

शुत्जमेकर : (सबको हाथ हिलाकर) आप सबको गुडनाइट ।

वालपोल
बी. बी.
सर पैट्रिक
रीजन } गुडनाइट ।

[बी. बी. इस अभिवादन को कई प्रकार के संगीतमय स्वरो में वार-वार दुहराता है ।]

सर पैट्रिक : हम सबके जाने का वक्त भी हो गया । (वे उठकर ब्लेंकिसोप और वालपोल के बीच में पहुंचते हैं । रीजन भी उठ खड़ा होता है ।) मिस्टर वालपोल, ब्लेंकिसोप को घर पहुंचा दो ! आज रात इन्हे खुली हवा का इलाज ज़रूरत से ज्यादा मिकदार मे मिल गया है । मोटर मे पहनने के लिए तुम्हारे पास मोटा ओवरकोट है न, डाक्टर ब्लेंकिसोप ?

ब्लेंकिसोप : ओ, मैं होटल से कुछ खाकी कागज ले लूगा । छाती पर खाकी कागज की तहे जमा लेने से पोस्तीन के कोट से भी ज़्यादा गर्मी रहती है ।

वालपोल : अच्छा तो चलिए । गुडनाइट कौली । आप भी हमारे साथ आ रहे है न बी. बी. ?

बी. बी. : हां, मै आ रहा हूं। (वालपोल और ब्लेंकिसोप होटल जाते हैं।) गुडनाइट, मेरे अज़ीज़ रीजन । (स्नेहपूर्वक हाथ मिलाता है।) अपने दिलचस्प मरीज और उसकी हसीन बीवी को हमारी आखों से ओझल मत कर देना । इस नौजवान के बारे में हमें जल्दी से कोई राय कायम नही कर लेनी चाहिए, समझे । (स्निग्ध स्वर मे) गू-ऊ-ऊ-ऊ-ड नाइट, पैडी । खुदा तुम्हारा भला करे, अजीज दोस्त । (सर पैट्रिक ज़ोर से गुर्राने की आवाज़ करते हैं । बी. बी. हसकर प्यार से उनके कधे थपथपाते हैं।) गुडनाइट ! गुडनाइट ! गुडनाइट ! गुडनाइट ! (गुडनाइट करते हुए होटल मे दाखिल होते हैं।)

[इस बीच और लोग बिना तकल्लुफ बरते चले गए हैं। सिर्फ रीजन और सर पैट्रिक ही अकेले रह जाते हैं । रीजन गहरे विचारो में डूबा हुआ सर पैट्रिक के पास आता है ।]

सर पैट्रिक : अच्छा, मिस्टर जिन्दगी के मुहाफिज़ ! अब किसको चुनना है ? उस ईमानदार, नेक आदमी ब्लेंकिसोप को या उस बदकार और बदमाश को जो अपने को आर्टिस्ट कहता है ?

रीजन : यह फैसला करना इतना आसान नही है, है न ? ब्लेंकिसोप ईमानदार और नेक आदमी ज़रूर है; लेकिन क्या उसकी जिन्दगी का कोई फायदा है ? डूबेडाट सचमुच एक बदकार और बदमाश है; लेकिन वह बहुत-सी खूबसूरत, दिलकश और बढ़िया चीजों का खालिक है ।

सर पैट्रिक : और जब उसकी वह गरीब और मासूम बीवी उसको ढूढ़ निकालेगी, उस वक्त वह उसके लिए किस चीज का खालिक बनेगा ?

रीजन : यह तो ठीक है। उसकी ज़िन्दगी दोजख बन जाएगी ।

सर पैट्रिक : और जरा मुझे यह भी बताओ। मान लो कि तुम्हें इन दो चीजों मे से एक को चुनने के लिए कहा जाए कि या तो तुम ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारो जिसमें सभी तस्वीरें मामूली और रद्दी होंगी, लेकिन सभी औरत-मर्द नेक और भले होंगे, या फिर ऐसी जिन्दगी गुजारो जिसमें तस्वीरें तो सभी ऊंचे दर्जे की होंगी, लेकिन सभी औरत-मर्द बदकार और बदमाश होंगे। बोलो, इन दोनों में से तुम कौन-सी जिन्दगी चुनोगे ?

रीजन : यह बहुत मुश्किल सवाल है पैडी। अच्छी तस्वीरें इतनी दिलफरेब होती है और अच्छे लोग इतने दिल-खराश और मक्कार होते है कि मैं यकबयक यह नहीं बता सकता कि मै इनमे से किसके बगैर जिन्दगी गुजारना पसन्द करूंगा।

सर पैट्रिक : बस जाने भी दो ! मेरे साथ अपनी चालाकियां मत खेलो, मैने बहुत दुनिया देखी है। ब्लेकिसोप उस तरह का नेक आदमी नही है, और यह तुम बखूबी जानते हो।

रीजन : ब्लेकिसोप अगर डूबेडाट की तस्वीरों को पेन्ट कर सकता तो फैसला करना बहुत आसान हो जाता।

सर पैट्रिक : यह और भी आसान होता अगर डूबेडाट मे ब्लेंकिसोप की ईमानदारी का सौवां हिस्सा भी होता। लेकिन मेरे बरखुरदार, दुनिया अब तुम्हारी आसानी का लिहाज करके नही बनाई जाएगी। दुनिया जैसी है वैसी ही कबूल करनी पड़ेगी। तुम्हें ब्लेंकिसोप और डूबेडाट को एक ही तराजू में तोलना है। उम्मीद है कि तुम दयानतदारी से डंडी पकड़ोगे।

रीजन : अच्छा, मै भरसक दयानतदारी से काम लूंगा। तराजू के एक पल्ले मे मै उन सारे पौडों को रखूंगा जो डूबेडाट ने कर्ज़

के नाम पर वसूल किए है, और दूसरे पल्ले में उन सारे आधे क्राउन्स को रखूंगा, जो ब्लेकिसोप ने उधार नही लिए।

सर पैट्रिक : और तुम डूबेडाट के पलड़े में से उस एतबार को जो उसने बर्बाद किया है और उस सारी इज़्ज़त को जो उसने खो दी है, निकाल लोगे और ब्लेकिंसोप के पलड़े मे उस एतबार को जो उसने सही साबित किया है और उस इज्जत को जो उसने दिलों में पैदा की है, रख दोगे।

रीजन : बस, छोड़ो भी पैडी ! मुझे आपकी इन चापलूसियों की जरूरत नही है। मै इतनी आसानी से बातों पर यकीन नहीं करता। मुझे अभी भी इस बात पर एतबार नही हुआ कि अगर सभी लोग डूबेडाट की तरह बर्ताव करने लगे तो यह दुनिया आज के मुकाबले मे, जब कि हर आदमी ब्लेकिसोप की तरह बर्ताव करता है, ज़्यादा अच्छी नही हो जाएगी।

सर पैट्रिक : तब फिर तुम क्यों नहीं डूबेडाट की तरह बर्ताव करते ?

रीजन : आह, अब मान गया। यह तो तजुर्बा करके देखने की बात हुई। फिर भी यह उलझन मे डालनेवाली बात है। देखिए न, इसमे एक पेचीदगी पैदा हो गई है, जिसकी ओर हमने गौर नही किया।

सर पैट्रिक : वह क्या है ?

रीजन : तो सुनिए, अगर मै ब्लेकिंसोप को मर जाने दूं तो कम से कम कोई यह तो नही कह सकता कि मै उसकी बेवा से शादी करना चाहता था।

सर पैट्रिक : एह !, इससे क्या हुआ ?

रीजन : यह कि अगर मै डूबेडाट को मरने दू तो मै उसकी बेवा से

शादी कर लूगा ।

सर पैट्रिक : शायद वह तुम्हें कबूल नही करेगी, यह तुम खुद भी जानते हो ।

रीजन : (आत्म-विश्वास पूर्ण ढग से सिर हिलाकर) मुझे इस तरह रसाई पैदा करने का गुर आता है । जब कोई औरत मेरे अन्दर दिलचस्पी लेने लग जाती है तब मुझे पता चल जाता है । उसे मेरे अन्दर दिलचस्पी हो गई है ।

सर पैट्रिक : खैर, कभी आदमी ठीक भांप लेता है, और कभी उसका कयास गलत साबित होता है । इसलिए अच्छा हो कि तुम दोनों को ही अच्छा कर दो ।

रीजन : नही, मै यह नही कर सकता । मै अपनी हद तक पहुंच गया हूं । अब मै सिर्फ एक मरीज को ही ले सकता हूं, दो को नही । मुझे उनमें से चुनना ही पड़ेगा ।

सर पैट्रिक : अच्छा तो फिर यह सोचकर चुनाव करो, मानो उस लड़की का वजूद हो ही न । यह साफ समझ लो ।

रीजन : क्या यह बात आपके दिमाग में साफ है ? मेरे दिमाग मे तो नही है । वह मेरे फैसले के बीच हायल हो जाती है ।

सर पैट्रिक : मेरे दिमाग मे तो यह बात बिल्कुल साफ है कि तुम्हें एक इन्सान और बहुत-सी तस्वीरों मे से किसीको चुनना है ।

रीजन : एक मुर्दा इन्सान की जगह तो पुर की जा सकती है, लेकिन एक बढ़िया तस्वीर की नहीं ।

सर पैट्रिक : कौली, जब तुम ऐसे जमाने में रहते हो, जो तस्वीरों, बुतों, ड्रामों और बैण्ड-बाजों के पीछे पागल घूमता है, क्योंकि उसके मर्द और औरतें ऐसी नहीं है जो उसकी गरीब, दर्दभरी रूह को

राहत और सकून दे सकें, तब तो तुम्हें और भी अपनी किस्मत को सराहना चाहिए कि तुम ऐसे ऊंचे और महान पेशे में हो, जिसने मर्द और औरत, सभी इन्सानों को राहत और आराम पहुंचाने का बीड़ा उठा रखा है।

रीजन : यानी आपके कहने का मतलब यह है कि इस ऊंचे और महान पेशे का मेम्बर होने के नाते मुझे अपने मरीज को मार डालना चाहिए।

सर पैट्रिक : मक्कारी से भरी बकवास मत करो। तुम उसे मार नही सकोगे। लेकिन तुम उसे किसी और डाक्टर के हाथों में जरूर दे सकते हो।

रीजन : बी. बी. के हाथों में, मिसाल के लिए, क्यों ? (उनकी ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए)

सर पैट्रिक : (अनिच्छापूर्वक उसकी दृष्टि का सामना करते हुए) सर रैल्फ ब्लूमफील्ड बौनिंगटन बहुत बड़े और मशहूर फिजीशियन हैं।

रीजन : सो तो हैं।

सर पैट्रिक : मै अपना हैट लेने जा रहा हूं।

[सर पैट्रिक जैसे ही होटल की ओर बढ़ते है, रीजन घन्टी बजाता है। एक वेटर आता है।]

रीजन : (वेटर से) प्लीज, मेरा बिल ले आओ।

वेटर : यस सर।

[वह बिल लेने के लिए चला जाता है।]

तीसरा अंक

[डूबेडाट के स्टूडियो वड़ी खिड़की मे से देखने पर बाहर जाने का दरवाज़ा वाईं ओर की दीवार मे निकट ही नजर आता है। भीतर के कमरे मे जाने वाला दरवाजा उसके सामने वाली दीवार में दूर के कोने में स्थित है। सामने पड़ने वाली दीवार मे न कोई दरवाज़ा है, न खिड़की। दीवारों के पलस्तर पर कागज़ नही मढा गया, वल्कि किसी अन्य प्रकार की सजावट भी नही है। सिर्फ कही-कही कोयले से खींचे हुए स्केच हैं या स्मृति-चिन्ह हैं। वाईं ओर की दीवार से सटकर अन्दर जाने वाले दरवाज़े के ठीक सामने, एक स्टूडियो-सिंहासन (एक प्लेटफार्म और उसपर रखी कुर्सी) है, और उसके दाहिनी ओर कुछ हटकर, वाहर जाने के दरवाज़े के सामने एक ईजल रखा है, जिसके पास एक पुरानी जीर्ण कुरसी पड़ी है। ईज़ल के पास दाहिनी ओर की दीवार से सटाकर लकड़ी की एक नंगी मेज़ रखी है, जिसपर तेल और चित्रकारी के अन्य उपकरणो की वोतलें और मर्तवान रखे है और रंग-सने हुए चीथड़े, रंगो के ट्यूव, व्रश, कोयला, एक छोटी-सी लेटी हुई मूर्ति, केतली और स्पिरिट-लैम्प और दूसरी छोटी-मोटी चीज़ें पड़ी है। मेज़ से लगा हुआ एक सोफा है, जिसपर ड्राइंग-ब्लाक्स, स्केच-वुक्स, कागजों के पन्ने, अखवार, किताबें और रंगो मे सने और भी चिथड़े विखरे पड़े हैं। वाहर जाने वाले दरवाज़े की वगल में छाता और हैट टांगने का एक स्टैण्ड रखा है, जिसपर अधिकतर तो लुई के हैट और लवादा और मफलर और वाकी कुछ दूसरे छोटे-मोटे कपड़े टगे हैं। इस दरवाज़े के नज़दीक आगे की ओर एक पुराना प्यानो-स्टूल रखा है। अन्दर जाने वाले दरवाज़े के पास दाहिने कोने मे एक तिपाई रखी है, जिस-

पर कार्डिनल की पोशाक और हैट पहने एक मूर्ति खड़ी है, जिसके एक हाथ मे रेत-घड़ी और दूसरे हाथ में एक हंसिया है, जिसे उसने पीठ पर लटका रखा है। यह मूर्ति विद्वेषपूर्ण मुद्रा मे लुई की ओर देखकर मुस्करा रही है। लुई इस समय एक स्मॉक पहने, जिसपर रग के धब्बे लगे हैं, ब्रोकेड (ज़री के काम का कपड़ा) पर चित्रकारी कर रहा है, जिसे उसकी पत्नी ने ओढ रखा है। वह स्टूडियो-सिंहासन पर बैठी है। उसे चित्रकारी में कतई दिलचस्पी नही है और वह अपनी आंखो से किसी और बात के बारे मे आग्रह कर रही है।]

मिसेज़ डूबेडाट : वायदा करो।

लुई : (बडी कुशलता और सावधानी से रग भरता हुआ, बेलाग भाव से उत्तर देता है।) मै वायदा करता हू, डार्लिग।

मिसेज़ डूबेडाट : तुम्हे जब भी पैसों की जरूरत पड़े, तब सिर्फ मुझसे ही मांगोगे।

लुई : लेकिन यह बड़ी जलील बात है, माई डियर, मुझे तो पैसों से सख्त नफरत है। मै तुम्हें हर वक्त पैसों के लिए तंग नही करना चाहता—हर वक्त पैसा, पैसा, पैसा ! इसीलिए तो मै कभी-कभी और लोगों से मांगने के लिए मजबूर हो जाता हू, हालांकि ऐसा करने से भी मुझे नफरत है।

मिसेज़ डूबेडाट : फिर भी मुझसे मांगना कही ज्यादा अच्छा है, डियर। इससे दूसरो को तुम्हारे बारे मे गलतफहमी हो जाती है।

लुई : लेकिन मै तुम्हारी छोटी-सी दौलत को बर्बाद नही करना चाहता, बल्कि चाहता हूं कि अपने काम से ही पैसा जमा करूं। मन को दु:खी मत करो, मेरी महबूब; मैं कर्ज की सारी रकम को चुकाने के लिए काफी कमा सकता हूं। अगले मौसम मे मै अपनी तस्वीरों की सोलो नुमायश करूंगा, फिर पैसों की तंगी

नही रहेगी (रंग मिलाने का तख्ता रखता हुआ) यह लो ! जब तक यह कपड़ा सूख न जाए तब तक इसमें और रंग नही भरने चाहिएं । लिहाजा तुम नीचे आ सकती हो ।

मिसेज़ डूबेडाट : (ब्रोकेड को कंधे से फेंककर कुर्सी से उतरती हुई । वह टसर रेशम का सादा फ्रॉक पहने है ।) लेकिन याद रखो कि तुमने ईमानदारी और संजीदगी से यह वायदा किया है कि आगे से तुम पहले मुझसे पूछे बगैर कभी किसीसे कर्ज़ नही मागोगे ।

लुई : बिल्कुल ईमानदारी और संजीदगी से । (उसको आलिंगन में लेते हुए) आह, मेरी प्यारी, तुम कितनी सही बात कहती हो ! मुझे आसमान में जरूरत से ज्यादा परवाज करने से रोकने के लिए तुम्हारा मेरे साथ रहना कितना जरूरी है ! तहेदिल से कसम खाकर वायदा करता हूं कि मै आज से कभी किसीसे एक पेनी भी कर्ज नहीं लूगा ।

मिसेज़ डूबेडाट : (प्रसन्नता से खिलकर) आह, अब ठीक । क्या तुम्हारी नटखट और परेशान करने वाली बीवी तुम्हें बादलों में से घसीटकर नीचे ले आती है ? (उसका चुम्बन लेती है ।) और डियर, क्या तुम मैक्लीन के लिए उन तस्वीरों को जल्द ही पूरा नही कर दोगे ?

लुई : ओह, उनकी फिक्र बेकार है । उससे तो मै सारी रकम पेशगी ले चुका हूं ।

मिसेज़ डूबेडाट : लेकिन डियर, यही तो वजह है, जिससे तुम्हे उन तस्वीरों को जल्द पूरा कर देना चाहिए । अभी उस दिन वह मुझसे पूछ रहा था कि क्या सचमुच तुम उन्हे पूरा करने का इरादा रखते हो ।

लुई : उसकी बदतमीजी की ऐसी-तैसी ! वह आखिर मुझे समझता क्या है ? बस इन बातों से ही तो इस बेहूदा काम में अब मेरी दिलचस्पी नही रही । मेरा तो मन करता है कि उसे साफ मना कर दू और उसके पेशगी के पैसे भी लौटा दू ।

मिसेज डूबेडाट : लेकिन हम ऐसा करने की हालत मे नही है, डियर। अच्छा हो कि तुम उन तस्वीरों को जल्दी से पूरा करके छुट्टी पाओ । मेरा तो ख्याल है कि पेशगी की रकम लेनी ही नहीं चाहिए ।

लुई : लेकिन फिर हमारा गुजारा कैसे होगा ?

मिसेज डूबेडाट : मगर लुई, यों भी तो अब मुश्किल होता जा रहा है । अब तो सभी तस्वीरे मिलने से पहले एक भी पेनी देने से इन्कार करने लगे है ।

लुई : जहन्नुम मे जाए सब लोग ! उन्हे अपने पैसों के अलावा न किसी चीज की फिक्र है न परवाह ।

मिसेज डूबेडाट : फिर भी, वे हमे अगर पैसा देते है तो उन्हें वह चीज तो मिलनी ही चाहिए, जिसके लिए वे देते है ।

लुई : (फुसलाते हुए) अच्छा, अब जाने भी दो । आज भर के लिए यह लेक्चरबाजी काफी हो गई । मैने नेक इंसान बनने का वायदा कर लिया है, किया है न ?

मिसेज डूबेडाट : (उसके गले मे अपनी बाहें डालते हुए) तुम बखूबी जानते हो कि लेक्चर झाड़ने से खुद मुझे कितनी नफरत है, और यह भी कि मै तुम्हें एक लमहे के लिए भी गलत नही समझती, डियर, जानते हो न ?

लुई : (प्यार से) मै जानता हूं, जानता हूं । मैं एक बदमाश हूं और

तुम एक फरिश्ता हो। काश, मै इतना तन्दुरुस्त होता कि लगातार जमकर काम कर सकता तो अपनी डार्लिंग के घर को एक मन्दिर बना देता और उसके कमरे को ऐसा खूबसूरत गिरजा बना देता जैसा कभी किसीने सपने में भी नही देखा। दुकानों के सामने से गुज़रते वक्त मुझे अन्दर जाकर तुम्हारे लिए दुनिया की सारी नायाब और बढ़िया चीजें खरीद लेने की ख्वाहिश को जबरन दबाना पड़ता है।

मिसेज़ डूबेडाट : मुझे तुम्हारे सिवाय और कुछ नहीं चाहिए, डियर। (वह उसको चूमती है। इसके जवाब मे वह इतने आवेग से आलिंगन में भरकर उसका चुम्बन लेता है कि वह अपने को जल्दी से छुडा लेती है।) अरे छोड़ो ! कुछ तो ख्याल करो। याद है कि आज सुबह सारे डाक्टर आ रहे है। लुई, क्या यह उनकी खास इनायत नहीं है कि उन्होंने खुद यहां आने का इसरार किया है, सारे के सारे डाक्टरों ने, आकर तुम्हारे बारे में राय-मशवरा करने के लिए ?

लुई : (सर्द अन्दाज़ मे) हूं, मै दावे से कह सकता हूं कि उन लोगों का यह ख्याल है कि एक उभरते हुए आर्टिस्ट को अच्छा कर देने से उनकी शोहरत मे चार चांद लग जाएंगे। फिर भी, अगर उन्हे यहां आना दिलचस्प न लगता तो हर्गिज न आते। (कोई दरवाज़े पर दस्तक देता है।) अरे सुनो, अभी वक्त तो नहीं हुआ, क्यों ?

मिसेज़ डूबेडाट : नही, अभी तो नही हुआ।

लुई : (दरवाज़ा खोलते हुए, रीजन को सामने देखकर) हल्लो रीजन। आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। अन्दर तशरीफ लाएं।

मिसेज डूबेडाट : (हाथ मिलाते हुए) आपने आकर हमपर बड़ी इनायत की है, डाक्टर।

लुई : माफ कीजिए, यह जगह साफ नही है। यहां पर रहने की सहूलियतें नही हैं, फिर भी जेनीफर की बदौलत हम इस दरबे मे किसी तरह गुजारा कर ही लेते हैं।

मिसेज डूबेडाट : अब मै जाती हूं। शायद बाद मे, जब आप लोग लुई की जांच-पड़ताल का काम खत्म कर लेंगे, तब मै भी आपका फैसला सुनने के लिए अन्दर आ जाऊंगी। (रीजन खेदपूर्वक झुककर अभिवादन करता है।) क्या आप चाहते हैं कि मैं न सुनू ?

रीजन : नही, नहीं, हमें कोई एतराज नही।

[मिसेज डूबेडाट रीजन के औपचारिक व्यवहार से किंचित् सकपकाकर उसकी ओर देखती है और भीतर के कमरे मे चली जाती है।]

लुई : (बातूनी अन्दाज मे) अमां, सुनते हो : इतना संजीदा रुख बनाने की जरूरत नही है। कोई कहर बरपा होने तो नही जा रहा, क्यों ?

रीजन : नही।

लुई : तब ठीक। बेचारी जेनीफर कितनी बेताबी से तुम्हारा इंतजार करती रही है, इसका तुम कयास भी नही कर सकते। दरअसल उसे तुमसे लगाव हो गया है, रीजन। यह बेचारी लड़की बात भी करे तो किससे। मै हर वक्त पेन्ट करता रहता हूं। (एक स्केच को उठाकर) उसका यह छोटा-सा स्केच मैने कल ही बनाया है।

रीजन : लेकिन उसने तो मुझे यह स्केच पन्द्रह दिन पहले दिखाया

था, जब वह पहली बार मेरे यहां गई थी।

लुई : (निर्लज्ज भाव से) ओह! क्या सच उसने दिखाया था? या खुदा! वक्त भी कितनी तेजी से परवाज करता है! मै तो कसम खाकर कह सकता था कि मैंने यह स्केच अभी-अभी पूरा किया है। यहा उसकी ज़िन्दगी बेहद मुश्किल हो रही है, बेचारी देखती रहती है कि मै तस्वीरे बना-बनाकर उनके अम्बार लगाता जाता हूं, लेकिन उनसे कुछ हासिल नही होता। इसमे शक नही कि अगले साल अपनी तस्वीरों की नुमायश के बाद मै उन्हे लगे हाथों बेच सकूगा, लेकिन तब तक तो फाके ही करने पड़ेंगे। वह तो रोज़ मुझसे पैसे मांगे और मेरे पास देने को कौड़ी न हो, इस बात से मुझे बड़ी कोफ्त होती है। लेकिन मै कर भी क्या सकता हूं?

रीजन : मैने सुना है कि मिसेज डूबेडाट के पास कुछ अपनी जायदाद भी तो है।

लुई : अरे हां, बहुत थोड़ी-सी। लेकिन कोई मर्द, जिसमें जरा भी गैरत बाकी है, उस जायदाद को कैसे हाथ लगा सकता है? फ़र्ज कीजिएं, मै उस जायदाद को खर्च कर डालता हूं। लेकिन अगर मै मर गया तो उस बेचारी की जिन्दगी का कौन-सा सहारा रह जाएगा? मेरा बीमा नहीं हुआ; किश्तें चुकाने का मेरे पास कोई जरिया ही नही है। (एक और तस्वीर उठाकर) आपको यह तस्वीर कैसी लगती है?

रीजन : (तस्वीर को एक ओर रखते हुए) आज मै तुम्हारी तस्वीरों का मुलाहिजा करने के लिए नही आया। मुझे तुमसे कुछ ज़्यादा जरूरी और अहम काम है।

लुई : तुम मेरे गले हुए फेफड़ों को ठोक-बजाकर देखना चाहते हो। (आवेगपूर्ण ईमानदारी से) रीजन, मेरे अजीज, मै तुम्हारे साथ कोई दुराव-छिपाव नही रखूगा। इस घर मे परेशानी फेफड़ों की वजह से नहीं, दुकानदारो के बिलों की वजह से है। मुझे कुछ नही हुआ, लेकिन बेचारी जेनीफर को खाने के मामले में भी किफायत बरतनी पड़ती है। तुमने हमे यह महसूस कराया है कि हम तुम्हें अपना दोस्त समझ सकते है। क्या तुम हमे डेढ़ सौ पौण्ड का कर्ज दे सकते हो ?

रीजन : नही।

लुई : (आश्चर्यचकित होकर) आखिर क्यों नही ?

रीजन : एक तो मै अमीर आदमी नही हूं, दूसरे अपनी बचत की हर पैनी, बल्कि बहुत कुछ और भी मुझे अपनी साइन्टिफिक खोजों के लिए चाहिए।

लुई : यानी तुम्हारा मतलब है कि तुम अपनी रकम वापस लेना चाहोगे ?

रीजन : मेरा ख्याल है कि लोग कर्ज देते वक्त उसे वापस पाने की तवक्को भी रखते ही है।

लुई : (एक क्षण सोचने के बाद) अच्छा तो, इसका इन्तजाम मै कर सकता हूं। मै तुम्हे एक चेक काट दूगा—या फिर देखो, कोई वजह नही कि तुम भी इससे फायदा न उठाओ; इसलिए मै तुम्हे दो सौ पौण्ड की चेक काटे देता हूं।

रीजन : फिर मुझे परेशान करने की बजाय यह चेक फौरन कैश क्यों नही करा लेते ?

लुई : तुम्हारे सदके ! वे लोग इस चेक को कैश नही करेंगे। बात

यह है कि मै अपनी पूंजी से कहीं ज्यादा बैंक से निकाल चुका हूं। नही, इस मामले मे हमें इस तरह अमल करना चाहिए। मैं चेक पर अगले अक्तूबर की तारीख डाल देता हूं। अक्तूबर मे जेनीफर के डिवीडेन्ड मिलते है। तब तुम यह चेक बैंक में पेश कर देना। बैंक इसे यह मार्क लगाकर वापस कर देगी कि 'जमा करने वाले से पूछा जाए,' या इसी तरह की कोई खुराफात रहेगी। इसपर तुम यह चेक जेनीफर को देकर इशारतन कहना कि अगर यह चेक फौरन नही कैश की गई तो मुझे कैद कर लिया जाएगा। वह तुम्हें तीर की तरह यह रकम अदा कर देगी। तुम्हे पचास पौण्ड का फायदा हो जाएगा और मेरे ऊपर तुम्हारा ऐहसान भी रहेगा, क्योंकि मेरे बुजुर्ग दोस्त, एतबार करो, मुझे इस वक्त पैसों की सख्त जरूरत है।

रीजन : (उसकी ओर घूरते हुए) तुम्हे इस सौदे मे कोई काबिले-एतराज बात नही लगती; और तुम्हारा ख्याल है कि इसमें मुझे भी कोई एतराज़ नही होगा ?

लुई : अमा, इसमे एतराज की बात ही क्या हो सकती है ? बिल्कुल सच्चा सौदा है। डिवीडेन्ड्स के बारे मे मै तुम्हे पक्का यकीन दिला सकता हूं !

रीजन : एतराज से मेरा मतलब है कि क्या तुम्हें इस सौदे मे शराफत और दयानतदारी की कमी नजर ही नही आती ?

लुई : हा, सो तो ठीक है। लेकिन अगर मुझे पैसों की इतनी सख्त जरूरत न होती तो मै खुद ही ऐसी तजवीज पेश न करता।

रीजन : वाकई ! खैर, यह रकम पाने के लिए तुम्हे कोई और तरीका अख्तियार करना पड़ेगा।

लुई : तुम्हारा मतलब है कि तुम इन्कार करते हो ?

रीजन : मेरा मतलब है—! (अपने क्रोध को खुली छूट देकर) बिलाशक, मैं साफ इन्कार करता हूं। हजरत, तुमने मुझे समझ क्या रखा है ? मेरे सामने ऐसी बेहूदी तजवीज पेश करने की तुम्हें जुर्रत कैसे हुई ?

लुई : क्यों न होती ?

रीजन : छिः ! अगर मै समझाने की कोशिश भी करूं, तो भी तुम्हारी समझ मे कुछ नही आएगा। बहरहाल, हमेशा के लिए याद रखो कि मै तुम्हें कर्ज के नाम पर एक फार्दिंग भी नहीं दूंगा। तुम्हारी बीवी की इमदाद करने मे मुझे खुशी हासिल होगी; लेकिन तुमको कर्ज देने से उसको कोई फायदा नहीं होगा।

लुई : अच्छा खैर, अगर तुम सचमुच मेरी बीवी की ही इमदाद करना चाहते हो तो मै बता सकता हूं कि तुम्हें क्या करना चाहिए। तुम अपने मरीजों से कहकर मेरी कुछ तस्वीरें बिकवा दो, या मुझे कुछ लोगों की पोर्ट्रेट बनाने का काम दिलवा दो।

रीजन : मेरे मरीज मुझे डाक्टर समझकर बुलाते है, तस्वीर-फरोश समझकर नही।

[दरवाजे पर दस्तक सुनाई देती है। लुई अपनी वात जारी रखता हुआ, लापरवाही से दरवाजा खोलने के लिए आगे वढता है।]

लुई : लेकिन मरीजों पर तुम्हारा काफी असर तो रहता ही होगा। तुम उनकी जिन्दगी के बारे मे इतनी ज्यादा बातें जानते होगे—उन प्राइवेट बातों के बारे मे जिन्हें वे लोग पोशीदा रखना

चाहते है। उनकी जुर्रत नहीं होगी कि तुमसे इन्कार कर दें।

रीजन : (क्रोध से उबलकर) देखो, मै······

[लुई इस बीच दरवाज़ा खोल देता है और सर पैट्रिक, सर रैल्फ और वालपोल अन्दर दाखिल होते है।]

रीजन : (क्रुद्ध स्वर मे बात जारी रखते हुए) वालपोल, मुझे यहां आए अभी दस मिनट भी नही हुए, और ये हजरत इतनी देर मे ही मुझसे डेढ़ सौ पौण्ड कर्ज मांगने की कोशिश कर चुके है। फिर इन्होने यह तजवीज रखी कि मै इनकी बीवो को डरा-धमकाकर इन्हे यह रकम वसूल करवा दूं। आप लोगों के आने से यह बात बीच में ही टूट गई, नही तो ये हज़रत सुझाव दे रहे थे कि मै अपने मरीजों को डरा-धमकाकर उन्हें इनसे अपनी पोर्ट्रेट्स बनवाने के लिए मजबूर करूं।

लुई : खैर, रीजन, क्या इसीको तुम शरीफ और दयानतदार आदमी होना पुकारते हो ? मैने तुमपर एतबार करके अकेले मे बात की थी।

सर पैट्रिक : हम सब तुमसे अब अकेले मे ही बात करेंगे, समझे नौजवान !

वालपोल : (हैट-स्टैण्ड की अकेली खाली खूटी पर अपना हैट टांगते हुए) हम लोग यहां आध घंटे तक बिना तकल्लुफ ठहरेंगे, समझे डूबेडाट। घबराओ नहीं, तुम निहायत दिलचस्प लड़के हो, और हमे तुमसे मुहब्बत है।

लुई : ओह, खुशी से, खुशी से। बैठ जाइए—जहां भी जगह मिले। सर पैट्रिक, आप यह कुर्सी ले लीजिए। (मंच पर रखी कुर्सी की ओर इशारा करते हुए) ऊपर-र-र ! (उन्हे चढ़ने में मदद करते हुए।

सर पैट्रिक गुर्राने की आवाज़ करते है और सिंहासनारूढ़ हो जाते हैं।) और बी. बी., तुम यहां बैठो। (सर रैल्फ इस बेतकल्लुफाना सम्बोधन पर घूरकर उसकी ओर देखते हैं, लेकिन लुई इसकी परवाह न करके सर पैट्रिक की दाहिनी ओर मच पर एक वडी-सी किताब और उसपर सोफे की गद्दी रख देता है और बी बी प्रतिवाद करते हुए बैठ जाते हैं।) अपना हैट मुझे दीजिए। (वह बी. बी का हैट उनके सर से उतारकर कोने मे खड़ी कार्डिनल की मूर्ति के सिर पर रख देता है जिससे उस कोने की भव्यता नष्ट हो जाती है। फिर वह दीवार के पास से प्यानो का स्टूल आगे खीचकर वालपोल को देता है।) इसपर तुम्हें एतराज तो नहीं है, वालपोल, क्यों? (वालपोल स्टूल ले लेता है और सिगरेट-केस निकालने के लिए अपनी जेब मे हाथ डालता है। न मिलने पर उसे उसके गुम हो जाने की याद आ जाती है।)

वालपोल : सुनो, मै तुम्हे अपने सिगरेट-केस के बारे मे तकलीफ देना चाहता हूं, उम्मीद है बुरा नही मानोगे।

लुई : कैसा सिगरेट-केस ?

वालपोल : वही सोने का सिगरेट-केस जो मैने तुम्हे स्टार और गार्टर में दिया था।

लुई : (आश्चर्य से) क्या वह तुम्हारा था ?

वालपोल : हां।

लुई : मुझे सख्त अफसोस है, मेरे दोस्त। कई रोज तक मै ताज्जुब करता रहा कि आखिर यह है किसका। अफसोस कि अब उस सिगरेट-केस का सिर्फ यह नामोनिशां बाकी बचा है। (वह अपने ऐप्रन को उठाकर वास्कट की जेब से एक कार्ड निकालता है और वालपोल को थमा देता है।)

वालपोल : यह गिरवी की टिकट !

लुई : (इत्मीनान दिलाते हुए) तुम्हारा सिगरेट-केस बिल्कुल महफूज़ है। वह इसे एक साल तक नहीं बेच सकता। मेरे अजीज वालपोल, मै फिर कहता हूं कि मुझे सख्त अफसोस है। (वह भोलेपन से वालपोल के कधे पर हाथ रखकर बड़े सरल भाव से उसकी ओर देखता है।)

वालपोल : (एक आह भरकर स्टूल मे शिथिल धंस जाता है।) नही, नही, अफसोस करने की जरूरत नही। इससे तुम्हारे कैरेक्टर की कशिश और भी बढ़ जाती है।

रीजन : (जो ईज़ल के पास खडा सुनता रहा है।) इससे पहले कि हम आगे बात करे, मिस्टर डूबेडाट, तुम्हे एक कर्ज़ चुकाना होगा।

लुई : अमां, मुझे और भी बहुत-से कर्ज चुकाने है, रीजन। ठहरो, मै तुम्हारे लिए एक कुर्सी तो लाऊं। (भीतर के कमरे की ओर बढता है।)

रीजन : (उसको रोकते हुए) नही, जब तक तुम वह कर्ज अदा नहीं कर देते तब तक इस कमरे से बाहर नहीं जा सकते। यह छोटा-सा कर्ज है और तुम्हें चुकाना ही पड़ेगा। उस रोज तुमने मेरे मेहमानों मे से एक से १० पौड और दूसरे से २० पौड कर्ज लिए थे। इसपर मुझे ज़्यादा एतराज नहीं है, क्योंकि—

वालपोल : तुम तो जानते ही हो कि मै इनके फुसलाने मे आ गया था और मैने खुद ही वह रकम पेश की थी।

रीजन : वे तुम्हें यह कर्ज आसानी से दे सकते थे। लेकिन उस गरीब ब्लेकिसोप से उसका आखिरी आधा क्राउन भी झटक लेना, एकदम जलालत थी। मै उसका आधा क्राउन उसे वापस कर देना चाहता हूं और चाहता हूं कि मै उसे अपना लफ़्ज़ देकर कह

सकू कि यह आधा क्राउन मैने तुमसे वसूल किया है। जो भी हो, मै तुमसे यह वसूल करके ही रहूंगा।

बी. बी. : बिल्कुल ठीक, रीजन, बिल्कुल ठीक। ऐ नौजवान दोस्त! यह रकम फौरन चुका दो।

लुई : ओह, इसके लिए आप लोग इतना हगामा क्यों मचा रहे हैं? बेशक, मै यह रकम अदा कर दूंगा। मुझे नही मालूम था कि वह गरीब इतना खस्ताहाल है। यह जानकर मै खुद भी उतना ही रंजीदा हूं, जितने आप लोग हैं। (अपनी जेब मे हाथ डालकर टटोलता है।) यह लीजिए। (जेब खाली पाकर) देखो भाई, इस वक्त तो मेरी जेब मे एक कौडी भी नही है। वालपोल! इस मामले को निबटाने के लिए क्या तुम आधा क्राउन दे सकते हो?

वालपोल : आधा क्राउन कर्ज दू तुम्हे ··(उसका स्वर मंद होता हुआ अस्फुट हो जाता है।)

लुई : बहरहाल, अगर तुम नही दोगे तो ब्लेकिंसोप को अपना आधा क्राउन नही मिलेगा; क्योंकि मेरे पास कौड़ी भी नही है; चाहो तो मेरी जेबों की तलाशी लेकर देख लो।

वालपोल : इतना ही काफी है। (जेब से आधा क्राउन निकालकर देता है।)

लुई : (रीजन के हाथ मे थमाता हुआ।) यह लो! दरअसल, मै बहुत खुश हूं कि यह मामला यही निबट गया। सिर्फ यही एक बात मेरी रूह पर बोझ बनी हुई थी। अब उम्मीद है कि आप लोगों की तसल्ली हो गई।

सर पैट्रिक : पूरी तरह नही, मिस्टर डूबेडाट। क्या तुम मिनी टिनवेल नाम की किसी औरत को जानते हो?

लुई : मिनी! ख्याल तो है कि मै उसे जानता हूं और मिनी भी मुझे

जानती है। उसका पेशा देखते हुए, वह सचमुच बड़ी नेक लड़की है। क्यों, उसको क्या हुआ है ?

वालपोल : आंख मे धूल झोंकने से कोई फायदा नही होगा, डूवेडाट। हमने मिनी की शादी का सर्टिफिकेट देखा है।

लुई : (सर्द आवाज़ मे) अच्छा ! क्या जेनीफर का सर्टिफिकेट भी देखा है ?

रीजन : (अदम्य क्रोध मे उठते हुए) क्या तुम यह तोहमत लगाने की जुर्रत कर रहे हो कि मिसेज डूवेडाट की तुमसे शादी नही हुई है, फिर भी वे तुम्हारे साथ रहती है ?

लुई : हा, हां, क्यों नही ?

बी. बी.	(सब लोग लुई के शब्दो को आश्चर्य और धिक्कार के स्वर मे दुहराते हैं।)	क्यों नहीं !
सर पैट्रिक		क्यों नही !
रीजन		क्यों नहीं !
वालपोल		क्यों नहीं !

लुई : जी हां, क्यों नहीं ? सैकड़ों लोग ऐसा करते हैं; आप जैसे भले लोग भी। किसी ऐसे सूरते-हाल में पड़कर जिसके आप लोग अभी तक आदी नही है, भेड़ों की तरह मिमियाने और बा-आ, बा-आ, करने की बजाय आप लोग अपने दिमाग से काम लेने की कोशिश क्यों नही करते ? (उनके भौचक्के चेहरों का कंठ मे हसकर निरीक्षण करते हुए।) सुनो, मै इसी वक्त तुम सबकी तस्वीर खीचना चाहता हूं; तुम लोग काफी अहमक दिखाई दे रहे हो। खास तौर पर रीजन, तुम तो अहमकों के सरताज नजर आ रहे हो। याद है, पिछली बार भी मैने तुम्हें इसी बेवकूफी मे पकड़ा था।

रीजन : वह कैसे, जरा सुनूं तो ?

लुई : वह ऐसे कि तुम जेनीफर पर फिदा हो रहे थे। और मुझसे नफरत कर रहे थे।

रीजन : (कठोर स्वर मे) मुझे तुमसे सख्त नफरत है। (सोफे पर फिर बैठ जाता है।)

लुई : दुरुस्त ! लेकिन फिर भी तुम्हे यकीन हो गया है कि जेनीफर एक बदचलन औरत है, क्योंकि तुम्हारा ख्याल है कि मैने तुमसे ऐसा कुछ कहा है।

रीजन : तो तुमने अभी झूठ कहा ?

लुई : नही। लेकिन तुम लोग बजाय इसके कि अपना दिमाग पाक और साफ रखते, मेरी बदकारियों की कहानी का सुराग लगाने लगे। मै तुम जैसे लोगों को नचा सकता हूं। आखिर मैने क्या कहा था, यही न कि क्या तुमने जेनीफर की शादी का सर्टिफिकेट भी देखा है, और तुमने फौरन नतीजा निकाल लिया कि उसके पास सर्टिफिकेट है ही नही। आख से देखकर तुम एक शरीफ औरत की पहचान कर ही नही सकते।

बी. बी. : (शाहाना अन्दाज मे।) इससे तुम्हारा क्या मतलब है, क्या मैं पूछ सकता हूं ?

लुई : हा, तुम लोगो की नजर मे तो मै सिर्फ एक बदचलन आर्टिस्ट हूं, लेकिन अगर आपने मुझसे कहा होता कि जेनीफर शादीशुदा नही है तो मेरे अन्दर जजबाती शराफत और एक आर्टिस्ट का जमीर तो कम से कम इतना है ही कि मै आपको बता देता कि जनाब शादी का सर्टिफिकेट तो जेनिफर के चेहरे और उसके कैरेक्टर पर लिखा हुआ है। लेकिन आप सब निहायत पारसा

लोग है, और बेचारी जेनीफर महज एक आर्टिस्ट की बीवी है—शायद एक मॉडल भर है; और नेकी और पारसाई का तर्जे-अमल यह है, लोगों पर यह शक किया जाए कि वे कानूनी तौर पर शादीशुदा नही है। क्या आप लोगों को अपने ऊपर शर्म नही आती ? इसके बाद भी क्या आपमे से कोई मेरे चेहरे की ओर नजर उठाकर देख सकता है ?

वालपोल : तुम्हारे चेहरे की ओर नजर उठाकर देखना वाकई मुश्किल काम है, डूबेडाट ! तुम्हारे गुस्ताख चेहरे मे बेपनाह चमक है। फिर भी, मिनी टिनवेल का क्या हुआ,' क्यों ?

लुई : मिनी टिनवेल एक जवान औरत है, जिसे अपनी जिन्दगी में खुशी और मसर्रत के तीन हफ्ते हासिल हो चुके है, और मै आपको यह बतला दू कि उसकी हैसियत की लड़कियों को जो खुशी नसीब होती है, उससे यह कहीं ज़्यादा है। उससे पूछ देखिए कि अगर यह मुमकिन हो तो क्या वह इस खुशी को वापस लेना चाहेगी। उसका नाम तवारीख में लिख गया है, जी हां, उस लडकी का। वक्त आएगा जब लोग क्रिस्टी के यहां मेरे बनाए हुए उसके स्केचों को खरीदने की होड़ करेंगे। मेरी जिन्दगी की कहानी मे उसपर भी एक सफा लिखा जाएगा। मेरे ख्याल मे समुद्र के किनारे के किसी होटल की एक मेड के लिए इतना हासिल कर लेना बहुत काफी है। इसके मुकाबले मे आप लोगों ने उसके लिए क्या किया है ?

रीजन : हमने उसे एक धोखे की शादी मे फासकर फिर बेपनाह नहीं छोड़ दिया।

लुई : बेशक। लेकिन आप लोगों में ऐसा करने की जुर्रत भी तो नही है।

खैर, बेकार परेशान मत होइए। मिनी को मैंने छोड़ा नहीं था—दरअसल हमारे सारे पैसे खर्च हो गए थे—

वालपोल : जी नही, उसके सारे पैसे। तीस पौण्ड।

लुई : मैने कहा कि हमारे सारे पैसे। उसके भी और मेरे भी। उसके तीस पौण्ड तो तीन दिन भी नहीं चले। मुझे उसपर खर्च करने के लिए चार बार इतनी-इतनी ही रकमे कर्ज लेनी पड़ीं लेकिन मुझे इसका मलाल नही है, और न उसको ही अपने चंद पौण्डों का मलाल है; बड़ी जां-बाज नन्ही-सी छोकरी है वह। जब तक हमारे पैसे चले, तब तक हम एक दूसरे से जी भरकर मुहब्बत कर चुके थे। आप लोग शायद यह नही कह सकते कि हम दोनों का साथ इससे ज्यादा दिन चलना चाहिए था—मै एक आर्टिस्ट हूं और वह एक ऐसी लड़की है जो आर्ट और अदब की दुनिया से बाहर की है, यहां तक कि जिन्दगी की लताफ़तों से उसका दूर का भी वास्ता नही है। छोड़ने-छाड़ने का सवाल ही नही उठा, न आपस मे कोई मनमुटाव और गलतफहमी हुई, न आप जैसे नेक और पारसा इन्सानो को नाश्ते के वक्त चटखारे ले-लेकर मजा लेने के लिए पुलिस की कचहरी और तलाक के सनसनीखेज वाकये ही हुए। हमने एक दूसरे से कहा, देखो जी, सारा पैसा तो खत्म हो गया, लेकिन हमने एक दूसरे की आग़ोश मे ख़ुशी का जो वक्त गुजारा है उसे कोई हमसे छीन नही सकता; इसलिए आओ एक बार फिर चूमे और अच्छे दोस्तो की तरह एक दूसरे से रुखसत लें। और इस तरह वह अपनी नौकरी पर और मै अपने स्टूडियो और अपनी जेनीफर के पास वापस लौट आए, इतनी शानदार छुट्टियां बिताने की वजह से अपने दिलों मे

खुशी और मसरंत का जजबा लेकर।

वालपोल : क्या कहने है, एक छोटी-सी नज़्म कह डाली तुमने तो!

बी. बी. : मिस्टर डूबेडाट, अगर तुम्हारी तालीम साइन्टिफिक ढंग से हुई होती तो तुम इस बात से बेखबर न रहते कि आदमी का अमल शायद ही कभी उसूलों के मुताविक होता है। डाक्टरी अमल के मुताविक एक शख्श मर सकता है, अगर्चे साइन्टिफिक उसूलों के मुताबिक उसे जिन्दा रहना चाहिए। मैने खुद एक आदमी को ऐसी बीमारी से मरते देखा है, जो साइन्टिफिक उसूलों के मुताबिक उसको हो ही नहीं सकती थी। लेकिन इन बातों से साइंस की बुनियादी सचाइयों पर आच नहीं आती। इसी तरह, इखलाक के मामलों मे भी, एक आदमी का अमल वैसे चाहे नुकसानदेह न हो, वल्कि चाहे फायदेमन्द ही क्यों न हो, लेकिन हो सकता है कि इखलाक की रू से उसका अमल एक बदमाश की बदफैली समझा जाए। साथ ही यह भी मुमकिन है कि ऊंचे से ऊंचे इखलाकी उसूलो के मुताबिक अमल करने के बावजूद भी कोई इंसान लोगों को बेहद नुकसान पहुंचाए। लेकिन इससे इखलाक की बुनियादी सचाई को आंच नहीं आती।

सर पैट्रिक : और इससे एक ही वक्त मे दो शादिया करने के जुर्म के खिलाफ बने कानून पर भी असर नही पड़ता।

लुई : ओह, दो शादिया! दो शादियां! दो शादियां! तुम इखलाक-परस्तों के दिल मे पुलिस से ताल्लुक रखने वाली हर चीज के लिए कितनी कशिश है। मै अभी सावित कर चुका हूं कि इखलाक के सवाल पर आप लोगों का नजरिया कितना तंग और बेमानी है। अब मै आपको यह साबित करके दिखाऊंगा

कि कानूनी लिहाज से भी आप लोग एकदम गलत हैं। और मुझे उम्मीद है कि आयन्दा के लिए इससे आपको यह सबक मिलेगा कि अपनी बात की सचाई के बारे में इतना हठ करना वाजिव नहीं है।

वालपोल : यह निरी बकवास है! तुम पहले से शादीशुदा थे, जब तुमने इससे शादी की। इतने ही से तुम्हारा जुर्म साबित हो जाता है।

लुई : क्या सचमुच साबित हो जाता है? आप लोग कुछ भी सोच क्यों नहीं पाते? आपको कैसे मालूम है कि मेरे साथ शादी करने से पहले जेनीफर खुद भी शादीशुदा नहीं थी?

बी. बी. **रीजन** **वालपोल** **सर पैट्रिक**	[सब लोग एक साथ चिल्लाते हैं।]	वालपोल! रीजन! सुना तुमने! बस, हद हो गई! मुझसे खुदा ही समझे! वाह रे, बदमाश छोकरे!

लुई : (इन लोगो की चीख-पुकार पर ध्यान न देते हुए) वह एक लाइनर-जहाज के स्टीवर्ड से ब्याही थी। वह इसे छोड़कर कहीं लापता हो गया। और इस बेचारी, गरीब लड़की ने सोचा कि शायद कानून यह है कि अगर तीन साल तक उसे अपने खाविन्द की खबर न मिले तो वह फिर से शादी कर सकती है। चूकि वह निहायत शरीफ और नेकचलन लड़की थी और उसने शादी के बगैर मेरे साथ ताल्लुक पैदा करने से इन्कार कर दिया था, इसलिए मैने उसको खुश करने और उसकी गैरत बचाने की गरज से शादी की रस्म अदा कर दी।

रीजन : क्या तुमने उसको बताया था कि तुम पहले से शादी-शुदा हो?

लुई : कतई नहीं। क्या आप लोगों की समझ में इतनी-सी बात भी नही आती कि अगर उसे मालूम हो जाता तो वह मेरी बीवी बनने के लिए हर्गिज तैयार न होती ? लेकिन लगता है कि आप लोगों की समझ मे कुछ भी नही आएगा।

सर पैट्रिक : तो तुमने कानून से अनजान इस बेचारी को कैद का खतरा उठाने के लिए वक्त के रहमोकरम पर छोड़ दिया।

लुई : दरअसल, उसकी खातिर कैद का खतरा तो मैंने मोल लिया। वह अगर गिरफ्तार हो सकती थी, तो मै भी तो गिरफ्तार हो सकता था। लेकिन अगर कोई मर्द किसी औरत के लिए ऐसी कुर्बानी देता है, तो वह जाकर उसके आगे इसकी डींग नहीं हांकता; कम से कम, एक शरीफ आदमी तो ऐसा कभी नहीं करेगा।

वालपोल : इन हजरत के बारे मे अब हम लोग क्या करें ?

लुई : (बेसब्री से) ओह, जाओ और शैतान के नाम पर तुम्हारे जो मन मे आएं करो। मिनी को जेल मे डाल दो। मुझे कैद करवा दो। जेनीफर को खूब बदनाम करके मार डालो। और फिर जब तुम सब जी भरकर फितना-अंगेजी कर चुको, तब गिरजे मे जाना और अपने दिल का बोझ हल्का कर लेना। (वह चिड़चिडी मुद्रा मे ईज़ल के पास रखी पुरानी कुर्सी पर बैठ जाता है और स्केच बनाने का तख्ता उठाकर रेखाए खीचना शुरू कर देता है।)

वालपोल : इसने हमको भी एक मुसीबत में डाल दिया।

सर पैट्रिक : (कठोर, गम्भीर स्वर मे) इसमे शक नही।

बी. बी. : लेकिन क्या इसे मुल्क का ताजीरी कानून तोड़ने के लिए छूट दी जा सकती है ?

सर पैट्रिक : भले और नेक लोगों के लिए ताजीरी कानून का कोई फायदा नही है । यह कानून बदमाशों को शह देता है कि वे भले खान्दानों को डरा-धमकाकर अपना उल्लू सीधा करते रहें । आखिर इन खान्दानो के डाक्टर होने के नाते हमे अपना आधा वक्त उनके वकीलों से यह साजिशे करने मे ही तो गुजारना पड़ता है कि इस बदमाश को कैद से कैसे बचाया जाए या उस खान्दान को बदनामी से कैसे बचाया जाए ।

बी. बी. : लेकिन कानून कम से कम इसको तो सजा देगा ।

सर पैट्रिक : जी हा, इसको तो सजा देगा । इसको ही क्यो, कानून तो उन सबको भी सजा देगा, जिनका इस आदमी से कैसा भी ताल्लुक है, वे चाहे मासूम हों, चाहे मुजरिम । कानून दो बरस के लिए इस शख्स की गुजर-बसर का सारा खर्च टैक्सों के जरिए हमारे मत्थे डाल देगा, और उसके बाद इसे और भी पक्का बदमाश बनाकर हमे धोखा देने की खुली छूट दे देगा । कानून इस लड़की को कैदखाने मे बंद करके इसकी जिन्दगी तबाह कर देगा । कानून इसकी पहली बीवी की ज़िन्दगी को वीरान बना देगा । इसलिए तुम लोग ताज़ीरी कानून की बात तो हमेशा के लिए अपने दिमाग से निकाल दो । यह कानून सिर्फ अहमकों और वहशियों के ही काम का है ।

लुई : जरा अपना मुह इधर को फेर लीजिए, सर पैट्रिक । (सर पैट्रिक क्रोध से उसकी ओर मुडकर घूरते है ।) ओह, इतना नहीं मुड़िए ।

सर पैट्रिक : भले आदमी, अपनी बेहूदा पेन्सिल को एक किनारे रख-कर, जरा अपने हाल पर गौर करो । तुम इन्सानों के बनाए कानून को ठोकर मार सकते हो, लेकिन और भी कानून हैं,

लुई : कतई नहीं। क्या आप लोगों की समझ मे इतनी-सी बात भी नही आती कि अगर उसे मालूम हो जाता तो वह मेरी बीवी बनने के लिए हर्गिज तैयार न होती ? लेकिन लगता है कि आप लोगों की समझ में कुछ भी नही आएगा।

सर पैट्रिक : तो तुमने कानून से अनजान इस बेचारी को कैद का खतरा उठाने के लिए वक्त के रहमोकरम पर छोड़ दिया।

लुई : दरअसल, उसकी खातिर कैद का खतरा तो मैनें मोल लिया। वह अगर गिरफ्तार हो सकती थी, तो मै भी तो गिरफ्तार हो सकता था। लेकिन अगर कोई मर्द किसी औरत के लिए ऐसी कुर्बानी देता है, तो वह जाकर उसके आगे इसकी डींग नहीं हांकता; कम से कम, एक शरीफ आदमी तो ऐसा कभी नहीं करेगा।

वालपोल : इन हजरत के बारे मे अब हम लोग क्या करे ?

लुई : (बेसब्री से) ओह, जाओ और शैतान के नाम पर तुम्हारे जो मन मे आएं करो। मिनी को जेल मे डाल दो। मुझे कैद करवा दो। जेनीफर को खूब बदनाम करके मार डालो। और फिर जब तुम सब जी भरकर फितना-अंगेज़ी कर चुको, तब गिरजे मे जाना और अपने दिल का बोझ हल्का कर लेना। (वह चिड़चिड़ी मुद्रा मे ईज़ल के पास रखी पुरानी कुर्सी पर बैठ जाता है और स्केच बनाने का तख्ता उठाकर रेखाए खींचना शुरू कर देता है।)

वालपोल : इसने हमको भी एक मुसीबत मे डाल दिया।

सर पैट्रिक : (कठोर, गम्भीर स्वर मे) इसमे शक नही।

बी. बी. : लेकिन क्या इसे मुल्क का ताजीरी कानून तोड़ने के लिए छूट दी जा सकती है ?

सर पैट्रिक : भले और नेक लोगों के लिए ताजीरी कानून का कोई फायदा नही है । यह कानून बदमाशों को शह देता है कि वे भले खान्दानों को डरा-धमकाकर अपना उल्लू सीधा करते रहे । आखिर इन खान्दानों के डाक्टर होने के नाते हमे अपना आधा वक्त उनके वकीलों से यह साजिशे करने में ही तो गुजारना पड़ता है कि इस बदमाश को कैद से कैसे बचाया जाए या उस खान्दान को बदनामी से कैसे बचाया जाए ।

बी. बी. : लेकिन कानून कम से कम इसको तो सजा देगा ।

सर पैट्रिक : जी हां, इसको तो सजा देगा । इसको ही क्यों, कानून तो उन सबको भी सजा देगा, जिनका इस आदमी से कैसा भी ताल्लुक है, वे चाहे मासूम हों, चाहे मुजरिम । कानून दो बरस के लिए इस शख्स की गुजर-बसर का सारा खर्च टैक्सों के जरिए हमारे मत्थे डाल देगा, और उसके बाद इसे और भी पक्का बदमाश बनाकर हमे धोखा देने की खुली छूट दे देगा । कानून इस लड़की को कैदखाने मे बंद करके इसकी जिन्दगी तबाह कर देगा । कानून इसकी पहली बीवी की जिन्दगी को वीरान बना देगा । इसलिए तुम लोग ताजीरी कानून की बात तो हमेशा के लिए अपने दिमाग से निकाल दो । यह कानून सिर्फ अहमकों और वहशियों के ही काम का है ।

लुई : जरा अपना मुह इधर को फेर लीजिए, सर पैट्रिक । (सर पैट्रिक क्रोध से उसकी ओर मुडकर घूरते हैं ।) ओह, इतना नही मुड़िए ।

सर पैट्रिक : भले आदमी, अपनी बेहूदा पेन्सिल को एक किनारे रखकर, जरा अपने हाल पर गौर करो । तुम इन्सानों के बनाए कानून को ठोकर मार सकते हो, लेकिन और भी कानून है,

जिनके आगे तुम्हे सरनगू होना पड़ेगा। क्या तुम्हें मालूम है कि तुम जल्द ही मर जाओगे ?

लुई : हम सभी मरेंगे, है न ?

वालपोल : लेकिन हम सभी छः महीने के अन्दर ही नही मर जाएंगे।

लुई : तुम्हे कैसे मालूम है ?

[यह बात बी. बी. के सब्र का बाध तोड देती है। वह एकदम आपे से बाहर हो जाते हैं और उत्तेजित भाव से कमरे मे चहल-कदमी करने लगते है।]

बी. बी. : कसम खुदा की, मै यह गुस्ताखी नही बर्दाश्त कर सकता। यह ठीक है कि किसी भी हालत में किसीके सामने उसकी मौत के सवाल पर खुलकर बाते करना वाजिब नही है, लेकिन एक डाक्टर की बात का इस तरह नाजायज फायदा उठाना तो बेहद कमीनी हरकत है। (डूबेडाट पर गरजते हुए) मै यह गुस्ताखी नही करने दूगा, सुना तुमने ?

लुई : लेकिन मैने इसकी शुरुआत नही की, तुम लोगों ने ही की। खैर, गैर-आर्टिस्ट पेशे के लोगों का हमेशा से यही तर्जे-अमल रहा है; वे बहस मे जब मात खा जाते है तो धमकियों पर उतर आते है। आज तक मेरी मुलाकात ऐसे वकील से नहीं हुई जिसने मुझे कभी न कभी कैद मे डलवा देने की धमकी न दी हो। मुझे कोई ऐसा पादरी नही मिला जिसने मुझे जहन्नुम रसीद करने की धमकी न दी हो। और अब आप लोग मुझे मौत की धमकी दे रहे है। बाते आप लोग चाहे जितनी बढ़-चढ़कर करें, आपकी आस्तीन मे सिर्फ एक तीर है—वह है धमकी। लेकिन मै बुजदिल और डरपोक नही हूं, इसलिए

आपकी धमकियों का मेरे ऊपर कोई असर नहीं पड़ता।

बी. बी. : (उसकी ओर क्रोधपूर्वक बढते हुए) जनाब, मै अभी बताता हूं कि आप क्या है। आप एक छटे हुए बदमाश है।

लुई : ओह, आप मुझे बदमाश कहे, इसमे मुझे कोई एतराज नही। आखिर यह सिर्फ एक लफ़्ज ही तो है, ऐसा लफ़्ज जिसका मतलब आप खुद नही समझते। क्या होता है, बदमाश ?

बी. बी. : आप बदमाश है, जनाब।

लुई : माना। क्या होता है बदमाश ? मै हू। मै क्या हूं ? एक बदमाश। यह तो एक चक्कर मे बहस चलाने की बात हुई। और आप लोगों का ख्याल है कि आप लोग साइन्सदा है !

बी. बी. : मै-मै-मै—मेरा ख्याल तो यह है कि तुम्हारी गर्दन पकड़कर खूब मरम्मत करू, बेहूदा, बदजात कही का !

लुई : मेरी भी ख्वाहिश है कि तुम ऐसा ही करो। इसके बाद मामले को अदालत मे जाने से रोकने के लिए तुम ज़रूर मुझे एक बड़ी रकम दोगे। (बी. बी. घबराकर, फुफकारते हुए उससे दूर हट जाते है।) क्या आपको मेरे घर मे आकर मेरी मिजाज-पुरसी के लिए अब और कुछ नही कहना ? अपनी बीवी के लौटने से पहले ही मै आपकी दुआओं को सुन लेना चाहता हू। (वह फिर स्केच बनाना शुरू कर देता है।)

रीजन : मैने अपना इरादा पक्का कर लिया। जब कानून बेकार हो जाए तब दयानतदार लोगों का फर्ज है कि वे खुद इलाज तलाश करे। मै इस सांप को बचाने के लिए अब एक उंगली भी नही उठाऊंगा।

बी. बी. : यही लफ़्ज तो मै भी तलाश कर रहा था—सांप !

वालपोल : डूबेडाट, तुम्हें देखकर तुमपर फिदा होने को जी चाहता है। लेकिन हो तुम असली नस्ल के बदमाश।

सर पैट्रिक : तो तुम्हे पता चल गया होगा कि तुम्हारे बारे में हम लोगों की क्या राय है।

लुई : (सुस्थिर भाव से पेन्सिल रखते हुए) इधर देखो। यह सब ठीक नही है। तुम लोग कुछ भी तो नही समझते। तुम्हारा ख्याल है कि मै एक मामूली किस्म का मुजरिम हूं।

वालपोल : मामूली किस्म का नही, डूबेडाट। अपने साथ कुछ तो इन्साफ करो।

लुई : बहरहाल, आप लोग गलत राहों मे भटक रहे है। मै मुजरिम नही हूं। आपकी यह सारी इखलाक-परस्ती मेरे लिए बेमानी है। मै इखलाक मे यकीन ही नही करता। जनाब, मै बर्नर्ड शॉ का मुरीद हू।

सर पैट्रिक : } (उलझन मे पडकर) कौन ?

बी. बी. : } (अपने हाथ हिलाकर जैसे यह विषय अब समाप्त हो चुका हो।) इतना ही काफी है। मै और कुछ नही सुनना चाहता।

लुई : इसमे शक नही कि मै इतना मगरूर नही हूं कि अपने आपको सुपरमैन का दरजा । फिर भी यह एक नस्बुल-ऐन है जिसको पाने की मैं उसी तरह कोशिश करता हूं, जिस तरह कोई भी आदमी अपने आदर्श को पाने की कोशिश करता है।

बी. बी. : (असहिष्णुता से) इसकी वजाहत करने की जरूरत नही है। अब मैं तुमको ठीक-ठीक समझ गया हूं। और कुछ कहना बेकार है, जनाब। जब एक आदमी साइंस, इखलाक और

मजहब पर बहस करने का बहाना करे और फिर ऐलान करे कि वह तो उस बदनाम आदमी का मुरीद है, जो टीका लगाने की ऐलानिया मुखालफत करता है, तब और कुछ कहना बाकी नही रह जाता। (एकाएक रीजन से अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए) यह बात नही है, रीजन, मेरे दोस्त, कि मै टीकों में आम लोगों की तरह यकीन करता हूं, जिस तरह तुम नही करते—तुम्हे अपनी सफाई देने की जरूरत नही है। लेकिन कुछ चीजे ऐसी होती है जिनसे एक आदमी की समाजी हैसियत जाहिर हो जाती है, और टीको की मुखालफत एक ऐसी ही चीज है। (फिर मच पर अपनी जगह बैठ जाता है।)

सर पैट्रिक : बर्नर्ड शॉ ? मैने तो उसका कभी नाम भी नही सुना। शायद कोई मेथॉडिस्ट गिरजे का उपदेशक होगा।

लुई : (इस आरोप से तिलमिलाकर) नही, नही। वह इस जमाने का सबसे ज्यादा तरक्कीपसन्द इन्सान है। वह कोई ऐरा-गैरा नही है।

सर पैट्रिक : मैं तुम्हे यकीन दिलाता हूं, ऐ नौजवान, कि मेरे बाप ने खुद जॉन वेज्ले के ओठों से उस उसूल की तालीम पाई थी जिसमे बताया गया है कि गुनाहों से कैसे नजात पाई जा सकती है। उस वक्त तक तुम या तुम्हारे मिस्टर शॉ पैदा भी नही हुए थे। यह उसूल उन दिनों बेहद हरदिल-अजीज हो रहा था, क्योकि इसके बहाने लोगों को चीनी में रेत और दूध मे पानी मिलाकर बेचने का मौका मिल गया था। तुम भी पक्के मेथॉडिस्ट हो, समझे बरखुरदार, अगर्चे तुम्हे अभी तक यह मालूम नही था।

लुई : (पहली बार गभीरतापूर्वक चिढ़कर) आप मेरी हतक कर रहे है।

मै नहीं मानता कि जिन्दगी मे गुनाह जैसी चीज भी होती है।

सर पैट्रिक : दुरुस्त। लेकिन जनाब दुनिया मे ऐसे भी लोग है जो यह नही मानते कि रोग या बीमारी जैसी चीज भी होती है। मेरा ख्याल है कि वे अपने को ईसाई-साइंसदा के नाम से पुकारते है। तुमको अपनी बीमारी के बारे में उनके पास ही जाना चाहिए। हम लोग तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकते। (उठते हैं।) गुड आफ्टर नून।

लुई : (दयनीय भाव से उनके पास दौड़कर जाते हुए) ओह, उठिए नही, सर पैट्रिक। जाइए नही। मेहरबानी करके अभी ठहरिए। मै आपको अपनी जबान देता हूं कि मेरा इरादा आपको नाराज करना नही है। मेहरबानी करके फिर तशरीफ रखिए। मुझे बस एक मौका और दीजिए। सिर्फ दो मिनट और, सिर्फ इतना ही वक्त और दीजिए।

सर पैट्रिक : (इस विनय-भाव से आश्चर्यचकित तथा किंचित् द्रवित होकर) अच्छा—(बैठ जाते है।)

लुई : (शालीनतापूर्वक) लाख-लाख शुक्रिया।

सर पैट्रिक : (बात जारी रखते हुए) तुम्हें दो मिनट और देने में मुझे एतराज नहीं है। लेकिन आगे से मेरे साथ कोई बात मत करना; क्योंकि मैने प्रैक्टिस करना छोड़ दिया है; और मै तुम्हारी बीमारी को अच्छा कर सकने का कतई दावा नही करता। तुम्हारी जिन्दगी सिर्फ इन लोगो के हाथ मे है।

रीजन : जी नही, मेरे हाथ मे नहीं है। मेरे हाथ इन दिनों भरे हुए है। इस केस को लेने के लिए न तो मेरे पास वक्त है, न जराया ही।

सर पैट्रिक : और तुम क्या कहते हो, मिस्टर वालपोल ?

वालपोल : ओह, मैं इस केस को हाथ मे लेने के लिए तैयार हूं; मुझे कोई एतराज नही। मै यकीनन महसूस करता हूं कि यह केस इखलाकी बीमारी का नही है, जिस्मानी बीमारी का है। इसका मतलब यह है कि शायद रीढ की हड्डी में कोई बीमार अन्सर पैदा हो गया है, जिससे खून का दौरा ठीक नही हो रहा। कहने का लुब्बो-लुबाब यह कि मेरे जहन मे यह बात साफ हो गई है कि इस शख्स के खून मे जहरबाद पैदा हो जाने की वजह से ही यह तकलीफ है। इसमे शक नही कि यह हालत नूसीफार्म सैंक मे टोमेनीज के बड़ी तादाद मे जमा हो जाने की वजह से ही पैदा हुई है।

लुई : (रग पीला पड़ जाता है।) तुम्हारा मतलब है कि तुम मेरा ऑपरेशन करोगे ? उफ !! जी, नही, शुक्रिया।

वालपोल . डरो नही। तुम्हे जरा भी महसूस नही होगा। जाहिर है कि ऑपरेशन के वक्त तुम्हे क्लोरोफॉर्म सुघाया जाएगा। मेरे ख्याल मे तुम्हारा ऑपरेशन करना बेहद दिलचस्प रहेगा।

लुई : ओह, ठीक, अगर तुम्हे यह ऑपरेशन दिलचस्प लगे, और अगर इससे मुझे कोई तकलीफ महसूस न हो, तो बात दूसरी है। अपने ऊपर ऑपरेशन करने का मौका देने के लिए तुम मुझे कितनी रकम दोगे ?

वालपोल : (क्रोधपूर्वक उठते हुए) कितनी रकम ? क्या मतलब ?

लुई : मतलब यह कि कही तुम यह तवक्को तो नहीं करते कि मै तुमको मुफ्त मे ही अपना जिस्म काटने-फाड़ने दूगा, क्यों ?

वालपोल : क्या तुम मेरी पोर्ट्रेट मुफ्त ही बना दोगे ?

लुई : नही। लेकिन पोर्ट्रेट तैयार हो जाने पर मै तुम्हारे हाथ मे पकड़ा दूगा और तुम उसे बाद में शायद दुगनी कीमत पर भी बेच सकोगे। लेकिन काट देने के बाद मै तो अपने नूसीफार्म सैक को कही नही बेच सकूंगा।

वालपोल : रीजन, क्या तुमने कभी ऐसी खुराफात सुनी है! (लुई से) अच्छा तो, रखो अपने नूसीफार्म सैक, अपने तपेदिक से सड़े हुए फेफड़े और अपने बीमार दिमाग को अपने ही पास। मै तुमसे भर पाया। तुम सोचते हो जैसे मै तुम्हारे ऊपर इनायत नही कर रहा था।

[रोषपूर्वक अपने स्टूल पर जाकर बैठ जाता है।]

सर पैट्रिक : अब एक ही डाक्टर बचा है, मिस्टर डूबेडाट, जिसने अभी तक तुम्हारा केस लेने से इन्कार नही किया। अब सिवाय सर रैल्फ ब्लूमफील्ड बोनिगटन के तुम और किसीसे अपनी मदद के लिए अपील नहीं कर सकते।

वालपोल : अगर मै तुम्हारी जगह पर होता, बी. बी., तो इस आदमी को दूर से भी छूना गवारा न करता। इसे अपने फेफड़ों को ब्रोम्टन अस्पताल ले जाने दीजिए। वे लोग इसे अच्छा तो नही करेंगे, लेकिन इसे तमीज से पेश आना जरूर सिखा देंगे।

बी. बी. : मेरी कमजोरी यह है कि मै आज तक उन लोगों से भी ना नही कह सका जो हर तरह से ना-काबिले-इमदाद है। इसके अलावा, मुझे कहना ही पड़ता है कि मेरे ख्याल मे मेडीकल प्रैक्टिस के दौरान इस सवाल को उठाना मुमकिन ही नही है कि हम जिस आदमी का इलाज कर रहे है, उसकी जिन्दगी कीमती है या नही। जरा सोचकर देखो, रीजन। तुम भी इस-

पर गौर करो, पैडी। अपने दिमाग को खुराफात से साफ करके जरा सोचो तो, वालपोल।

वालपोल : (क्रोधपूर्वक) मेरा दिमाग खुराफात से बिल्कुल साफ है।

बी. बी. : दुरुस्त। लेकिन, अब जरा मेरी प्रैक्टिस पर गौर करो। मेरा ख्याल है तुम लोग भी मेरी प्रैक्टिस को फैशनेबल, स्मार्ट प्रैक्टिस कहोगे, ऐसी प्रैक्टिस जो ऊंचे से ऊंचे तबके मे चलती है। तुम पूछ सकते हो कि मै जाच करके यह बताऊं कि मेरे मरीजों की जिन्दगी, खुद अपने लिए या औरों के लिए, किसी मसरफ की है या नही। बहरहाल, साइन्टिफिक जांच-पड़ताल के जितने भी तरीके मुझे मालूम है, उनमे से किसीका इस्तेमाल करके देख लो, आखीर मे तुम्हारे हाथ कुछ भी नही लगेगा। बिलानागा तुम इसी नतीजे पर पहुंचोगे कि उनमे से ज़्यादातर लोगों का, मेरे दोस्त मिस्टर जे. एम. बेरी के लफ़्जों में, मर जाना ही बेहतर है। जी हां, मर जाना ही बेहतर है। इसमें शक नही कि उनमे से चंद एक मुख्तलिफ भी है। मिसाल के लिए, शाही दरबार को लीजिए, जो एक अवामी इदारा है, जिसे अवाम की हिमायत हासिल है और जिसे अवाम के पैसों से चलाया जाता है, क्योंकि अवाम को यह इदारा बेहद पसन्द है। मेरे दरबारी मरीज मेहनतकश लोग है जिनके काम से लोग खुश है। इनके अलावा मेरे मरीजों मे दो-एक ड्यूक भी हैं, जिनकी रियासतों का इन्तजाम बहुत अच्छा है, शायद पब्लिक के हाथों उनका इन्तजाम इतना अच्छा नही होता। मगर इन चद लोगों के अलावा और बाकी मरीजों के हक में अगर मै वकालत करूं तो भी फैसला यही होगा कि उनका मर जाना

ही बेहतर है। इनमे से जब कोई सचमुच मरता है, तब मुझे उनके खान्दानों को दिलासा देने के लिए यह बात घुमा-फिराकर समझानी पड़ती है। (अपने स्वर की लय से आराम पाकर तन्द्रिल अवस्था मे पहुचकर) दरअसल इस बात के बावजूद कि वे लोग अपनी मेडिकल देखभाल के लिए बेहिसाब खर्च करते है, मुझे यह वाजिब नही लगता कि मै उनको जिन्दा रखने के लिए अपनी जो कुछ भी कावलियत है, उनपर जाया करता रहूं। लेकिन फिर भी, अगर मेरी फीस बहुत ज्यादा है तो मेरा खर्च भी तो बहुत ज़्यादा है। मेरी अपनी जरूरते मामूली है—एक सफरी बिस्तर, दो कमरे, रोटी का एक टुकड़ा और शराब की एक बोतल—बस। मुझे खुशी और तसल्ली देने के लिए इतना ही काफी है। शायद मेरी बीवी को इससे ज्यादा आरामो-इशरत से रहना पसन्द है। लेकिन उन्हे भी इस बात का मलाल है कि मेरे मरीज अपने डाक्टर से यह तवक्को रखते है कि वह ऊपर की टीमटाम पर इतना ज़्यादा खर्च करे। इस-स-स-से (एकाएक तन्द्रा से जागते हुए) मै अपनी बात का सिलसिला ही भूल गया। मै किस बारे मे बात कर रहा था, रीजन ?

रीजन : डूबेडाट के बारे मे।

बी. बी. : अरे हां। बिल्कुल ठीक। शुक्रिया। जी हा, डूबेडाट के बारे में। तो, यह हजरत डूबेडाट आखिर है कौन-सी बला ? एक कमीना और नादान छोकरा, जिसमे तस्वीरें बनाने की सलाहियत है।

लुई : शुक्रिया। मेरा ख्याल मत कीजिए।

बी. बी. : लेकिन फिर, मेरे ज़्यादातर मरीज क्या है ? कमीने और

नादान छोकरे, जिनमे कुछ भी करने की सलाहियत नही है। अगर मैं उनके सिफतों की जांच-परख करने लगू तो मुझे अपनी तीन चौथाई प्रैक्टिस छोड़ देनी पडेगी। इसलिए मैने यह उसूल बना लिया है कि मरीज की सिफतों पर गौर ही नही करना चाहिए। अब सवाल उठता है कि फीस देने वाले मरीजो के बारे मे यह उसूल बना लेने के बाद, एक दयानतदार इन्सान की हैंसियत से क्या यह वाजिब होगा कि मै एक ऐसे मरीज़ के लिए, जो फीस देना तो दूर, उल्टे कर्ज मागता है, अपने उसूल को तोड़ दू ? नही, मेरा जवाब है कि नही। मिस्टर डूबेडाट, तुम्हारे इखलाक से मेरा कोई ताल्लुक नही है। मै तुम्हे सिर्फ एक साइन्सदा की नजर से देखता हू। मेरे लिए तो तुम एक मैदाने-जंग के मानिन्द हो, जिसपर कौम-परस्त फैगोसाइट्स के दस्तों को तपेदिक के हमलावर जरासीम की फौजों का मुकाबला करना पड़ रहा है। मै तुम्हारी बीवी को यह जबान दे चुका हूं कि मै तुम्हारे फैगोसाइट्स को उकसा दूगा। इस वादे से मुकरना मेरी शान और मेरे उसूलो के खिलाफ होगा, इसलिए मै उन्हे उकसा दूंगा। इससे ज्यादा और कोई जिम्मेदारी मै नही ले सकता। (वह थककर अपनी सीट पर धम् से बैठ जाते हैं।)

सर पैट्रिक : तो मिस्टर डूबेडाट, चूकि सर रैल्फ ने मेहरबानी करके तुम्हारा केस अपने हाथ मे लेने का वायदा कर लिया है और चूकि मेरे दो मिनट पूरे हो गए है, इसलिए मै अब माफी चाहता हू। (उठते हैं।)

लुई : ओह, जरूर। आपके साथ मेरा काम खत्म हो चुका। (उठकर

स्केच का तख्ता आगे बढ़ाते हुए) यह देखिए ! जब आप लोग बातें चुपड़ रहे थे, उस वक्त मै अपने काम में मसरूफ था। आपकी इन नसीहतों का क्या अंजाम निकला ? सिर्फ थोड़ी-सी कार्बोनिक-एसिड की गैस, जो कमरे की हवा को गन्दा कर रही है। और मेरे काम का क्या नतीजा निकला ? यह रहा, जरा इसपर नज़र डालिए। (रीजन देखने के लिए उठता है।)

सर पैट्रिक : (जो सिंहासन से उतरकर उसकी ओर आए है।) बदमाश छोकरे, क्या तुम मेरा स्केच बना रहे थे ?

लुई : बेशक। और क्या ?

सर पैट्रिक : (स्केच उससे लेकर देखते है और अपनी पसन्द ज़ाहिर करने के लिए गुर्राने-जैसी आवाज़ करते है।) यह तो निहायत अच्छा है। क्या ख्याल है, तुम्हारा, कौली ?

रीजन : हां, इतना अच्छा है कि मै इसे खरीदना पसन्द करूंगा।

सर पैट्रिक : शुक्रिया। लेकिन इसको तो मै खुद लेना चाहूंगा। क्या ख्याल है, तुम्हारा वालपोल ?

वालपोल : (उठकर देखने के लिए आगे बढता है।) नही, कसम खुदा की। इसे तो मै लूगा।

लुई : काश, मेरी यह हैसियत होती कि मै आपको यह स्केच बतौर तोहफे के दे सकता। लेकिन मुझे चाहे पांच गिन्नियां भी क्यों न देनी पड़े, मै यह स्केच नही दे सकता।

रीजन: ओह, अगर ऐसी बात है तो मै तुम्हे इसके लिए छः गिन्नियां दे दूंगा।

वालपोल : दस।

लुई : मेरा ख्याल है कि इसपर सर पैट्रिक का इखलाकी हक सबसे

पहला है, क्योंकि वे इसके लिए बैठे है। कहिए, सर पैट्रिक, बारह गिन्नियों के लिए क्या इसे आपके घर भेज दू ?

सर पैट्रिक : बारह गिन्निया ! अगर तुम रॉयल अकादमी के प्रेजिडेन्ट हो, तब भी नही, समझे नौजवान !

[वह स्केच को निश्चयात्मक भाव से वापस कर देते हैं और मुडकर अपना हैट उठा लेते हैं।]

लुई : (बी. बी. से) क्या आप इसे बारह गिन्नियों मे खरीदना चाहेगे, सर रैल्फ ?

बी. बी : (लुई और वालपोल के बीच मे आते हुए) बारह गिन्नियों मे ? शुक्रिया ! मै इसे इतने मे खरीद लूगा। (स्केच लुई से लेकर सर पैट्रिक को भेंट करते हुए) मेरी ओर से इस तोहफे को मंजूर करो पैडी। खुदा तुम्हे इस तस्वीर पर बार-बार गौर करने के लिए एक लम्बे अरसे तक जिन्दा रखे।

सर पैट्रिक : शुक्रिया। (स्केच को लेकर अपने हैट मे रख लेते हैं।)

बी. बी : अब मुझे इस स्केच के पैसे देने की जरूरत नही है, डूबेडाट। मेरी फीस इससे कही ज़्यादा बनेगी। (वह भी अपना हैट उठा लेते हैं।)

लुई : (क्रोधपूर्वक) यह निहायत कामीनी ··(उसे शब्द नही मिलते) ! ऐसा करने की इजाजत देने से पहले मै गोली खाकर मर जाना पसन्द करूंगा। मेरी राय मे तुम मेरी तस्वीर को चुरा रहे हो।

सर पैट्रिक : (रूखे स्वर मे) हूं, तो आखिरकार हमने तुमको इखलाक मे यकीन करने वाला बनाकर ही छोड़ा, क्यो ?

लुई : जी हां ! (वालपोल से) मै तुम्हारा एक अलग स्केच बना दूगा,

वालपोल, अगर तुम अपने वायदे के मुताबिक मुझे दस गिन्नी दो तो।

वालपोल : बहुत अच्छा। स्केच मिलने पर तुम्हें दूंगा।

लुई : ओह ! तुम मुझे समझते क्या हो ? क्या तुम्हे मेरी ईमानदारी पर जरा भी यकीन नही है ?

वालपोल : कतई नही।

लुई : खैर, अगर तुम ऐसा ही महसूस करते हो तो फिर और कर भी क्या सकते हो। सर पैट्रिक, अपने जाने से पहले मुझे जेनीफर को बुला लेने दीजिए। मुझे मालूम है कि वह आपसे मिलना चाहेगी, अगर आपको कोई एतराज न हो। (अन्दर के दरवाजे की ओर जाता है।) लेकिन उसके आने से पहले सिर्फ एक बात कहने दीजिए। मेरे ही घर में बैठकर आप लोग अब तक मेरे बारे मे आजादी से जो चाहे कहते-सुनते रहे है। मै इसकी परवाह नही करता। मै एक मर्द हू और अपनी देखभाल खुद कर सकता हूं। लेकिन जब जेनीफर अन्दर आए तो मेहरबानी करके यह याद रखिएगा कि वह एक शरीफ औरत है, और यह भी कि आप लोगों से यह तवक्को की जाती है कि आप लोग भी शरीफ मर्द है। (अन्दर जाता है।)

वालपोल : सुना !!! (इस परिस्थिति को अवर्णनीय समझकर और कुछ नही कहता और अपना हैट उठा लेता है।)

रीजन : जहन्नुम मे जाए इस आदमी की गुस्ताखी !

बी. बी. : मुझे यह जानकर ताज्जुब नहीं होगा कि इस शख्स के नाते-रिश्तेदार काफी अमीर तबके के हैं। किसी ठोस बुनियाद के बगैर भी अगर किसी आदमी में इतनी आन-बान और अपने

ऊपर भरोसा दिखाई दे तो मेरी डायग्नोसिस यह होती है कि वह आदमी जरूर खान्दानी है।

रीजन : आर्टिस्टिक जीनियस की डायग्नोसिस करो, बी. बी.। इससे उसकी इज्जत बची रहेगी।

सर पैट्रिक : दुनिया का यही हाल है। नेक इन्सानों पर नक्कूशाह हमेशा लेक्चर झाड़ते और धौंस जमाते रहते है।

बी. बी. : (इस बात को कतई मंजूर न करके) मै धौंस मे कतई नही आया। जुपिटर की कसम, मै उस आदमी की शक्ल देखना चाहता हूं जो मुझपर धौंस जमा सके। (जेनीफर अन्दर आती है।) आह, मिसेज डूबेडाट ! आज आपकी तबियत कैसी है ?

मिसेज डूबेडाट : (बी. बी. से हाथ मिलाते हुए) यहा आने के लिए आप सबका शुक्रिया (वालपोल से हाथ मिलाती है।)। शुक्रिया, सर पैट्रिक (सर पैट्रिक से हाथ मिलाती है)। ओह, आप लोगों से मुलाकात होने के बाद जिन्दगी जिन्दा रहने के काबिल हो गई है। रिशमाड के बाद मुझे एक लहमे के लिए भी खौफ ने नही सताया। पहले हर वक्त दिल मे खौफ समाया रहता था। क्या आप लोग बैठकर मुझे अपने मशवरे का नतीजा नही बताएगे ?

वालपोल : अगर आपको एतराज न हो, तो मै जाना चाहूंगा, मिसेज डूबेडाट। मैंने किसीको वक्त दे रखा है। जाने से पहले मै यह कह देना जरूरी समझता हूं कि मै इस केस के बारे मे अपने इन दोस्तों से पूरी तरह मुत्तफिक हूं। इनकी बीमारी की क्या वजह है और उसका क्या इलाज होना चाहिए, यह बताना मेरा काम नही है। मै तो सिर्फ एक सर्जन हूं, और ये दोस्त फिजीशियन्स है और आपको अपनी राय बताएंगे। मेरी अपनी

भी राय हो सकती है—दरअसल है भी—और वह मेरे इन दोस्तों को पूरी तरह मालूम है। अगर मेरी जरूरत पड़े, और आखीर मे मेरी जरूरत तो पडेगी ही—तो इन्हे मालूम है कि मुझे कहां तलाश करना चाहिए। मै हमेशा आपकी खिदमत के लिए हाजिर रहूंगा। इसीलिए आज तो इजाजत दे। गुड़ बाई (बाहर चला जाता है। उसके अप्रत्याशित और औपचारिक व्यवहार से जेनीफर उलझन मे पड जाती है।)

सर पैट्रिक : मै भी जाने की इजाजत चाहूगा, मिसेज डूबेडाट।

रीजन : (व्यग्रतापूर्वक) क्या आप भी जा रहे है ?

सर पैट्रिक : हां, मेरा यहां रुकने से कोई फायदा नही। और फिर मुझे जल्द वापस पहुंचना चाहिए। आप तो जानती ही है, मदाम, कि मैने प्रैक्टिस छोड़ दी है। इसके अलावा यह केस मेरे हाथ मे नही रहेगा। दरअसल यह केस किसके हाथ मे रहे, इसका फैसला सिर्फ सर कोलेन्जो रीजन और सर रैल्फ ब्लूमफील्ड बोनिगटन को ही करना है। उन्हे मेरी राय मालूम है। गुड आफ्टर नून, मदाम। (सिर झुकाकर अभिवादन करते हुए वे दरवाज़े की ओर बढते हैं।)

मिसेज़ डूबेडाट : (उन्हे रोकते हुए) कोई खतरे की बात तो नही है ? आपकी राय मे लुई की हालत और अबतर तो नहीं हो गई, क्यों ?

सर पैट्रिक : नहीं, उनकी हालत अबतर नही हुई। ठीक वैसी ही है जैसी रिशमांड में थी।

मिसेज़ डूबेडाट : ओह, शुक्रिया ! आपके लहजे से मै घबरा गई थी। माफ फरमाएं।

सर पैट्रिक : फिक्र न करे, मदाम। (जाते हैं।)

बी. बी. : अच्छा तो अब, मिसेज डूबेडाट, मरीज को अगर मैंने अपने हाथ में लिया तो—

मिसेज डूबेडाट : (आशंकापूर्वक, रीजन की ओर एक दृष्टि फेंककर) आप! लेकिन मेरा तो ख्याल था कि सर कोलेन्जो—

बी. बी. (इस सतोष से प्रफुल्लित होते हुए कि वे जेनीफर को उसकी हार्दिक आकाक्षा की पूर्ति की घोषणा से चकित कर रहे हैं।) माई डियर लेडी, आपके खाविन्द के इलाज की जिम्मेदारी मेरे ऊपर रहेगी।

मिसेज डूबेडाट : लेकिन—

बी. बी. : जी नही, कुछ कहने की जरूरत नही है। आपके नियाज से, मुझे इसमे दिली खुशी होगी। सर कोलेन्जो रीजन अपनी जगह सभालेगे—जरासीम की जांच-पड़ताल करने वाली लेबोरेटरी मे। और मै अपनी जगह संभालूगा—मरीज के सिरहाने। आपके खाविन्द का ठीक उसी शान से इलाज होगा जैसे मानो वे शाही खान्दान के मेम्बर हो। (मिसेज डूबेडाट फिर व्यग्र होकर प्रतिवाद करना चाहती है।) जी नही, इसमे ऐहसानमन्द होने की कतई जरूरत नही। यकीन रखें, इससे मुझे तकलीफ होगी। अब, जरा बताइए कि आप इस घर से क्या खासतौर पर बंधी हुई है? इसमे शक नही कि मोटर ने फासलों को खत्म कर दिया है, लेकिन मुझे यह कबूल करने मे एतराज नही कि अगर आप किसी कदर मेरे नजदीक आ जाए तो इसमें मुझे आसानी होगी।

मिसेज डूबेडाट : आपने देखा होगा कि यह स्टूडियो और रहने का फ्लैट अपने आप मे मुकम्मल हैं। रहायश की माकूल जगह

तलाश करने के लिए मुझे काफी परेशानियां उठानी पड़ी है। नौकर इतने ज़्यादा बेईमान है।

बी. बो. : आह, क्या सचमुच ? क्या सचमुच ? कैसी मुसीबत है !

मिसेज़ डूबेडाट : किसी चीज मे ताला बंद करने की मेरी आदत नही थी। इसलिए रोज छोटी-मोटी चीजे गायब हो जाती थी। आखिरकार एक हैरतअंगेज वाकया हुआ। मेरा एक पांच पौण्ड का नोट खो गया। वह जाकर घर की नौकरानी के पास निकला; और उसने यह तोहमद लगाई कि लुई ने उसे वह नोट दिया था। इसपर भी लुई ने मुझे उस औरत के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करने दी। दरअसल लुई इतना नाजुक-मिजाज है कि ऐसी छोटी बाते उसे पागल कर देती है।

बी. बो. : आह-हू-हां—बस, बस, और कुछ कहने की जरूरत नही, मिसेज डूबेडाट। आप यही रहेगी। अगर पहाड़ मोहम्मद के पास नही जा सकता, तो मोहम्मद को ही पहाड़ के पास जाना पड़ेगा। अब मुझे इजाजत दीजिए। मै लिखकर वक्त मुकर्रर कर लूगा। हम मिस्टर डूबेडाट के फैगोसाइट्स को शायद अगले मगल से उकसाना शुरू कर देगे, फिर भी मै आपको इत्तला कर दूगा। आप मेरे ऊपर भरोसा रखे। घबराएं नही। बदस्तूर खाएं-पीएं। खूब सोएं। अपनी तबियत खुश रखें; और मरीज को भी खुश रखे। आखीर मे सब ठीक हो जाएगा, इस उम्मीद को बरकरार रखे। एक हसीन औरत से बड़ी टॉनिक कोई नही, खुश मिजाजी से बड़ी दवा कोई नहीं। और साइंस से बड़ा हरवा कोई नही। गुड-बाई, गुडबाई, गुडबाई। (हाथ मिलाकर जाते हैं, सिर्फ रुककर

रीजन से कहते हैं—इस बीच जेनीफर उनकी वातों से इतनी प्रभावित है कि वोल नही पाती।) मगल की सुबह को एक ताकतवर एण्टी-टॉक्सिन सीरम का टचूब भेज देना। किसी भी किस्म का हो। भूलना नही। गुडबाई, कौली। (जाते हैं।)

रीजन : तुम फिर मायूस-सी दीखती हो। (वह दरअसल रुआसी हो रही है।) आखिर क्या बात है ? क्या तुमको अफसोस हो रहा है ?

मिसेज डूबेडाट : मैं जानती हू कि मुझे ऐहसानमन्द होना चाहिए। यकीन रखिए, मैं दिल से ऐहसानमन्द हूं। लेकिन-लेकिन—

रीजन : कहो न, क्या बात है ?

मिसेज डूबेडाट : मैंने यह उम्मीद वाध रखी थी कि आप खुद लुई का इलाज करेंगे।

रीजन : लेकिन, सर रैल्फ ब्लूमफील्ड बोनिंगटन—

मिसेज डूबेडाट : जी हा, मै जानती हूं, मै जानती हूं। उनको पाना बड़े फख्र की बात है। लेकिन, आह, अच्छा रहता अगर आप होते। मै जानती हूं कि यह एक बेमानी बात है। मै वजह नहीं बता सकती, लेकिन मेरे दिल मे यह एतबार पैदा हो गया था कि आप उसे जरूर ठीक कर देंगे। यह बात मै सर रैल्फ के बारे मे महसूस नहीं करती—नही कर सकती। आपने मुझसे वायदा किया था। फिर आपने लुई को क्यों छोड़ दिया ?

रीजन : मैंने तुमको वताया तो था कि मैं कोई नया केस नही ले सकता।

मिसेज डूबेडाट : लेकिन रिशमांड मे तो आप राज़ी हो गए थे ?

रीजन : रिशमांड मे मेरा ख्याल था कि मै एक और मरीज के लिए

जगह निकाल सकूंगा। लेकिन उस जगह का दावा मेरे पुराने दोस्त डा० ब्लेकिसोप ने किया है। उनका एक फेफड़ा सड़ गया है।

मिसेज़ डूबेडाट : (ब्लेकिसोप को कोई महत्व न देते हुए) क्या आपका मतलब उस बूढे आदमी से है—वह जो बेवकूफ किस्म का—

रीजन : (कठोर स्वर मे) मेरा मतलब उन शरीफ बुजुर्ग से है जिन्होंने हमारे साथ दावत मे शिरकत की थी। जो निहायत नेक और ईमानदार इन्सान है और जिनकी जिन्दगी उतनी ही कीमती है जितनी और किसीकी हो सकती है। मैंने यह इन्तजाम किया है कि उनका केस मै लूगा और सर रैल्फ ब्लूमफील्ड बोनिगटन मिस्टर डूबेडाट का केस लेगे।

मिसेज़ डूबेडाट : (क्रोधपूर्वक) मै समझ गई कि बात क्या है। ओह, यह रुकावत सरासर कमीनापन और जुल्म है। और मैंने सोचा था कि आप इन चीजों से ऊपर होगे।

रीजन : तुम्हारा मतलब ?

मिसेज़ डूबेडाट : ओह, क्या आपका ख्याल है कि मै जानती नही ? क्या आप सोचते है कि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ ? आखिर हर आदमी लुई के खिलाफ क्यों हो जाता है ? क्या आप इसके लिए उसको माफ नही कर सकते कि वह आपसे ऊंचे दरजे का इन्सान है ? आपसे ज्यादा होशियार है ? आपसे ज्यादा बहादुर है ? एक अजीम फनकार है ?

रीजन : हां, मै इन सब बातों के लिए उसे माफ कर सकता हूं।

मिसेज़ डूबेडाट : तो फिर आपको उससे क्या कोई और भी शिकायत है ? उसके मुखालिफ बनने वाले हर आदमी को मैंने चुनौती दी

है—चुनौती दी है कि मेरे मुह पर बताएं कि लुई ने क्या कभी कोई गलत काम किया है, या कभी कोई नीच ख्याल ज़ाहिर किया है ? उन्होंने हमेशा कबूल किया कि वे ऐसी एक भी मिसाल नहीं बता सकते । मै अब आपको भी चुनौती देती हूं । आप उसे किस बात के लिए कसूरवार ठहराते है ?

रीजन : मै भी और लोगों की ही तरह हूं । तुम्हारे मुह पर मै भी उसके खिलाफ एक लफ़्ज नही कह सकता ।

मिसेज़ डूबेडाट : (इससे सतुष्ट न होकर) लेकिन आपका रवेया बदल गया है । और आपने अपना वायदा तोड़ दिया है कि आप उसे अपना मरीज बनाने के लिए एक जगह निकालेगे ।

रीजन : मेरा ख्याल है कि तुम थोड़ी ज़्यादती कर रही हो । उसके बारे मे लन्दन के आलातरीन डाक्टरों की सलाह तुम्हे मिल चुकी है, और उसका केस हमारे पेशे के एक रहनुमा ने अपने हाथों मे ले लिया है । बेशक यह सब

मिसेज़ डूबेडाट : ओह, यह सब बार-बार मुझसे कहते जाना बेरहमी है । यह इन्तजाम बिल्कुल ठीक नजर आता है और इससे मै गलत साबित हो जाती हूं । लेकिन मै गलती पर नही हूं । मुझे आपपर एतबार है; औरो पर मुझे वह एतबार नही है । हम लोग इतने डाक्टरों से मिल चुके है । और अब मै आखिरकार इतना तो समझ ही गई हूं कि जब वे बढ़-चढ़कर बाते करते है तब सचमुच वे कर कुछ नहीं सकते । आपकी बात और है । और मैं महसूस करती हूं कि आप भी यह बखूबी जानते हैं । आपको मेरी बात सुननी ही पड़ेगी, डाक्टर । (एकाएक शंकित होकर) आपके खिताब के बगैर सिर्फ डाक्टर पुकारकर कही मैंने आपको

नाराज तो नहीं कर दिया ?

रोजन : कैसी फजूल वात है। मै डाक्टर ही तो हूं। लेकिन ख्याल रखना कि कही वालपोल को डाक्टर न पुकार बैठो।

मिसेज डूबेडाट : मिस्टर वालपोल की मै कतई परवाह नही करती। मै तो सिर्फ आपकी दोस्ती चाहती हूं। ओह, मेहरबानी करके बैठिए और सिर्फ चंद मिनटों तक मेरी बातें सुन लीजिए। (वह गभीर मुद्रा मे उसकी वात मानकर सोफे पर बैठ जाता है और जेनीफर ईज़ल-चेयर पर बैठ जाती है।) शुक्रिया। मै आपको ज्यादा देर तक नही रोकूगी। लेकिन मैं आपको सारी सचाई बता देना चाहती हूं। सुनिए। मै लुई को जितना जानती हूं उतना और कोई दुनिया में उसे नही जानता, न कभी जान सकेगा। मैं उसकी बीवी हूं। मै जानती हूं कि उसके अन्दर कई छोटी-मोटी कमजोरियां है—वेसब्री, नाजुक-मिजाजी या थोड़ी-सी खुदगरजी भी। लेकिन ये कमजोरियां इतनी मामूली हैं कि उसे खुद नजर नहीं आती। मै जानती हूं कि वह कभी-कभी पैसों के मामले मे लोगों को हैरत मे डाल देता है, क्योंकि वह पैसों से बहुत ऊपर उठ चुका है और उसकी समझ में नही आता कि आखिर लोग पैसों को इतनी अहमियत क्यों देते है। मुझे बताइए ; क्या उसने कभी—कभी आपसे भी पैसे मागे है ?

रोजन : उसने एक बार—सिर्फ एक बार कुछ पैसे मागे थे।

मिसेज डूबेडाट : (आंखो मे फिर आंसू छलछला आते है।)—ओह, मुझे इसका सख्त अफसोस है—सख्त अफसोस। लेकिन आगे से वह कभी ऐसा नही करेगा; इसके लिए मै आपको अपना लफ़्ज देती हूं। उसने मुझसे वायदा किया है—आपके आने से पहले,

यहां इसी कमरे में—और वह अपने दिए हुए लफ़्ज को कभी नही तोड़ता। दरअसल उसकी यही सबसे बड़ी कमजोरी थी; लेकिन अब उसने इसपर काबू पा लिया है और हमेशा के लिए इससे नजात पा ली है।

रोजन : क्या सचमुच उसकी सिर्फ यही एक कमजोरी थी ?

मिसेज डूबेडाट : शायद वह औरतों के मामले मे भी अक्सर कमजोरी दिखा बैठता है, क्योंकि औरते उसपर जान देती है और उसको फांसने के लिए जाल बिछाती रहती है। दरअसल बात यह है कि जब वह ऐलान करता है कि वह इखलाक का पैरोकार नही है तो नेकदिल इन्सान कयास करने लगते है कि वह जरूर बदचलन कैरेक्टर का है। आप खुद समझ सकते है—समझते है न—कि ऐसी बातों से उसके बारे मे हर तरह की अफवाहे फैलने लगती है और सरगोशियां शुरू हो जाती है। नतीजा यह होता है कि उसके दोस्त भी उसके मुखालिफ बन जाते है।

रोजन : हां, मै समझता हूं।

मिसेज डूबेडाट : काश, आप उसके अच्छे पहलू को भी उतना ही जानते जितना मै जानती हूं! और शायद आपको यह नही मालूम डाक्टर, कि अगर लुई सचमुच कोई बुरा काम करके अपनी गैरत खो देता तो मै खुदकशी कर लेती।

रोजन : जाने भी दो! इन बातों को इतनी अहमियत नही देनी चाहिए।

मिसेज डूबेडाट : मै जरूर खुदकशी कर लेती। आपकी समझ मे यह बात नही आएगी, आप लोग पूरब के रहने वाले है न!

रोजन : कॉर्नवाल मे तुम्हे दुनिया देखने को तो नही मिली होगी, है न ?

मिसेज़ डूबेडाट : (सरल भाव से) जी हां, रोज ही मैं दुनिया के हसीन और दिलफरेव नज्जारे देखा करती थी—वैसे नज़्ज़ारे तो यहां लन्दन मे रहकर आप कभी देख ही नहीं सकते । मैं बहुत कम लोगों से मिलती-जुलती थी—अगर दुनिया देखने से आपका यह मतलब है तो । मैं घर की अकेली सन्तान थी ।

रीजन : इससे सारी बात साफ हो जाती है ।

मिसेज़ डूबेडाट : मैं बहुत-से सपने देखा करती थी, लेकिन आखिरकार वे सब एक बड़े सपने मे ढल गए ।

रीजन : (आधी निश्वास खीचकर) हां, वही हस्व-मामूल सपना ।

मिसेज़ डूबेडाट : (आश्चर्यचकित होकर) क्या यह हस्व-मामूल है ?

रीजन : मेरा कयास तो यही है । तुमने मुझे अभी तक बताया तो नहीं कि तुम्हारा सपना क्या था ।

मिसेज़ डूबेडाट : मैं अपने आपको जाया नही करना चाहती थी । खुद मेरे अन्दर इतनी काबिलियत नही थी कि कुछ कर सकती, लेकिन मेरे पास थोड़ी-सी जायदाद थी, जिससे मैं इमदाद कर सकती थी । मेरे पास थोड़ा-सा हुस्न भी था, इस जानकारी के लिए मुझे मगरूर न समझ लीजिएगा । मै जानती थी कि जीनियस इन्सानों को शुरू में हमेशा मुफलिसी और बेकदरी से जबर्दस्त जद्दोजेहद करनी पड़ती है । मेरा सपना था कि उनमे से किसी एक को इस जद्दोजेहद से नजात दिला सकू और उसकी तारीक जिन्दगी मे कुछ खुशी और खूबसूरती ला सकू । मैने खुदा से मिन्नते की कि वह मुझे ऐसा जीनियस आर्टिस्ट भेज दे । मेरा यकीन है कि मेरी इन मिन्नतों के जवाब में ही खुदा ने लुई को मेरे पास भेजा है । मैने पहले जितने लोग देखे थे, लुई

उनसे मुख्तलिफ था, उसी तरह जिस तरह कार्निश साहिलों से टेम्स के साहिल की पक्की रविश मुख्तलिफ है। मै जो कुछ देखती थी, वह भी उनको देखता था और मेरे लिए उनकी तस्वीरे बनाता था। वह मेरी सभी तमन्नाओं को समझता था। वह मेरे पास एक मासूम बच्चे की तरह आया। ख्याल कीजिए, डाक्टर, कि वह तो मुझसे कभी शादी भी नहीं करना चाहता था। जिन बातों के बारे में और लोग सोचा करते है, वे उसके दिमाग मे आती ही नही थी! मुझे खुद उससे शादी के लिए कहना पड़ा। इसपर उसने कहा कि उसके पास एक कौड़ी नही है। जब मैने उसे बताया कि मेरे पास थोडी-सी पूजी है तो उसने कहा, 'ओह, तब ठीक', बिल्कुल एक मासूम लडके की तरह। वह आज भी वैसा ही है, साफ दिल, अपने ही तसव्वुरात की दुनिया मे रहनेवाला, अपने सपनों मे एक अजीम शायर और फनकार और वैसे अपने ब्यौहार में निरा बालक। मैने खुद अपने को और जो कुछ मेरे पास था वह सब भी उसपर निसार कर दिया ताकि खुली धूप जैसी मसर्रत के आलम मे उसका कद अपनी पूरी बुलन्दी तक ऊचा उठ सके। अगर उसपर से मेरा भरोसा उठ गया तो यह मेरी जिन्दगी की सबसे बड़ी शिकस्त और बर्बादी होगी। मै तब वापस कॉर्नवाल जाकर मर जाऊंगी। मै आपको पहाड़ की वह चोटी भी दिखा सकती हूं, जहा से छलांग लगाकर मै अपनी जिन्दगी का खात्मा करूंगी। आप उसे अच्छा कर दे। आप उसे मेरी खातिर, मेरे लिए अच्छा कर दीजिए। मैं जानती हू कि सिर्फ आप ही यह कर सकते है, और कोई नही कर सकता। मै आपसे मिन्नते करती हूं कि मेरी दरखास्त

को नामंजूर न करे। लुई को आप खुद ले लें और डाक्टर ब्लेकिसोप के इलाज का जिम्मा सर रैल्फ पर छोड़ें।

रीजन : (धीमे से) मिसेज डूबेडाट, क्या तुम्हें सचमुच मेरी जानकारी और मेरी काबलियत पर इतना भरोसा है, जितना तुम अपनी बातो से ज़ाहिर करती हो ?

मिसेज़ डूबेडाट : एकदम इतना ही। किसीपर आधा-चौथाई भरोसा करना मेरी फितरत मे नही है।

रीजन : यह मुझे मालूम है। खैर फिर भी मैं तुम्हारा इम्तहान लूगा—मुश्किल इम्तहान। क्या तुम मेरे ऊपर यकीन कर सकोगी अगर मैं कहूं कि तुमने अभी जो कुछ कहा है वह सब मै अच्छी तरह समझता हूं और यह कि मेरी ख्वाहिश इसके अलावा और कोई नही कि मै एक वफादार दोस्त की तरह तुम्हारी इमदाद करूं और यह कि मै तहे-दिल से चाहता हूं कि तुम्हारे हीरो को तुम्हारी खातिर जिन्दा रखा जाए।

मिसेज़ डूबेडाट : ओह, मुझे माफ करें। मैंने जो कुछ कहा, उसके लिए मुझे माफ कर दें। आप उसे मेरेलिए जिन्दा रखेंगे ?

रीजन : हर किस्म की जोखिम उठाकर भी। (वह रीजन का हाथ चूम लेती है। वह जल्दी से उठ खड़ा होता है।) नहीं, तुमने अभी पूरी बात नही सुनी। (वह भी उठ खडी होती है।) तुमको मेरी इस बात पर यकीन करना चाहिए कि तुम्हारे हीरो की ज़िन्दगी बचाने का सिर्फ एक ही तरीका है और वह यह कि लुई का केस सर रैल्फ के सुपुर्द कर दिया जाए।

मिसेज़ डूबेडाट : (दृढतापूर्वक) आप ऐसा कहते है ? तो मुझे कोई शक नहीं रहा। मुझे आपपर यकीन है। शुक्रिया।

रीजन : गुडबाई । (वह रीजन का हाथ अपने हाथ मे ले लेती है।) मुझे उम्मीद है कि हमारी दोस्ती हमेशा बरकरार रहेगी ।

मिसेज डूबेडाट : हां, रहेगी । मेरी दोस्तियां मौत के साथ ही खत्म होती है ।

रीजन : मौत सभी चीजों को खत्म कर देती है, है न ? गुडबाई ।

[एक आह भरकर और जेनीफर की ओर दयाभरी दृष्टि से देखते हुए, जो वह समझ नही पाती, वह चला जाता है ।]

चौथा अंक

[स्टूडियो। ईज़ल को सरकाकर दीवार से सटा दिया गया है। सिंहासन के ऊपर कार्डिनल डैथ (यमराज) अपनी दरांती और रेत-घड़ी पकड़े बैठे है, मुकुट और ग्लोब की तरह। हैट रखने के स्टैण्ड पर सर पैट्रिक और ब्लूमफील्ड बोनिंगटन के हैट टंगे है। वालपोल, जो अभी-अभी आया है, उनके पास ही अपना हैट टांग रहा है। दरवाज़े पर दस्तक होती है। वह दरवाजा खोलता है और उसे रीज़न दिखाई देता है।]

वालपोल : हल्लो रीजन !

[दोनों कमरे के बीच, अपने दस्ताने उतारते हुए आते है।]

रीजन : क्या माजरा है ? क्या तुम्हें भी बुलाया गया है ?

वालपोल : हम सबको बुलाया गया है। मैं अभी-अभी आया हूं। मैने अभी उसे नहीं देखा। नौकरानी का कहना है कि बूढ़े पैडी कलेन और बी. बी. आधे घंटे से यहां है। (सर पैट्रिक अन्दर के कमरे से निकलते है। उनके चेहरे पर बुरी खबर की सूचना जैसे लिखी हुई है।) कहिए, क्या बात है ?

सर पैट्रिक : अन्दर जाकर खुद देख लो। बी. बी. वही उसके पास है।

[वालपोल अन्दर के कमरे मे जाता है। रीजन उसके पीछे जाने को होता है, लेकिन सर पैट्रिक नजर के इशारे से उसे रोक देते है।]

रीजन : हुआ क्या है ?

सर पैट्रिक : क्या तुम्हें जेन मार्श की बाह का किस्सा याद है ?

रीजन : तो क्या कुछ वैसा हो-गुजरा है ?

सर पैट्रिक : ठीक वैसा ही हुआ है। जेन की बांह की तरह इसका फेफड़ा भी बेकार हो गया है। मैंने ऐसा केस कभी नही देखा। तीन महीनों मे उसे दिक के जितने दौर आते, उतने तीन दिन में आ चुके है।

रीजन : लगता है बी. बी. ने उसके निगेटिव दौर में टीका लगा दिया।

सर पैट्रिक : निगेटिव हो या पॉजिटिव, लड़के की तो जान गई। तीसरे पहर तक भी वह जिन्दा नही रह सकेगा। यकायक उसका दम निकल जाएगा। मैंने अक्सर ऐसा होते देखा है।

रीजन : उसकी बीवी को पता चलने से पहले ही अगर वह चल बसे तो मुझे इसकी परवाह नही होगी। मैंने ठीक यही तवक्को कर रखी थी।

सर पैट्रिक : (रूखे स्वर मे) यह जरा अफसोस की बात है कि एक लडके को इसलिए जान देनी पड़े क्योंकि उसकी बीवी ने उसके बारे में बहुत ऊंची राय बना रखी है। खुशकिस्मती से हममें से बहुत कम को ऐसी बीविया मिलती हैं।

[सर रैल्फ अन्दर के कमरे से आते है और जल्दी से उनके बीच पहुंच जाते हैं। उनके मुख पर मानवीय चिन्ता का भाव तो है, लेकिन वैसे अपने पेशे की दृष्टि से वे काफी प्रसन्न और संप्रेषक मूड मे हैं।]

बी. बी : आह, रीजन तुम भी आ गए। पैंडी ने तुम्हे सब कुछ बता दिया है न ?

रीजन : हां।

बी. बी. : यह बेहद दिलचस्प केस है। जुपिटर की कसम, कौली, तुमको मालूम है कि अगर साइन्टिफिक मालूमात की बुनियाद पर मै यकीनन यह न जानता कि मैं उसके फैगोसाइट्स को

उकसाता रहा हूं तो शायद मैं भी मान लेता कि मैं दीगर चीजों को उकसाता रहा हूं। आखिर इसकी क्या वजह हो सकती है, सर पैट्रिक ? इसका तुम्हारे पास क्या जवाब है, रीजन ? क्या हमने फैगोसाइट्स को जरूरत से ज़्यादा उकसा दिया है ? कहीं ऐसा तो नहीं कि मुन्तशिर होकर उन्होने सिर्फ बीमारी के जरासीम को ही न खा डाला हो, वल्कि रेड कार्पुसल्स पर हमला करके उन्हें भी बर्बाद कर दिया हो ? मरीज के चेहरे के बदलते हुए रंग से तो ऐसा ही इमकान होता है। और तो और, कहीं उन्होंने अब उसके फेफड़े को भी अपना शिकार तो नही बना लिया ? या खुद एक-दूसरे पर हमलावर तो नही हो गए ? मै इस केस के वारे में जरूर एक मजमून लिखूंगा।

[वालपोल वापस आता है, वहुत गम्भीर, यहा तक कि हैरान भी। वह बी. बी. और रीजन के बीच मे आ जाता है।]

वालपोल : छिः ! बी. बी. ! आखिर इस वार तुमने यह कर ही दिया।

बी. बी. : तुम्हारे कहने का मतलब ?

वालपोल : यही कि उसकी जान ले ली। खून में जहरबाद का इतना बुरा केस मैने नही देखा, जिसके बारे मे इतनी लापरवाही बरती गई है। अब कुछ नही किया जा सकता। अब तो क्लोरोफार्म देते ही उसका दम निकल जाएगा।

बी. बी. : (बुरा मनाकर) जान ले ली ? सच कहता हूं वालपोल कि अगर सबपर यह वाजेह न होता कि तुम्हारे दिमाग मे सिर्फ एक ही खब्त सवार रहता है, तो मै तुम्हारी इस वात पर कोई सख्त कदम उठाने को मजबूर हो जाता।

सर पैट्रिक : जाने भी दो ! जाने भी दो ! जब तुम दोनों भी उतने लोगों की जान ले लोगे, जितनों की जान मैने अपनी जिन्दगी मे ली है, तो इस बारे मे तुम्हारे एहसासात मे ज्यादा हलीमी आ जाएगी । आओ कौली, चलकर उसे देख लो ।

[रीजन और सर पैट्रिक अन्दर के कमरे में जाते है ।]

वालपोल : मै माफी चाहता हूं, बी. बी. । लेकिन यह केस है दर-असल खून मे जहरबाद का ।

बी. बी. (पुनः अपनी प्रसन्न और सरल मुद्रा मे आकर) मेरे अजीज वाल-पोल, हर मर्ज खून मे जहरबाद का ही नतीजा है । लेकिन अपनी रूह की कसम, मै आगे से कभी रीजन के ईजाद किए हुए इस सीरम का इस्तेमाल नही करूंगा । तुमने अभी जो कुछ कहा उसपर मेरे तुनक जाने की वजह सिर्फ यह थी—इसे अपने आप तक ही रखना—कि रीजन ने ही हमारे इस नौज-वान दोस्त की मुर्गी हलाल की है ।

[परेशान और दुःखी, किन्तु हमेशा की तरह मृदु जेनीफर अन्दर के कमरे से निकलकर उनके बीच आ जाती है । वह नर्स का एप्रन पहने हुए है ।]

मिसेज डूबेडाट : सर रैल्फ, बताइए मै क्या करूं ? वह आदमी जिसने मुझसे मिलने की जिद की थी और अन्दर कहलवा भेजा था कि वह लुई की खातिर एक बहुत जरूरी काम से आया है, दरसल एक अखबार का नामानिगार है । आज सुबह के अखबार मे एक पैराग्राफ छपा था कि लुई सख्त बीमार है, और यह आदमी इस बारे मे उससे इन्टरव्यू लेना चाहता है । क्या लोग इतने वहशी और बेरहम भी हो सकते है ?

वालपोल : (दरवाजे की ओर प्रतिहिंसा के भाव से बढ़ता हुआ) फिक्र मत करो, उससे मै निबट लूगा ।

मिसेज़ डूबेडाट : (उसे रोकते हुए) लेकिन लुई उससे मिलने की जिद कर रहा है । वह इसके लिए रोने लग गया । और उसका कहना है कि उसे अपना कमरा बर्दाश्त नही हो रहा । वह कहता है कि वह (अन्दर से उठने वाली सुबकी को दबाने की कोशिश करती है ।) अपने स्टूडियो में मरना चाहता है । सर पैट्रिक की राय है कि उसकी खाहिश पूरी करनी चाहिए । इससे कोई नुकसान नहीं होगा । बताइए, हम क्या करें ?

बी. बी. : (प्रोत्साहन देते हुए) सोचना क्या है, सर पैट्रिक की सलाह पर अमल करो । उनका कहना दुरुस्त है कि इससे उसको कोई नुकसान नहीं होगा । बल्कि इसमें शक नही कि इससे उसको आराम मिलेगा, बहुत ज़्यादा आराम मिलेगा । जगह की तब्दीली से उसको बेहद फायदा होगा ।

मिसेज़ डूबेडाट : (किंचित् प्रसन्न होकर) मिस्टर वालपोल, क्या आप उस आदमी को अन्दर ले आएंगे और उससे कह देंगे कि वह लुई से मुलाकात कर सकता है, लेकिन ज़्यादा बाते करके उसे थकाए नही ? (वालपोल स्वीकृति मे सिर हिलाकर बाहरी द्वार से बाहर जाता है ।) सर रैल्फ, मुझसे नाराज न हो, लेकिन लुई अगर यहां रहा तो मर जाएगा । यह एकदम जरूरी है कि मै उसे कॉर्नवाल ले जाऊं । वहां उसकी सेहत फिर सुधर जाएगी ।

बी. बी. : (एकाएक चेहरे पर चमक आ जाती है, मानो डूबेडाट सचमुच बच गया हो ।) कॉर्नवाल ! उसके लिए वह जगह ही तो सबसे मौज़ू है ! फेफड़ों के लिए निहायत उम्दा । यह मेरी बेवक़ूफी है

कि मुझे इसका पहले ख्याल नहीं आया। आखिरकार तुम्ही उसकी सबसे अच्छी डाक्टर साबित हुई, डियर लेडी। यह एक इलहाम है! कॉर्नवाल; बिलाशक, ठीक, ठीक, ठीक!

मिसेज डूबेडाट : (इस उद्‌गार से सान्त्वना पाकर और द्रवित होकर) आप कितने मेहरबान है, सर रैल्फ! लेकिन मेरी उम्मीदों को बढ़ावा मत दीजिए, नहीं तो मै रो पड़ूगी; और लुई को यह बर्दाश्त नही होगा।

बी. बी. : (कोमलता से अपनी वरद बांह उसके कधो पर रखते हुए) तो चलो उसके पास चले और उसे यहां उठाकर लाने मे मदद करें। कॉर्नवाल! बिलाशक, बिलाशक। ठीक वही तो जगह है!

[दोनों बेडरूम में एक साथ जाते हैं।]

[वालपोल अखबार के नामानिगार के साथ लौटता है। वह एक खुशमिजाज नौजवान है जिसे उसकी एक जन्मजात अक्षमता ने जिन्दगी के साधारण व्यापारों मे काम करने के लिए अयोग्य बना दिया है। वह अक्षमता यह है कि वह जो कुछ देखता है, उसका ठीक-ठीक वर्णन नही कर सकता या जो कुछ सुनता है उसको न समझ सकता है न ठीक-ठीक रिपोर्ट ही कर सकता है। और चूंकि अखबारनवीसी ही एक ऐसा पेशा है, जिसमे व्यक्ति की इन जन्मजात अक्षमताओ की परवाह नही की जाती (क्योकि एक अखबार को चूंकि अपने वर्णनो और रिपोर्टों के मुताबिक अमल नही करना पडता, बल्कि उन्हे सिर्फ उत्सुक लोगों के हाथ बेचना भर होता है इसलिए गलत वर्णनो और झूठी रिपोर्टों से उसका अपनी इज्जत के अलावा और कुछ नही खोता) इसलिए मजबूरन उसे एक जर्नलिस्ट बनना पडा और अब उसे अपनी अशिक्षा की सीमाओ और कच्ची नौकरी के खतरो से नित्य प्रति संघर्ष करते हुए अपने उत्साह को कायम रखना पडता है। उसके हाथ मे एक नोट-बुक है, जिसमे वह कभी-कभी

है तो वह तुम वेकर स्ट्रीट से नुमायां हस्तियों की किसी भी सीरीज मे पा जाओगे।

नामानिगार : लेकिन वे लोग दाम मागेंगे। अगर आपको एतराज न हो तो (कैमरा खोलता है।)

वालपोल : मुझे जरूर है। कैमरा अलग रखो, सुना तुमने ? अव यहां वैठ जाओ और खामोश रहो।

[नामानिगार फौरन प्यानो वाले स्टूल पर वैठ जाता है। उसी समय मिसेज डूवेडाट और सर रैल्फ डूवेडाट की पहियों वाली वीमारों की कुर्सी को ठेलते हुए अन्दर लाते हैं। वे कुर्सी को मच और सोफे के वीच में खडा कर देते हैं, जहा पहले ईजल रखा था। वीमारी से लुई मे कोई परिवर्तन नही हुआ है, जैसा कि किसी भी मोटे-ताजे आदमी मे अवश्य हो जाता। और वह घवराया हुआ भी नही दीखता। उसकी आखें पहले से वड़ी दिखाई देती हैं और वह शरीर से इतना कमजोर हो गया है कि हिल भी नही सकता और गद्दियो के वीच वह पूरी तरह श्लथ लेटा हुआ है। लेकिन उसका दिमाग चैतन्य है। वह अपने दिमाग से अपनी रुग्ण अवस्था की अतिरंजित कल्पनाएं कर रहा है। अपनी क्लान्ति मे उसे वासना का उन्माद और मृत्यु मे एक नाटक का अभिनय-सा दिखाई देता है। रीजन को छोडकर, जो निर्दयता की मूर्ति वना हुआ है, और सभी अत्यन्त प्रभावित हो रहे हैं। वी. वी. तो पूरी तरह सहानुभूतिपूर्ण हैं और उसके सव कसूर माफ करने की मूड मे हैं। रीजन वीमार की कुर्सी के पीछे-पीछे दूध और सजीवनी दवाओ की ट्रे लेकर आता है। सर पैट्रिक, जो उसके साथ ही आते हैं, कोने से तिपाई उठाकर ट्रे रखने के लिए कुर्सी के पीछे रख देते हैं। वी. वी. ईज़ल-चेयर को उठाकर डूवेडाट की वगल मे, मच के पास, जहा से मूर्ति मरणासन्न कलाकार की ओर आख फाडकर देख रही है, जेनीफर के लिए रख देते हैं। इसके वाद वी. वी. डूवेडाट के वाईं ओर आ जाते हैं। जेनीफर वैठ जाती है। वालपोल मंच के किनारे वैठ जाता

है। रीजन उसके पास खड़ा रहता है।]

लुई : (आनन्दातिरेक से) इसीका नाम तो खुशी है। स्टूडियों मे होना ! खुशी !

मिसेज डूबेडाट : हां, डियर। सर पैट्रिक का कहना है कि तुम यहां जब तक चाहो रह सकते हो।

लुई : जेनिफर।

मिसेज डूबेडाट : हां डार्लिग।

लुई : क्या वह अखबार का नामानिगार यहा है ?

नामानिगार : (वाचाल ढग से) जी हां, मिस्टर डूबेडाट ! मै यहा हूं, आपकी खिदमत मे हाज़िर हूं। मै प्रेस का नुमायन्दा हूं। मैने सोचा कि शायद आप हमे कुछ लफ़्जों में अपनी-अपनी-अर-जी हां कुछ लफ़्जों मे अपनी बीमारी का हाल बताएंगे और फिर इस मौसम के लिए अपने प्रोग्राम की इत्तला देगे।

लुई : इस मौसम के लिए मेरा प्रोग्राम निहायत सीधा-सादा है। मैं मरने जा रहा हूं।

मिसेज डूबेडाट : (यंत्रणा पाकर) लुई डीयर…

लुई : डार्लिग ! मै बहुत कमजोर और थका हुआ हू। अब मुझसे यह बहाना करने की खौफनाक मेहनत तो न करवाओ कि जैसे मुझे कुछ मालूम ही नही। मै वहा लेटा हुआ डाक्टरों की बातें सुनता रहा हूं—और मन ही मन हंसता भी रहा हूं। वे जानते हैं। रोओ मत, मेरी जान। रोने से तुम्हारी शक्ल विगड़ जाती है और मै यह बर्दाश्त नहीं कर सकता। (वह अपनी आखे पोंछ लेती है और एक जबर्दस्त कोशिश करके अपने को सुस्थिर करती है।)

…। हूं कि तुम मुझसे एक वायदा करो।

कुछ नोट करने की कोशिश करता है, लेकिन चूंकि उसे शॉर्ट हैण्ड मे लिखना नही आता और वैसे भी कुछ लिखना नही आता इसलिए वह अक्सर पूरा वाक्य लिखने से पहले ही लिखने के काम को व्यर्थ समझकर छोड देता है।]

अखबार का नामानिगार : (चारो ओर देखते हुए नोट लेने की अनिश्चित कोशिशो के बाद) मेरे ख्याल मे यह स्टूडियो है।

वालपोल : जी हां।

नामानिगार : (व्यग्यपूर्वक) जहां पर उसकी मॉडेल आती है, है न ?

वालपोल : (कठोर स्वर में निरुत्साहित करते हुए) बेशक।

नामानिगार : आपने कहा, वह क्यूबीकल है न ?

वालपोल : जी हा, टुबर्कल है।

नामानिगार : आप इसको कैसे लिखते है, यह सी-यू-बी-आई-सी-ए-एल है या सी-एल-ई ?

वालपोल : लफ्ज टुबर्कल है हज़रत, क्यूबीकल नहीं। (उसे हिज्जे करके बताता है) टी-यू-बी-ई-आर-सी-एल-ई।

नामानिगार : ओह ! टुबर्कल। किसी बीमारी का नाम है, शायद। मेरा ख्याल था कि उसे तपेदिक है। आप घर के आदमी हैं या डाक्टर हैं ?

वालपोल : मै दोनों मे से कोई नही। मेरा नाम है मिस्टर कटलर वालपोल। यह नोट कर लो। साथ मे एक नाम और नोट कर लो, सर कोलेन्जो रीजन।

नामानिगार : पीजन ?

वालपोल : रीजन (उपेक्षापूर्वक उसकी नोट बुक छीनते हुए) इधर लाओ। मैं सारे नाम तुम्हारे लिए लिखे देता हूं, नही तो तुम सब गलत

कर जाओगे। एक नाखांदा पेशे का आदमी होने की वजह से ही, जिसमे न लियाकत की पूछ होती है न पब्लिक रजिस्टर रखा जाता है, ऐसी धांधली चलती है। (वह सबके नाम आदि लिखता है।)

नामानिगार : अजी, मेरा ख्याल है, आप हम अखबारी नुमायन्दों को अपनी मुट्ठी में रखते है, है न ?

वालपोल : (प्रतिहिंसात्मक भाव से) काश ऐसा होता तो मै तुम्हे बेहतर इन्सान बना देता। अब जरा गौर से देखो। (उसे नोटबुक दिखाता हुआ) ये तीनो डाक्टरो के नाम हैं। यह मरीज का नाम है। यह उसका पता है। यह वीमारी का नाम है। (वह एक झटके से नोटवुक को वन्द करके, जिससे नामानिगार की आख झपक जाती है, उसे वापस कर देता है।) मिस्टर डूबेडाट को अभी इस कमरे मे लाया जाएगा। वह तुमसे इसलिए मिलना चाहते है कि उन्हें अभी तक यह नही मालूम कि उनकी हालत कितनी नाजुक है। उनको खुश करने के लिए हम तुम्हे कुछ वक्त के लिए इस कमरे मे रहने देगे, लेकिन अगर तुमने उनसे बात करने की कोशिश की तो फौरन निकाल वाहर करेंगे। किसी वक्त भी उनकी मौत हो सकती है।

नामानिगार : (दिलचस्पी दिखाते हुए) तो उनकी हालत इतनी खराब है ? अच्छा जी, तब तो मैं आज बहुत खुशनसीब हू। मै आपका एक फोटो खीच लू तो इसमें आपको एतराज तो नही होगा ? (एक कैमरा निकालता है।) क्या आप अपने हाथ मे नश्तर या कोई ऐसी ही चीज पकड़ लेगे ?

वालपोल : कैमरा अलग रखो। तुम्हे अगर मेरे फोटोग्राफ की जरूरत

है तो वह तुम बेकर स्ट्रीट से नुमायां हस्तियों की किसी भी सीरीज में पा जाओगे।

नामानिगार : लेकिन वे लोग दाम मांगेंगे। अगर आपको एतराज न हो तो (कैमरा खोलता है।)

वालपोल : मुझे जरूर है। कैमरा अलग रखो, सुना तुमने ? अब यहां बैठ जाओ और खामोश रहो।

[नामानिगार फौरन प्यानो वाले स्टूल पर बैठ जाता है। उसी समय मिसेज़ डूवेडाट और सर रैल्फ डूवेडाट की पहियो वाली बीमारों की कुर्सी को ठेलते हुए अन्दर लाते हैं। वे कुर्सी को मंच और सोफे के बीच मे खडा कर देते हैं, जहा पहले ईजल रखा था। बीमारी से लुई मे कोई परिवर्तन नही हुआ है, जैसा कि किसी भी मोटे-ताज़े आदमी मे अवश्य हो जाता। और वह घबराया हुआ भी नही दीखता। उसकी आंखे पहले से बड़ी दिखाई देती है और वह शरीर से इतना कमज़ोर हो गया है कि हिल भी नही सकता और गद्दियो के बीच वह पूरी तरह श्लथ लेटा हुआ है। लेकिन उसका दिमाग चैतन्य है। वह अपने दिमाग से अपनी रुग्ण अवस्था की अतिरंजित कल्पनाएं कर रहा है। अपनी क्लान्ति मे उसे वासना का उन्माद और मृत्यु मे एक नाटक का अभिनय-सा दिखाई देता है। रीजन को छोडकर, जो निर्दयता की मूर्ति बना हुआ है, और सभी अत्यन्त प्रभावित हो रहे हैं। बी. बी. तो पूरी तरह सहानुभूतिपूर्ण है और उसके सब कसूर माफ करने की मूड मे हैं। रीजन बीमार की कुर्सी के पीछे-पीछे दूध और संजीवनी दवाओ की ट्रे लेकर आता है। सर पैट्रिक, जो उसके साथ ही आते हैं, कोने से तिपाई उठाकर ट्रे रखने के लिए कुर्सी के पीछे रख देते हैं। बी. बी. ईज़ल-चेयर को उठाकर डूवेडाट की बगल मे, मंच के पास, जहां से मूर्ति मरणासन्न कलाकार की ओर आंख फाडकर देख रही है, जेनीफर के लिए रख देते हैं। इसके बाद बी. बी. डूवेडाट के बाईं ओर आ जाते हैं। जेनीफर बैठ जाती है। वालपोल मंच के किनारे बैठ जाता

है। रीजन उसके पास खड़ा रहता है।]

लुई : (आनन्दातिरेक मे) इसीका नाम तो खुशी है। स्टूडियों मे होना ! खुशी !

मिसेज़ डूबेडाट : हां, डियर। सर पैट्रिक का कहना है कि तुम यहां जब तक चाहो रह सकते हो।

लुई : जेनिफर।

मिसेज़ डूबेडाट : हां डार्लिंग।

लुई : क्या वह अखबार का नामानिगार यहां है ?

नामानिगार : (वाचाल ढंग से) जी हां, मिस्टर डूबेडाट ! मैं यहा हूं, आपकी खिदमत मे हाजिर हूं। मै प्रेस का नुमायन्दा हूं। मैंने सोचा कि शायद आप हमे कुछ लफ़्जों मे अपनी-अपनी-अर-जी हां कुछ लफ़्ज़ों में अपनी बीमारी का हाल बताएंगे और फिर इस मौसम के लिए अपने प्रोग्राम की इत्तला देंगे।

लुई : इस मौसम के लिए मेरा प्रोग्राम निहायत सीधा-सादा है। मैं मरने जा रहा हूं।

मिसेज़ डूबेडाट : (यंत्रणा पाकर) लुई डीयर ··

लुई : डार्लिंग ! मै बहुत कमजोर और थका हुआ हूं। अब मुझसे यह बहाना करने की खौफनाक मेहनत तो न करवाओ कि जैसे मुझे कुछ मालूम ही नही। मै वहा लेटा हुआ डाक्टरों की बातें सुनता रहा हूं—और मन ही मन हंसता भी रहा हूं। वे जानते है। रोओ मत, मेरी जान। रोने से तुम्हारी शक्ल बिगड़ जाती है और मै यह बर्दाश्त नही कर सकता। (वह अपनी आखें पोंछ लेती है और एक ज़बर्दस्त कोशिश करके अपने को सुस्थिर करती है।) मै चाहता हूं कि तुम मुझसे एक वायदा करो।

मिसेज डूबेडाट : अच्छा, अच्छा। तुम जानते हो कि मैं कैसा भी वायदा करने से इन्कार नही करूंगी। (मिन्नत करती हु:) बस मेरे प्यारे, मेरे प्यारे, बोलो मत्। इससे तुम्हारी ताकत जाया होती है।

लुई : नही ; बोलना सिर्फ मेरी रही-सही ताकत को इस्तेमाल कर लेगा। रीजन, मुझे कुछ देर तक जिन्दा रखने के लिए कोई दवा दो—अगर बुरा न मानो तो अपना वह बेहूदा एण्टी-टॉक्सिन मत देना।

रीजन : (सर पैट्रिक की ओर देखता हुआ) मेरे ख्याल में इससे कोई नुकसान तो नही होगा ? (वह थोड़ी-सी स्पिरिट उडेलता है और उसमें सोडावाट्र मिलाने ही वाला होता है कि सर पैट्रिक उसकी गलती सुधारते हैं।)

सर पैट्रिक : दूध मे दो। उसे खांसी का दौरा मत पड़ने दो।

लुई : (पीने के बाद) जेनीफर।

मिसेज डूबेडाट : हा, डियर।

लुई : दुनिया मे अगर मै किसी चीज़ को सबसे ज़्यादा नफरत करता हूं तो बेवा औरत को। मुझसे वायदा करो कि तुम कभी बेवा नही बनोगी।

मिसेज डूबेडाट : माई डियर, क्या मतलब है तुम्हारा ?

लुई : मै चाहता हूं कि तुम हमेशा खूबसूरत दिखाई दो। चाहता हूं कि लोग तुम्हारी आंखों मे यह देख सके कि तुम्हारी मुझसे शादी हुई थी। इटली के लोग दान्ते की ओर इशारा करके कहा करते थे, 'यह वह शख्श है, जो दोजख मे रह आया है।' मैं चाहता हूं कि लोग तुम्हारी ओर इशारा करके कहें, 'यह लड़की

जन्नत में रह चुकी है।' हमारी जिन्दगी जन्नत ही है, डार्लिंग, है न—कभी-कभी तो ?

मिसेज़ डूबेडाट : हां, हा। हमेशा, हमेशा।

लुई : तुम अगर काले मातमी कपड़े पहनोगी और रोओगी तो लोग कहेगे, 'देखो, उस दुखियारी औरत को देखो। उसके खाविन्द ने उसे दुखी बनाया है।'

मिसेज़ डूबेडाट : नही, हर्गिज नही। तुम मेरी जिन्दगी की रोशनी और बरकत हो। तुम्हे जानने से पहले मैने जिन्दगी का सुख कभी देखा ही नही था।

लुई : (उसकी आखें चमकने लगती हैं।) तो फिर तुम हमेशा खूबसूरत पोशाके और जवाहरात पहनना। उन शानदार तस्वीरों के ख्वाब देखना जो अब मैं पेन्ट नही कर सकूगा। (वह बडी मुश्किल से सुबकी दबाती है।) देखो, उन सारी तस्वीरों की खूबसूरती तुम्हारे हुस्न में ढल जानी चाहिए। तुम्हें एक नजर देखने भर से लोगों को ऐसे-ऐसे ख्वाब आए जैसे रंगों और ब्रशों से बनाई किसी तस्वीर को देखकर कभी न आ सके। आर्टिस्ट तुम्हारी ऐसी तस्वीरे पेन्ट करे जैसी आज तक किसी औरत की पेन्ट नहीं की गई। खूबसूरती की एक अजीम मिसाल कायम हो, हुस्न और मोहब्बत की एक फिजां पैदा हो। लोग जब मेरे बारे में सोचे तब उनके दिल मे यही ख्याल उठे। इस तरह की अमरता का ही मै ख्वाहिशमन्द हूं। यह अमरता मुझे सिर्फ तुम ही दिला सकती हो, जेनीफर। ऐसी वहुत-सी बाते है जो तुम नहीं समझती, पर जिन्हे राह चलती हर औरत समझती है। लेकिन तुम जो कुछ समझ और कर सकती हो, वह और कोई नहीं

कर सकती । मुझे यह अमरता देने का वायदा करो । वायदा करो कि तुम रोना-पीटना, मातम, जनाजा, कब्र और मुरझाए फूलों का दोजख खड़ा करने की बेहूदी हरकत नही करोगी ।

मिसेज़ डूबेडाट : मै वायदा करती हूं, लेकिन इन सब बातों का वक्त अभी बहुत दूर है, डीयर । अभी तो तुम मेरे साथ कॉर्नवाल चलकर अपनी सेहत ठीक करोगे । सर रैल्फ ने यही सलाह दी है ।

लुई : बेचारे बुजुर्ग बी. बी. !

बी. बी. : (आसू छलक आते हैं । मुह फेरकर सर पैट्रिक के कान मे फुस-फुसाते हुए) बेचारा ! इसका दिमाग फेल हो रहा है ।

लुई : सर पैट्रिक, आप यहा हैं न ?

सर पैट्रिक : हा, हां, मै यही हूं ।

लुई : क्या आप बैठेंगे नही ? आपको खड़ा रहना पड़े, यह बड़े शर्म की बात है ।

सर पैट्रिक : अच्छा, अच्छा, शुक्रिया, मै बैठ जाता हूं ।

लुई : जेनीफर ।

मिसेज़ डूबेडाट : हां, डीयर ।

लुई : (खुशी की एक अजब झलक आंखो में आ जाती है ।) तुम्हें उस जलती हुई झाड़ी की याद है ?

मिसेज़ डूबेडाट : हां, हां ! ओह, डियर, उसकी याद अब मेरे दिल को कितनी तकलीफ देती है !

लुई : क्या सच ? लेकिन मेरे दिल में उसकी याद एक खुशी भर देती है । मुझे उसके बारे में बताओ ।

मिसेज़ डूबेडाट : बात कुछ नही थी—सिर्फ एक बार अपने पुराने कॉर्निश घर मे हमने सरदियों की पहली आग जलाई थी; और

जब हमने खिड़की से बाहर झांका तो देखा कि बगीचे की एक झाड़ी में आग की लपटें नाच रही है।

लुई : क्या शानदार रंग था उन लपटों का ! गार्नेट का रंग। लपटें रेशमी लहरों की तरह हिल रही थी। लॉरल की पत्तियों के बीच से लपटों का दरिया बह रहा था, पत्तियों को जलाए बगैर ही। खैर, मैं भी वैसी ही लपट बनूगा। छोटे-मोटे कीड़ों को मायूसी होगी, इसका मुझे अफसोस है, लेकिन मेरे आखिरी जर्रे जलती हुई झाड़ी की लपट बनेगे। जेनीफर, तुम्हें जब कभी लपट दिखाई दे तो समझ लेना कि वह मै हू। वायदा करो कि तुम मुझे दफन न करके चिता पर जला दोगी।

मिसेज डूबेडाट : आह, मुझे भी अपने साथ लपट बनने दो, लुई !

लुई : नही। जब झाड़ी मे लपट उठे, उस वक्त तुम्हें बगीचे मे होना चाहिए। इस दुनिया पर तुम्ही मेरी गिरफ्त हो, तुम्हीं मेरी अमरता हो। वायदा करो।

मिसेज डूबेडाट : मै सुन रही हूं। भूलूगी नही। तुम जानते हो कि मैने वायदा कर लिया है।

लुई : तो बस मुझे इतना ही कहना था, सिर्फ एक बात और कि मेरी तस्वीरों की नुमायश मे सिर्फ तुम ही उन तस्वीरों को टांगना। मुझे तुम्हारी नजर पर पूरा भरोसा है। किसी और को मेरी तस्वीरें मत छूने देना।

मिसेज डूबेडाट : तुम इसके लिए मुझपर एतबार कर सकते हो।

लुई : तो फिर और किसी बात की फिक्र बाकी नही रह जाती, है न ? मुझे थोड़ा-सा वह दूध और दो। मै बेहद थक गया हूं। लेकिन अगर मै बोलना बंद कर दू तो फिर दुबारा शुरू नहीं

कर पाऊंगा। (सर रैल्फ उसे दूध देते है। वह एक विचित्र दृष्टि से उनकी ओर देखता है।) अमां, सुनते हो बी. बी., क्या कोई चीज तुम्हारा बोलना वद करवा सकती है ?

बी. बी. : (एकदम घबराकर) वह पहचानने मे गलती कर रहा है। हम दोनों मे फर्क नही कर पा रहा, पैडी। बेचारा, बेचारा।

लुई : (सोचते हुए) पहले मै मौत से बेहद डरता था, लेकिन अब ऐसा हो गया है कि मुझे डर ही नहीं लगता, और मै निहायत खुश हूं। जेनीफर !

मिसेज डूबेडाट : हां, डियर ?

लुई : मै तुम्हें एक राज बताता हूं। मै सोचा करता था कि हमारी शादी महज एक दिखावा है और मै किसी दिन इसके जाल को तोड़कर भाग जाऊंगा। लेकिन आज जब यह जाल टूटने लगा है, मेरे चाहने न चाहने के बावजूद, तो मै तुम्हे तहे दिल से चाहने लगा हूं और पूरी तरह से मुतमईन हूं क्योंकि अब मै अपनी झगडालू शख्सियत की बजाय तुम्हारे एक जुज की शक्ल मे जिन्दा रहूंगा।

मिसेज डूबेडाट : (दिल टूट जाने से बिलखकर) मेरे पास रहो, लुई। हाय मुझे छोडकर मत जाओ, प्यारे।

लुई : मैं खुदगर्ज नही हूं। अपनी सारी खामियों के बावजूद, मेरा ख्याल है, मैं सचमुच कभी खुदगर्ज नही रहा। कोई आर्टिस्ट नहीं हो सकता। आर्ट खुदगर्जी से कही बुलन्दतर चीज है। तुम फिर से शादी कर लेना, जेनीफर।

मिसेज डूबेडाट : ओह, तुम कैसे यह बात कह सकते हो, लुई ?

लुई : (बच्चे की तरह हठ करके) हां, क्योंकि जिन लोगों को शादी में

सुख नसीब हुआ है, वे हमेशा फिर से शादी कर लेते है । आह, मैं रश्क नही करूंगा । (चालाकी से) लेकिन उस दूसरे आदमी से मेरे वारे मे ज्यादा बातें कभी न करना । वह पसन्द नही करेगा । (चटखारे लेते हुए) मै हमेशा तुम्हारा हकीकी आशिक बना रहूगा, लेकिन यह राज उससे छिपाकर रखना, बेचारा !

सर पैट्रिक : बस ! तुम बहुत बोल लिए, अब कुछ देर आराम करो ।

लुई : (थकान से चूर होकर) हां, मै बेहद थक गया हूं, लेकिन मै अभी हमेशा के लिए आराम की नीद सोने जा रहा हू । इससे पहले मुझे आप दोस्तों से भी कुछ कहना है । आप लोग सभी यहां पर मौजूद है, है न ? मै इतना कमज़ोर हूं कि जेनीफर के सीने के अलावा और कुछ नही देख सकता । वहा मुझे आराम मिलेगा, यह इसका सबूत है ।

रीजन : हम सब लोग यहां मौजूद है ।

लुई : (चौंककर) इस आवाज मे शैतानियत की गूज थी । होशियार रीजन; मेरे कान उन बातो को भी सुन रहे है, जिन्हे औरों के कान हर्गिज नही सुन सकते । मै सोचता रहा हूं—सोचता रहा हूं । मैं जितना होशियार हूं उसका तुम कयास भी नही कर सकते ।

सर पैट्रिक : (रीजन से फुसफुसाकर) तुमसे उसको चिढ हो गई है, कौली । अच्छा हो कि तुम चुपचाप यहां से खिसक जाओ ।

रीजन : (अलग सर पैट्रिक से) क्या आप मरते हुए ऐक्टर को उसके नाजिरीन से महरूम कर देना चाहते है ?

लुई : (उसका चेहरा एक वदमाशी भरी खुशी से चमक उठता है ।) रीजन, मैने तुम्हारी बात सुन ली । यह बहुत अच्छा हुआ । जेनीफर डियर, रीजन के साथ हमेशा मेहरबान रहना, क्योकि यह आखिरी

आदमी है जिसने मेरी दिलजोई की है।

रीजन : (निष्ठुरतापूर्वक) क्या मैंने ?

लुई : लेकिन यह सच नही है। दरअसल अभी भी स्टेज पर तो तुम्हीं लोग हो। मैं तो घर का आधा रास्ता तय कर चुका।

मिसेज़ डूबेडाट : (रीजन से) आपने क्या कहा था ?

लुई : (उसको उत्तर देते हुए) कुछ नही, डियर। सिर्फ एक छोटा-सा राज़ था जिसे मर्द अपने आप तक ही महदूद रखते है। खैर, आप सब दोस्त मेरे बारे मे बहुत सख्त बातें सोचते रहे हैं, और उन बातों को मेरे मुह पर कह भी चुके है।

बी. बी. : (बेहद द्रवित होकर) नहीं, नही, डूबेडाट। ऐसी कोई बात नही है।

लुई : जी हां, ऐसी ही बात है। मैं जानता हूं कि आप लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं। यह ख्याल मत कीजिए कि मै इससे नाराज़ हूं। मै आप लोगों को माफ करता हूं।

वालपोल : (अपने आप) लानत गिरे मेरे ऊपर (शर्मिन्दा होकर) मैं तुमसे माफी मागता हू।

लुई : यह असली वालपोल था, मै पहचानता हूं। गम न करो, वालपोल; मै बेहद खुश हू। मुझे कोई दर्द या तकलीफ नहीं है। मै बस और ज़िन्दा नही रहना चाहता। मै खुद अपने आपसे पनाह लेकर निकल आया हूं। मै अब बहिश्त मे हूं, अपनी खूबसूरत जेनीफर के दिल मे हमेशा के लिए जिन्दा हूं। मुझे डर नही है और न मैं शर्मिदा ही हूं। (सोचते हुए, जैसे क्लान्तिपूर्वक कोई पहेली सुलझा रहा हो।) मुझे पूरा एहसास है कि अपनी ज़िन्दगी के फानी दौर में से जद्दोजेहद करके गुज़रते हुए मैं इत्तिफाकन

अपने नस्बुलऐन के मुताबिक नही चल पाया हूं। लेकिन अपनी निजी, असली दुनिया मे, मैने कभी किसीके साथ बुराई नहीं की, कभी अपने अकीदे से नही हटा, कभी अपने साथ बेईमानी नहीं की। जिन्दगी मे मुझे धमकिया दी गई, धोखे दिए गए, मेरी बेइज़्जती की गई और मुझे फाके करने पड़े। लेकिन मैं अपने उसूलों पर कायम रहा। मै बहादुरी से लड़ता रहा। और अब यह सारा खेल खत्म हो गया और मेरी जिन्दगी में एक नाकाबिले बयान अमन और सकून छा गया है। (क्लान्तिपूर्वक वह अपने हाथ पकडता है और अपने नस्बुलऐन का ऐलान करता है।) मेरा यकीन माइकेल एंजेलो मे है, मेरा यकीन वेलास्क और रैम्ब्रां मे है; मेरा यकीन एक बुलन्दतरीन डिज़ाइन, रंगों के जादू और जिन्दा और जावेद जलाल के जरिए हर चीज़ को अमरता देने मे है, मेरा यकीन आर्ट के उस पैगाम मे है जिसने इन हाथों को बरकत बख्शी है। आमीन। आमीन। (आखें बन्द करके खामोश हो जाता है।)

मिसेज़ डूबेडाट : (धक से रहकर) लुई, क्या तुम··

[वालपोल उठकर तेज़ी से यह देखने के लिए आगे वढ़ता है कि वह कही मर तो नही गया।]

लुई : अभी नही, डियर। वक्त अनकरीब है, लेकिन अभी नहीं। मैं तुम्हारे सीने पर सिर रखकर आराम करना चाहता हूं; लेकिन तुम थक जाओगी।

मिसेज़ डूबेडाट : नहीं, नही, नही, डार्लिंग। तुम्हारी वजह से क्या मैं थक सकती हू ? (वह उसका सिर उठाती है और अपने सीने पर रख लेती है।)

सर पैट्रिक : (शान्त, विश्वासपूर्ण स्वर में) हां, वह बिल्कुल ठीक है। उसको मत छेड़ो। वह वापस आ जाएगी।

रीजन : (निर्ममतापूर्वक) उसके वापस आने से पहले ही हमे इस चीज़ को यहां से हटा देना चाहिए।

बी. बी · (उठते हुए, स्तम्भित होकर) क़ौली, मेरे अजीज! यह बेचारा! कितनी शानदार मौत पाई है, इसने!

सर पैट्रिक : अरे भाई, वदकार लोगों की मौत शानदार ही होती है।

क्योंकि उनकी मौत बैण्ड-वाजों के साथ नही होती;
लेकिन उनकी क़ूवतें बरकरार रहती हैं :
और लोगों की तरह उनकी रूह परेशान नहीं रहती।

कोई वात नही। उसका इन्साफ करना हमारा काम नहीं है। वह अब दूसरी दुनिया में पहुंच चुका है।

वालपोल : शायद वहां अब किसीसे पहली बार पांच पौण्ड का नोट उधार मांग रहा होगा।

रीजन : उस दिन मैंने कहा था कि डाक्टर का बीमार होना शायद दुनिया मे सबसे तकलीफदेह चीज है। लेकिन मैंने गलती की। दरअसल सबसे तकलीफ देह चीज यह है कि एक आदमी वैसे तो जीनियस हो, लेकिन साथ मे इखलाक से गिरा हुआ हो।

[वालपोल और रीजन कुर्सी को ठेलकर मेहराब के अन्दर ले जाते हैं।]

नामानिगार : (सर रैल्फ से) मुझे लगा कि उसने निहायत नेक जजबे का इजहार किया था, जब उसने इस बात पर जोर दिया कि उसकी बीवी माकूल ढंग से मातम मनाए और वायदा करे कि फिर कभी शादी नहीं करेगी।

बी. बी. : (रौब से) मिसेज़ डूब्रेडाट इस हालत मे अब इस इन्टरव्यू को जारी नही रख सकती। और न हम लोग ही।

सर पैट्रिक : आदाबअर्ज।

नामानिगार : मिसेज डूबेडाट ने तो कहा था कि वे अभी वापस आएंगी।

बी. बी : तुम्हारे जाने के बाद।

नामानिगार : आपके ख्याल से क्या वे थोड़े-से लफ़्ज़ों मे मुझे बता सकेगी कि बेवा होने पर कैसा महसूस होता है ? यह एक मजमून का बडा अच्छा उनमान बन सकता है, है न ?

बी. बी. : सुनो ऐ नौजवान, मिसेज डूब्रेडाट के वापस आने तक अगर तुम यही रहे तो तुम यकीनन इस उनमान से एक मजमून लिखने लायक हो जाओगे कि घर से निकाले जाने पर कैसा महसूस होता है। समझे ?

नामानिगार : (अभी भी विश्वास न करके) आपका ख्याल है कि वे यह नही

बी. बी : (तपाक से उसकी बात काटते हुए) अच्छा, आदाबअर्ज़। (अपना विजिटिंग कार्ड थमाते हुए) ख्याल रखना कि मेरा सही-सही नाम ही छपे। आदाबअर्ज।

नामानिगार : आदाबअर्ज़। शुक्रिया। (अस्पष्ट रूप से कार्ड को पढने की कोशिश करते हुए) मिस्टर—

बी. बी : नही, मिस्टर नही। यह लो, शायद यह तुम्हारा हैट है। (देते हुए) दस्ताने भी हैं ? नही, खैर दस्ताने तो नहीं ही होंगे ; अच्छा आदाबअर्ज। (वह उसे पीछे ठेलते हुए आखिरकार कमरे से बाहर निकाल देते हैं। दरवाजा बन्द कर देते हैं और सर पैट्रिक के पास

लुई : यह बहुत आरामदेह है। सचाई यह है।

मिसेज डूबेडाट : अपना पूरा वजन छोड़ दो, डार्लिंग। सच कहती हूं, मै थकूगी नही। मेरे ऊपर अपना पूरा भार देकर लेट जाओ।

लुई : (एकाएक उसकी आधी शक्ति और चेतना लौट आती है।) जिन्नी-गिवन्नी! मुझे लगता है कि मै आखिरकार अच्छा हो ही जाऊंगा। (सर पैट्रिक रीजन की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखकर, इशारे से आगाह करते है कि उसका आखिरी वक्त आ गया।)

मिसेज डूबेडाट : (आशापूर्वक) हां, हा, तुम जरूर अच्छे हो जाओगे।

लुई : क्योंकि मुझे यकायक नीद आ गई है। मामूली किस्म की नींद।

मिसेज डूबेडाट : (हलकोरे देते हुए) हां, डीयर सो जाओ। (लगता है जैसे वह सो गया हैं। वालपोल फिर आगे बढकर देखने की कोशिश करता है। जेनीफर प्रतिवाद करती है।) श्-श्! प्लीज, इसकी नीद मे खलल मत डालो। (उसके ओठ हिलते है।) तुमने क्या कहा, डीयर? (अत्यन्त दारुण यातना से) इसे सोने से हटाए बगैर मै कुछ भी नही सुन सकती। (उसके ओठ फिर हिलते हैं। वालपोल झुककर सुनता है।)

वालपोल : वह पूछ रहा है कि अखबार का नुमायन्दा अभी यहां है या चला गया।

नामानिगार : (उत्साहपूर्वक, क्योकि वह इस बीच खूब आनन्द लेता रहा है।) जी हा, मिस्टर डूबेडाट, मै हाजिर हूं।

[वालपोल हाथ के इशारे से उसको चुप रहने की ताकीद करता है। सर रैल्फ खामोशी से बैठ जाते है और विना लिहाज किए रूमाल

मे अपना मुह छिपा लेते हैं ।]

मिसेज़ डूबेडाट : (निश्चिन्ततापूर्वक) ओह, यह ठीक है डीयर। मेरी फिक्र न करो। मेरे ऊपर अपना पूरा भार छोड़ दो। हां, अब तुम सचमुच आराम कर रहे हो।

[सर पैट्रिक तेजी से आगे बढ़कर लुई की नाडी देखते हैं, फिर उसके कंधे पकडकर]

सर पैट्रिक : इसे फिर तकिए पर लिटाने दें, मदाम। उस हालत में इसे ज्यादा आराम मिलेगा।

मिसेज़ डूबेडाट : (दयनीय भाव से) ओह, नही, प्लीज, प्लीज, डाक्टर। इसकी वजह से मै थकी नहीं हूं। और फिर जब वह जागेगा तो, यह देखकर कि उसे मेरी गोद से हटा दिया गया है, वह बहुत दुखी होगा।

सर पैट्रिक : अब वह नही जागेगा। (वे उससे लुई के शरीर को लेकर कुर्सी मे लिटा देते हैं। रीजन, विना करुणाद्रवित हुए ही, कुर्सी की पीठ को नीचे गिराकर उसकी अर्थी बना देता है।)

मिसेज़ डूबेडाट : (जो अप्रत्याशित रूप से उछलकर खडी हो गई है और अश्रुरहित नेत्रों से एक राजसी शालीनता से देख रही है।) क्या यह मौत थी?

वालपोल : हां।

मिसेज़ डूबेडाट : (आत्मगौरव और शालीनता से) क्या आप लोग एक लमहा मेरा इन्तजार करेंगे? मै अभी आ जाऊंगी। (वह बाहर चली जाती है।)

वालपोल : क्या हमे उसके पीछे जाना चाहिए? क्या उसका दिमाग ठीक-ठिकाने है?

सर पैट्रिक : (शान्त, विश्वासपूर्ण स्वर में) हां, वह बिल्कुल ठीक है। उसको मत छेड़ो। वह वापस आ जाएगी।

रीजन : (निर्ममतापूर्वक) उसके वापस आने से पहले ही हमे इस चीज़ को यहां से हटा देना चाहिए।

बी. बी : (उठते हुए, स्तम्भित होकर) कौली, मेरे अजीज! यह बेचारा! कितनी शानदार मौत पाई है, इसने!

सर पैट्रिक : अरे भाई, बदकार लोगों की मौत शानदार ही होती है।

क्योंकि उनकी मौत बैण्ड-बाजों के साथ नही होती;
लेकिन उनकी कूवतें बरकरार रहती है :
और लोगों की तरह उनकी रूह परेशान नही रहती।

कोई बात नही। उसका इन्साफ करना हमारा काम नही है। वह अब दूसरी दुनिया में पहुंच चुका है।

वालपोल : शायद वहां अब किसीसे पहली बार पांच पौण्ड का नोट उधार मांग रहा होगा।

रीजन : उस दिन मैंने कहा था कि डाक्टर का बीमार होना शायद दुनिया मे सबसे तकलीफदेह चीज है। लेकिन मैंने गलती की। दरअसल सबसे तकलीफ देह चीज यह है कि एक आदमी वैसे तो जीनियस हो, लेकिन साथ में इखलाक से गिरा हुआ हो।

[वालपोल और रीजन कुर्सी को ठेलकर मेहराब के अन्दर ले जाते है।]

नामानिगार : (सर रैल्फ से) मुझे लगा कि उसने निहायत नेक जज़बे का इजहार किया था, जब उसने इस बात पर जोर दिया कि उसकी बीवी माकूल ढंग से मातम मनाए और वायदा करे कि फिर कभी शादी नहीं करेगी।

बी. बी. : (रौब से) मिसेज़ डूब्रेडाट इस हालत मे अब इस इन्टरव्यू को जारी नही रख सकती। और न हम लोग ही।

सर पैट्रिक : आदाबअर्ज।

नामानिगार : मिसेज डूबेडाट ने तो कहा था कि वे अभी वापस आएगी।

बी. बी : तुम्हारे जाने के बाद।

नामानिगार : आपके ख्याल से क्या वे थोड़े-से लफ्जों मे मुझे बता सकेंगी कि बेवा होने पर कैसा महसूस होता है ? यह एक मजमून का बड़ा अच्छा उनमान बन सकता है, है न ?

बी. बी. : सुनो ऐ नौजवान, मिसेज़ डूब्रेडाट के वापस आने तक अगर तुम यही रहे तो तुम यकीनन इस उनमान से एक मजमून लिखने लायक हो जाओगे कि घर से निकाले जाने पर कैसा महसूस होता है। समझे ?

नामानिगार : (अभी भी विश्वास न करके) आपका ख्याल है कि वे यह नही

बी. बी : (तपाक से उसकी बात काटते हुए) अच्छा, आदाबअर्ज़। (अपना विज़िटिंग कार्ड थमाते हुए) ख्याल रखना कि मेरा सही-सही नाम ही छपे। आदाबअर्ज़।

नामानिगार : आदावअर्ज़। शुक्रिया। (अस्पष्ट रूप से कार्ड को पढने की कोशिश करते हुए) मिस्टर—

बी. बी : नही, मिस्टर नही। यह लो, शायद यह तुम्हारा हैट है। (देते हुए) दस्ताने भी हैं ? नही, खैर दस्ताने तो नहीं ही होंगे; अच्छा आदाबअर्ज। (वह उसे पीछे ठेलते हुए आखिरकार कमरे से बाहर निकाल देते हैं। दरवाजा बन्द कर देते हैं और सर पैट्रिक के पास

इन्सान को एक न एक दिन मरना पड़ता है, रीजन ! तुम चाहे जो कहो, वालपोल, कुदरत का कर्ज तो चुकाना ही पड़ेगा। आज नहीं तो कल।

कल और कल और कल
जिन्दगी का बुखार उतरते ही वे अमन की नीद सो गए है
और इस नाबूद सरहद की तरह जिससे
कोई रह-रौ वापस नही आता,
इन्तशार के निशां भी मिट गए है

[वालपोल बोलने को होता है, लेकिन बी. बी. एकाएक और गरमजोशी से उसको चुप कर देते हैं।]

गुल हो जा, गुल हो जा, ऐ शमा-ए फ़ानी
ग़मे-रोजगारे-अजल मे तू और इजाफ़ा कर नहीं सकती;
खुशी से जली, जलती रही, इतना ही काफी है।

वालपोल : (कोमलतापूर्वक; क्योकि बी. बी. की भावनाए इतनी सच्ची और मानवीय हैं कि उनका मजाक नही उड़ाया जा सकता।) बी. बी., ठीक फरमाते है आप। सचमुच मौत लोगों पर ऐसा ही असर डालती है। क्यों ऐसा असर डालती है, यह तो मै नही जानता, लेकिन डालती है जरूर। खैर, अब बताइए कि हम लोग क्या करे ? क्या हमें यहां से खिसक जाना चाहिए, या फिर यहां रुककर देखे कि मिसेज डूबेडाट वापस आती भी है या नही ?

सर पैट्रिक : मेरे ख्याल मे हम लोगों का यहां से चल देना ही बेहतर होगा। सफ़ाई करने वाली औरत को हम बता जाएंगे कि उसे पीछे क्या करना चाहिए।

[सब लोग अपने हैट उठाकर दरवाजे की तरफ बढ़ते है।]

मिसेज डूबेडाट : (अन्दर के कमरे से बेहद खूबसूरत ढंग से सज-धजकर निकलती है । बेहद खुश नज़र आ रही है और एक कढाई किया हुआ रेशम का बड़ा-सा शाल बांह मे लटकाए है ।) मुझे अफसोस है कि आप लोगों को मेरी खातिर इतनी देर इन्तजार करना पड़ा ।

सर पैट्रिक	आश्चर्यचकित,	कोई बात नहीं है, मदाम ।
बी. बी.	सभी एक साथ	कतई नही, कतई नही ।
रीजन	घबराकर	फिक्र न कीजिए ।
वालपोल	बडबड़ाते हैं ।	मामूली-सी बात है, बहुत मामूली ।

मिसेज डूबेडाट : (उनके पास आती हुई) मुझे ऐसा महसूस हुआ कि आज बिछुड़ने से पहले मुझे उसके दोस्तों से एक बार हाथ जरूर मिला लेना चाहिए । हम सब एक वाहिद खुशी और खुश-किस्मती मे हिस्सेदार रहे हैं । मेरा ख्याल नही कि अब हम कभी फिर अपने को मामूली किस्म का इन्सान समझ सकेंगे । हम एक शानदार तजुर्बे से गुजरे है, जिसने हमे एक सांझा यकीदा, एक साझा मकसद अता किया है, जो और किसीको हासिल नही हो सकता । अब जिन्दगी हमारी नजर मे हमेशा एक खूब-सूरत चीज बनी रहेगी, मौत भी हमारी नजर मे हमेशा एक खूबसूरत अंजाम बनी रहेगी । क्या इस बात पर हम लोग हाथ मिलाएंगे ?

सर पैट्रिक : (हाथ मिलाते हुए) याद रखिए; सारे खत और कागजात अपने वकील के हाथों मे सौंप दीजिए । वही सबको खोलेगा और सब बाते तय करेगा । यही कानून है, जानती है न ।

मिसेज डूबेडाट : ओह, शुक्रिया । मुझे मालूम नही था । (सर पैट्रिक जाते है ।)

लौट आते है। इतने में रीजन और वालपोर्ल भी मेहराव से निकलकर आ जाते हैं। वालपोल कमरा पार करके हैट उठाने के लिए बढता है और रीजन सर रैल्फ और सर पैट्रिक के वीच आ जाता है।) बेचारा ! बेचारा नौजवान ! कितनी शान से मरा है। मुझे महसूस होता है कि इसके बाद मै एक बेहतर इन्सान बन गया हूं, सचमुच।

सर पैट्रिक : जब तुम मेरी उम्र को पहुंचोगे, तब तुम भी समझ जाओगे कि इससे जरा भी फर्क नहीं पडता कि कोई कैसे मरता है। जो चीज वाकई अहम है वह यह कि कोई कैसे जीता है। आजकल हर अहमक गोली खाकर हीरो वन जाता है, क्योकि वह मुल्क की खातिर जांन देता है। लेकिन वह किसी बड़े मकसद को सामने रखकर मुल्क की खातिर जीने की कोशिश क्यो नही करता ?

बी. बी. : नहीं पैडी, उस गरीब लड़के से इतनी नाराजगी मत दिखाओ। कम से कम इस वक्त नही। आखिरकार, वह क्या सचमुच इतना बुरा था ? उसकी सिर्फ दो कमजोरिया थी, पैसा और औरत। पैडी सच कहना। रीजन, ढोंग रचने की कोशिश मत करना। अपना नकाब उतारकर बताना वालपोल ! क्या इन दोनों बातों का निजाम आजकल इतना माकूल है कि हस्बमामूल रास्तों पर न चलने का सिर्फ एक ही मतलब होता है कि आदमी बदकार और बदफेल है ?

वालपोल : मुझे इस बात से शिकायत नही कि वह हस्बमामूल रास्तों को छोडकर चला। हस्बमामूल रास्तों को फेको भाड़ में। एक साइन्सदा की नजर मे ये हस्बमामूल रास्ते नफरतअगेज चीजें है, चाहे उनका ताल्लुक पैसों से हो या औरत से। मुझे जिस

बात से शिकायत है, वह यह कि वह अपनी जेब और अपनी खुशी के आगे और किसी चीज़ की रत्तीभर परवाह नहीं करता था। अगर उसका मतलब हल होता तो उसे हस्ब-मामूल रास्तों पर चलने से भी इन्कार नही होता। क्या उसने हमे अपनी तस्वीरें मुफ्त दी है ? अगर उसकी बीवी से मेरी आशनाई हो जाती तो क्या आप सोचते हैं कि वह मुझे धमका कर रकम ऐंठने की कोशिश न करता ?

सर पैट्रिक : बहरहाल उसके बारे मे झगड़ा करके अपना वक्त क्यों ज़ाया करते हो। बदमाश तो बदमाश ही रहेगा, और ईमानदार आदमी हमेशा ईमानदार रहेगा। और दोनों के पास अपना रद्दे अमल दुरुस्त साबित करने के लिए मजहब और इखलाक के असूलों की कभी कमी नही रहेगी। कौमों पर भी यही बात लागू होती है, पेशों पर भी और सारी दुनिया की यही हकीकत है और हमेशा रहेगी।

बी. बी : आह, खैर, शायद, शायद, शायद। फिर भी मरहूम इंसान की हमेशा तारीफ ही करनी चाहिए। वह बड़ी शान से मरा, बहुत अच्छे ढंग से। उसने हमारे लिए एक मिसाल कायम कर दी है; बेहतर हो कि हम उस मिसाल पर चलने की कोशिश करें, न कि उन कमजोरियों को कोसते जाएं, जो उसके साथ ही फना हो गईं। मेरा ख्याल है, शायद यह शेक्सपियर ने ही कहा है कि अक्सर लोग जो अच्छाई करते है, वह तो उनके बाद भी जिन्दा रहती है, लेकिन उनकी बुराइयां उनकी हड्डियों के साथ ही दफन हो जाती है। जी हां, हड्डियों के साथ दफन हो जाती है। सच कहता हूं पैडी, हम सबकी ज़िन्दगी फानी है। हर

इन्सान को एक न एक दिन मरना पड़ता है, रीजन ! तुम चाहे जो कहो, वालपोल, कुदरत का कर्ज तो चुकाना ही पड़ेगा। आज नहीं तो कल।

कल और कल और कल
जिन्दगी का बुखार उतरते ही वे अमन की नीद सो गए हैं
और इस नाबूद सरहद की तरह जिससे
कोई रह-रौ वापस नही आता,
इन्तशार के निशां भी मिट गए है

[वालपोल बोलने को होता है, लेकिन वी. वी. एकाएक और गरमजोशी से उसको चुप कर देते हैं।]

गुल हो जा, गुल हो जा, ऐ शमा-ए फ़ानी
ग़मे-रोजगारे-अजल मे तू और इजाफ़ा कर नहीं सकती;
खुशी से जली, जलती रही, इतना ही काफी है।

वालपोल : (कोमलतापूर्वक; क्योंकि वी. वी. की भावनाए इतनी सच्ची और मानवीय हैं कि उनका मज़ाक नही उड़ाया जा सकता।) वी. वी., ठीक फरमाते है आप। सचमुच मौत लोगों पर ऐसा ही असर डालती है। क्यों ऐसा असर डालती है, यह तो मै नही जानता, लेकिन डालती है ज़रूर। खैर, अब बताइए कि हम लोग क्या करे ? क्या हमे यहां से खिसक जाना चाहिए, या फिर यहां रुककर देखे कि मिसेज डूबेडाट वापस आती भी है या नही ?

सर पैट्रिक : मेरे ख्याल मे हम लोगो का यहां से चल देना ही बेहतर होगा। सफाई करने वाली औरत को हम बता जाएंगे कि उसे पीछे क्या करना चाहिए।

[सब लोग अपने हैट उठाकर दरवाजे की तरफ बढते है।]

मिसेज डूबेडाट : (अन्दर के कमरे से बेहद खूबसूरत ढंग से सज-धजकर निकलती है । बेहद खुश नज़र आ रही है और एक कढाई किया हुआ रेशम का बड़ा-सा शाल बांह मे लटकाए है ।) मुझे अफसोस है कि आप लोगों को मेरी खातिर इतनी देर इन्तजार करना पड़ा ।

सर पैट्रिक	आश्चर्यचकित,	कोई बात नही है, मदाम ।
बी. बी.	सभी एक साथ	कतई नही, कतई नही ।
रीजन	घबराकर	फिक्र न कीजिए ।
वालपोल	बड़बडाते हैं।	मामूली-सी बात है, बहुत मामूली ।

मिसेज डूबेडाट : (उनके पास आती हुई) मुझे ऐसा महसूस हुआ कि आज बिछुड़ने से पहले मुझे उसके दोस्तों से एक बार हाथ जरूर मिला लेना चाहिए । हम सब एक वाहिद खुशी और खुश-किस्मती में हिस्सेदार रहे हैं । मेरा ख्याल नही कि अब हम कभी फिर अपने को मामूली किस्म का इन्सान समझ सकेंगे । हम एक शानदार तजुर्बे से गुजरे है, जिसने हमे एक सांझा यकीदा, एक सांझा मकसद अता किया है, जो और किसीको हासिल नही हो सकता । अब जिन्दगी हमारी नजर में हमेशा एक खूब-सूरत चीज बनी रहेगी, मौत भी हमारी नजर मे हमेशा एक खूबसूरत अंजाम बनी रहेगी । क्या इस बात पर हम लोग हाथ मिलाएंगे ?

सर पैट्रिक : (हाथ मिलाते हुए) याद रखिए; सारे खत और कागज़ात अपने वकील के हाथों में सौप दीजिए । वही सबको खोलेगा और सब बातें तय करेगा । यही कानून है, जानती है न ।

मिसेज डूबेडाट : ओह, शुक्रिया । मुझे मालूम नही था । (सर पैट्रिक जाते है ।)

वालपोल : गुडबाई । मै खुद अपने को कसूरवार ठहराता हूं । मुझे चाहिए था कि मै ऑपरेशन के लिए जोर देता । (जाता है ।)

बी. बी. : मै माकूल आदमियों को भेज दूगा । उन्हें मालूम है कि इस वक्त क्या-क्या करना चाहिए । आपको जरा भी परेशानी नही उठानी होगी । गुडबाई, डीयर लेडी । (जाता है ।)

रीजन : गुडबाई (हाथ मिलाने को अपना हाथ आगे वढाता है ।)

मिसेज डूबेडाट : (एक शाही अदा से पीछे हटते हुए) मैने तो सिर्फ उसके दोस्तों से हाथ मिलाने की बात कही थी, सर कोलेन्जो । (वह झुककर अभिवादन करके चला जाता है ।)

[वह रेशम के विशाल शॉल को खोलती है और मेहराव में रखे शव को ढकने के लिए आगे वढ़ता है ।]

पांचवां अंक

[बौंड स्ट्रीट की पिक्चर गैलरियों मे से एक छोटी गैलरी। तस्वीरों की एक दुकान से इसमे दरवाज़ा खुलता है। गैलरी के करीब-करीब बीच में लिखने की एक मेज़ रखी है, जिसके सहारे फैशनेबल कपडे पहने हुए एक सेक्रेटरी, दरवाज़े की ओर पीठ किए बैठा कैटेलॉग (चित्रो का सूची-पत्र) के प्रूफों का संशोधन कर रहा है। मेज़ पर किसी एक नई किताब की कुछ प्रतियां और सेक्रेटरी का चमकीला हैट और आतिशी शीशो की एक जोड़ी रखी है। बगल मे, उसके बाईं ओर, उससे किंचित् पीछे हटकर एक छोटा-सा दरवाज़ा है, जिसपर 'प्राइवेट' लिखा है। उसके पास ही दीवारों से समानान्तर एक गद्दीदार बेंच, है। दीवारो पर डूबेडाट की चित्र-कृतियां टगी है। दरवाज़े के दाईं और बाईं ओर के कोनों के पास दो स्क्रीन खड़े हैं, जिनपर भी उसके चित्र लटके है।

अत्यन्त शानदार पोशाक मे और अत्यन्त प्रसन्न और समृद्ध-सी दिखाई देती हुई, जेनीफर प्राइवेट दरवाज़े से अन्दर आती है।]

जेनीफर : क्या कैटेलॉग आ गए, मिस्टर डैन्बी ?

सेक्रेटरी : जी, अभी नही आए।

जेनीफर : कितने शर्म की बात है ! सवा बज गए। और आधे घंटे में प्राइवेट नुमायश शुरू हो जाएगी।

सेक्रेटरी : मेरा ख्याल है कि मै खुद भागकर छापने वालों के यहा जाऊं और उन्हे जल्दी करने के लिए कहूं।

जेनीफर : ओह, आप अगर इतनी मेहरबानी करे तो क्या बात है मिस्टर डैन्बी। आपके पीछे मैं आपकी जगह बैठ जाऊंगी।

सेक्रेटरी : देखिए, अगर कोई वक्त से पहले आ जाए तो आप उसकी ओर तवज्जह मत दीजिएगा। गुमाश्ता किसी अजनबी को अन्दर नही दाखिल होने देगा। फिर भी बुलाए हुए लोगों मे कुछ ऐसे भी है जो हमेशा भीड़ से पहले पहुंचना पसन्द करते है—ऐसे लोग जो दरअसल तस्वीरें खरीदते है, और उनके आने से हमे वाकई खुशी हासिल होगी। क्या आपने ब्रश, क्रेयोन और ईजल वगैरह अखबारों मे इस नुमायश की चर्चा पढ़ ली है ?

जेनीफर (क्रोधपूर्वक) हां, निहायत वेहूदा किस्म की। उन्होंने हिम्मत-अफजाई करने वाले अन्दाज मे लिखा है मानो मिस्टर डूवेडाट से उनका मरतवा वहुत ऊंचा है। यह सव उन सारे सिगारों और सैण्डविचेज के वावजूद जो उन्होंने प्रेस-डे के दिन हमसे पाए थे और इतनी शराव भी तो पी थी। वाकई मेरी राय मे उनका इस अन्दाज मे लिखना एक शर्मनाक हरकत है। मुझे उम्मीद है कि आपने आज की नुमायश के टिकट उन लोगों को नही भेजे होंगे।

सेक्रेटरी : ओह, वे लोग अव फिर नही आएंगे; आज उन्हे लंच जो नही दिया जा रहा। देखिए, आपकी किताव की कुछ पेशगी कापियां आ गई है। (वह नई कितावों की ओर इशारा करता है।)

जेनीफर : (एक प्रति पर झपटते हुए पागलो की तरह उत्तेजित होकर) एक मुझे दीजिए। ओह ! माफ करे, अभी आई। (प्रति उठाकर प्राइवेट दरवाजे से भीतर भाग जाती है।)

[सेक्रेटरी मेज की दराज मे से एक शीशा निकालकर वाहर जाने से पहले अपना हुलिया ठीक करता है। रीजन भीतर आता है।]

रीजन : गुड मॉर्निंग। क्या मै चारों ओर घूमकर तस्वीरें देख सकता हूं, मेरा मतलब है, दरवाजे खुलने से पहले ?

सेक्रेटरी : शौक से, सर कोलेन्जो। मुझे अफसोस है कि कैटेलॉग छपकर अभी तक नही आए। मै उनके लिए ही बाहर जा रहा हूं। आपको एतराज न हो तो, मेरी फेहरिस्त का इस्तेमाल करे।

रीजन : शुक्रिया। यह क्या है ? (नई किताबो की एक प्रति उठाता है।)

सेक्रेटरी : यह अभी छपकर आई है। अपने मरहूम खाविन्द की जिन्दगी के बारे मे यह मिसेज डूब्रेडाट की किताब की कुछ पेशगी कापिया है।

रीजन : (पुस्तक का शीर्षक पढते हुए) 'इन्सानों के बादशाह की कहानी : उसकी बीवी की जबानी' (वह पुस्तक में दी गई डूब्रेडाट की तस्वीर देखता है।) अये, यह रही हजरत की तस्वीर। आप लोग उसे यहां जानते थे न ?

सेक्रेटरी : ओह, हम उसे खूब जानते थे। शायद कुछ मानों में हम उसे उसकी बीवी से भी ज्यादा जानते थे, सर कोलेन्जो।

रीजन : और शायद मै भी। (दोनों एक दूसरे को अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हैं।) मै जरा एक बार इन तस्वीरों पर नजरसानी कर लूं।

[सेक्रेटरी अपना चमकीला हैट उठाकर बाहर चला जाता है। रीजन तस्वीरो का मुआयना करना शुरू कर देता है। फिर वह लौटकर आतिशी शीशा उठाने के लिए मेज तक आता है और उसकी मदद से किसी तस्वीर को बहुत गौर से देखने लगता है। वह आह भरता है और सिर हिलाता है, मानो अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी कृति के विलक्षण आकर्षण और कलात्मक सौंदर्य को स्वीकारने के लिए विवश हो गया

फहमी नही होनी चाहिए। वह खुद इतने लम्बे अरसे तक प्राइवेट डाक्टर रहे है। छोड़ो इन बातों को, तुम काफी देर तक घूमा-फिराकर बोल चुकी। अब सीधे मुझसे बातें करो। तुम किसी बात के लिए मेरी लानत-मलामत करना चाहती हो। यह मलामत तुम्हारे चेहरे से जाहिर है, तुम्हारी आवाज से जाहिर है। दर-असल तुम लानत-मलामत करने के जजबे से भरी बैठी हो। तुम्हारे मन में जो है, उसे उगल डालो

जेनीफर : लानत-मलामत करने का वक्त गुजर चुका। मुड़ने के बाद जब मेरी निगाह आपपर पड़ी तो मै यह सोचकर हैरत मे रह गई कि आखिर आपको इतने ठंडे दिल से यहां आकर उसकी तस्वीरे देखने की ताब कैसे हुई ? आपने खुद ही इसका जवाब भी दे दिया। आपके नजदीक वह सिर्फ एक चालाक दरिन्दा था।

रीजन : (कापते हुए) ओह, ऐसा मत सोचो। तुम जानती हो कि मै इस वात से आगाह नही था कि तुम यहां मौजूद हो।

जेनीफर : (गर्व के कोमल आवेश से अपना सिर किंचित् उठाते हुए) आपका ख्याल है कि चूंकि मैने आपकी राय सुन ली, इसलिए वह मेरे लिए ज़्यादा मायने रखती है। मानो आपकी राय मुझे चोट पहुंचा सकती है, या उसको चोट पहुंचा सकती है। क्या आपको यह नजर नही आता कि जो चीज दरअसल भयानक और अफसोस-नाक है वह यह कि आप जिन्दा लोगों मे इन्सान की रूह नही है।

रीजन : (विशेष ढग से कंधे झटककर) रूह एक ऐसा जुज हैं जो मुझे जिस्म की चीर-फाड़ करने के दौरान आज तक देखने को नहीं मिला।

जेनीफर : आप बखूवी जानते है कि आप सिवाय उस औरत के

जिसके दिमाग से आपको नफरत है, और किसीके सामने ऐसी बेहूदी और अहमकाना बात कहने की जुर्रत नही करेंगे। आप अगर मेरे जिस्म की चीर-फाड़ करे तो आपको वहा मेरा जमीर ढूढे भी नही मिलेगा। तो आपका ख्याल है कि मेरे अन्दर जमीर है ही नहीं ?

रीजन : मैने ऐसे लोग देखे है, जिनके अन्दर जमीर होता ही नही।

जेनीफर : चालाक दरिन्दे न ? लेकिन डाक्टर, क्या आप यह जानते हैं कि जिन्दगी मे मुझे जो सबसे प्यारे और वफादार दोस्त मिले है, वे सभी दरिन्दे थे। आप शायद उन्हे चीर-फाड़कर देखते। मेरे सबसे अजीज और नजदीकी दोस्तों में एक ऐसा हसीन जमाल और प्यार भरा अपनापा था, जो सिर्फ दरिन्दों मे ही मिलता है। काश आपको कभी वह गम न सहना पड़े जो मुझे सहना पड़ा, जब मैंने उसको उन इन्सानों के हाथों मे सौंप दिया जो सिर्फ इसलिए जानवरों पर जुल्म-तशद्दुद करने की हिमायत करते है, क्योंकि वे बेचारे दरिन्दे है।

रीजन : खैर, तो क्या तुमने हम सभी को सचमुच इतना बेरहम और जालिम पाया ? लोगो का कहना है कि अगर्चे तुमने मुझसे मिलना-जुलना तर्क कर दिया है, लेकिन तुम ब्लूमफील्ड बोनिंगटन और वालपोल के यहां हफ्तों कयाम करती रही हो। मेरे ख्याल मे यह बात सच ही होगी, क्योंकि वे लोग अब मुझसे कभी तुम्हारा जिक्र नही करते।

जेनीफर : सर रैल्फ के घर के जानवर बिगडे हुए बच्चों की तरह है। मिस्टर वालपोल को जब अपने मैस्टिफ के पंजे मे से शीशे का टुकड़ा निकालना था उस वक्त खुद मुझे उस कुत्ते को पकड़ना

है। फिर सेक्रेटरी की फेहरिस्त मे निशान लगाता है। तस्वीरों का आगे मुआयना करते हुए वह स्क्रीन के पीछे गायब हो जाता है। जेनीफर अपनी किताब लिए हुए वापस आती है। चारों ओर एक दृष्टि घुमाकर वह सन्तोष कर लेती है कि वहां पर उसके सिवा और कोई नहीं है। कुर्सी पर बैठकर वह अपने सस्मरणो की पुस्तक को खोलती है—जो उसकी पहली प्रकाशित कृति है—आनन्द-विभोर हो जाती है और जी भरकर प्रशंसात्मक दृष्टि से उसकी ओर निहारती है। दीवार की ओर मुंह किए हुए चित्रो का मुआयना करता हुआ रीजन स्क्रीन के पीछे से पुनः प्रकट होता है। आतिशी शीशे से चित्र को एक वार ध्यान से देखने के वाद वह पीछे हटता है ताकि बडे चित्रो को दूर से देख सके। आवाज़ सुनते ही जेनीफर फौरन किताव वन्द कर देती है, निगाह घुमाकर देखती है और रीजन को पहचानकर स्तभित रह जाती है और उसकी ओर जडवत् घूरती है। रीजन एक कदम और पीछे हटता है। इस प्रकार स्पष्टतया उसके और निकट आ जाता है।]

रीजन : (पहले की तरह सिर हिलाते हुए सहसा बोल पड़ता है।) चालाक दरिन्दा ! (जेनीफर एकदम पीली पड़ जाती है, मानो रीजन ने उसको एक तमाचा मारा हो। वह आतिशी शीशे को मेज़ पर रखने के लिए पीछे मुडता है और जेनीफर की टकटकी वंधी दृष्टि का सामना करता है।) माफ करना, मेरा ख्याल था कि मै यहां अकेला हूं।

जेनीफर : (अपने आपको भरसक काबू मे रखते हुए, संयत और अर्थपूर्ण शब्दो में) मुझे खुशी है कि हम फिर मिले हैं, सर कोलेन्जो। कल डाक्टर ब्लेकिंसोप से मेरी भेंट हुई थी। मै आपको इस शानदार और कामयाब इलाज पर मुबारक देती हूं।

रीजन : (किन शब्दो मे उत्तर दे, यह समझ मे नही आता। एक क्षण की खामोशी के वाद सकपकाते हुए स्वीकृति-सूचक मुद्रा में सिर हिलाता है और मेज़ पर आतिशी शीशा और सेक्रेटरी की फेहरिस्त रख देता है।

जेनीफर : डाक्टर ब्लेंकिसोप सेहत, ताकत और खुशहाली की जिन्दा तस्वीर दिखाई देते थे। (वह कुछ देर तक ब्लेंकिसोप की खुशकिस्मती और आर्टिस्ट की बदकिस्मती का मुकाबला करते हुए दीवार की ओर देखती है।)

रीजन : (धीमे स्वर मे सकपकाहट से) इसमे शक नही, वह खुशनसीब निकले।

जेनीफर : हद से ज्यादा खुशनसीब। उनकी जिन्दगी बच गई।

रीजन : मेरा मतलब है कि उन्हे मेडिकल ऑफिसर आफ हैल्थ बना दिया गया है। उन्होंने जिला कौंसिल के चेयरमैन का कामयाबी से इलाज किया था।

जेनीफर : आपकी दवाइयों से न ?

रीजन : नही। मेरा ख्याल है, शायद एक पौण्ड हरे बेरों से।

जेनीफर : (पूरी संजीदगी से) अजीबोगरीब बात है !

रीजन : हां। लोगों की मौत से जिन्दगी का अजीबोगरीबपना कम नही हो जाता, जिस तरह उनकी हसी-खुशी से जिन्दगी का रंजोगम नही मिट जाता।

जेनीफर : डाक्टर ब्लेंकिसोप ने मुझसे एक अजब बात कही थी।

रीजन : कौन-सी बात ?

जेनीफर : उन्होंने कहा कि दवाइयो की प्राइवेट प्रैक्टिस को कानूनन बंद कर देना चाहिए। जब मैने इसकी वजह दरियाफ्त की तो उन्होने बताया कि प्राइवेट डाक्टर निरे जाहिल और लाइसेन्स-शुदा हत्यारे होते हैं।

रीजन : पब्लिक डाक्टर तो हमेशा प्राइवेट डाक्टरों के बारे मे ऐसा ही सोचते है। खैर, ब्लेंकिसोप को तो कम से कम ऐसी गलत-

फहमी नही होनी चाहिए। वह खुद इतने लम्बे अरसे तक प्राइवेट डाक्टर रहे है। छोड़ो इन बातों को, तुम काफी देर तक घूमा-फिराकर वोल चुकी। अब सीधे मुझसे वाते करो। तुम किसी बात के लिए मेरी लानत-मलामत करना चाहती हो। यह मलामत तुम्हारे चेहरे से जाहिर है, तुम्हारी आवाज से जाहिर है। दर-असल तुम लानत-मलामत करने के जजबे से भरी बैठी हो। तुम्हारे मन मे जो है, उसे उगल डालो।

जेनीफर : लानत-मलामत करने का वक्त गुज़र चुका। मुड़ने के वाद जब मेरी निगाह आपपर पड़ी तो मै यह सोचकर हैरत मे रह गई कि आखिर आपको इतने ठंडे दिल से यहां आकर उसकी तस्वीरे देखने की ताब कैसे हुई ? आपने खुद ही इसका जवाब भी दे दिया। आपके नजदीक वह सिर्फ एक चालाक दरिन्दा था।

रीजन : (कांपते हुए) ओह, ऐसा मत सोचो। तुम जानती हो कि मै इस वात से आगाह नही था कि तुम यहा मौजूद हो।

जेनीफर : (गर्व के कोमल आवेश से अपना सिर किंचित् उठाते हुए) आपका ख्याल है कि चूकि मैने आपकी राय सुन ली, इसलिए वह मेरे लिए ज़्यादा मायने रखती है। मानो आपकी राय मुझे चोट पहुंचा सकती है, या उसको चोट पहुंचा सकती है। क्या आपको यह नजर नही आता कि जो चीज दरअसल भयानक और अफसोस-नाक है वह यह कि आप जिन्दा लोगो मे इन्सान की रूह नहीं है।

रीजन : (विशेष ढग से कंधे झटककर) रूह एक ऐसा जुज है जो मुझे जिस्म की चीर-फाड़ करने के दौरान आज तक देखने को नही मिला।

जेनीफर : आप बखूबी जानते है कि आप सिवाय उस औरत के..

जिसके दिमाग से आपको नफरत है, और किसीके सामने ऐसी बेहूदी और अहमकाना बात कहने की जुर्रत नही करेगे। आप अगर मेरे जिस्म की चीर-फाड़ करें तो आपको वहा मेरा जमीर ढूंढे भी नही मिलेगा। तो आपका ख्याल है कि मेरे अन्दर जमीर है ही नहीं ?

रीजन : मैने ऐसे लोग देखे है, जिनके अन्दर जमीर होता ही नही।

जेनीफर : चालाक दरिन्दे न? लेकिन डाक्टर, क्या आप यह जानते हैं, कि जिन्दगी मे मुझे जो सबसे प्यारे और वफादार दोस्त मिले है, वे सभी दरिन्दे थे। आप शायद उन्हे चीर-फाड़कर देखते। मेरे सबसे अजीज और नजदीकी दोस्तों में एक ऐसा हसीन जमाल और प्यार भरा अपनापा था, जो सिर्फ दरिन्दो मे ही मिलता है। काश आपको कभी वह गम न सहना पड़े जो मुझे सहना पड़ा, जब मैंने उसको उन इन्सानों के हाथों मे सौप दिया जो सिर्फ इसलिए जानवरों पर जुल्म-तशद्दुद करने की हिमायत करते है, क्योंकि वे बेचारे दरिन्दे है।

रीजन : खैर, तो क्या तुमने हम सभी को सचमुच इतना बेरहम और जालिम पाया ? लोगों का कहना है कि अगर्चे तुमने मुझसे मिलना-जुलना तर्क कर दिया है, लेकिन तुम ब्लूमफील्ड बोनिगटन और वालपोल के यहां हफ्तों कयाम करती रही हो। मेरे ख्याल मे यह बात सच ही होगी, क्योंकि वे लोग अब मुझसे कभी तुम्हारा जिक्र नही करते।

जेनीफर : सर रैल्फ के घर के जानवर बिगड़े हुए बच्चो की तरह है। मिस्टर वालपोल को जब अपने मैस्टिफ के पंजे मे से शीशे का टुकड़ा निकालना था

पड़ गया था, और मिस्टर वालपोल को मजबूर होकर सर रैल्फ से कमरे के बाहर निकल जाने को कहना पड़ा था। और मिसेज वालपोल ने माली से कह रखा है कि मिस्टर वालपोल के आगे ततैयों की हत्या न किया करे। लेकिन कुछ डाक्टर ऐसे हैं जो फितरतन बेरहम है, और कुछ ऐसे है जो बेरहमी और जुल्म के आदी हो जाते है और उनका दिल पत्थर वन जाता है। वे दरिन्दों की रूह के आगे आंख मीच लेते है, जिसकी वजह से आखिरकार वे मर्द और औरतों की रूह के आगे भी अंधे हो जाते है। आप लुई के बारे में एक भयानक गलती कर बैठे। आपने यह गलती न की होती अगर आपने कुत्तों के बारे मे यह गलती करने के लिए अपने आपको ट्रेन न किया होता। आपने कुत्तों मे गूगे दरिन्देपन के अलावा और कुछ नही देखा, इसलिए आप लुई के अन्दर भी एक चालाक दरिन्दे के अलावा और कुछ नही देख सके।

रीजन : (सहसा एक दृढ निश्चय पर पहुंचकर) मैने उसके बारे मे रत्ती भर भी गलती नही की।

जेनीफर : ओह डाक्टर !

रीजन : (हठधर्मी से) मैने उसके वारे में रत्तीभर भी गलती नही की।

जेनीफर : क्या आप भूल गए कि वह मर चुका है ?

रीजन : (तस्वीरों की ओर हाथ से झाड़ू घुमाने जैसा सकेत करते हुए) वह मरा नही है। वह यहां है। (किताब उठाते हुए) और यहां है।

जेनीफर : (शोलावार आंखो से तड़पकर उठती हुई) रख दीजिए, इसे। आपकी जुर्रत कैसे हुई इसको छूने की ?

[रीजन इस विस्फोट की तीव्रता से हैरान रह जाता है। वह इस हरकत को नागवार ज़ाहिर करने के लिए कंधो के झटके के साथ किताब को मेज़ पर रख देता है। वह किताब को उठाकर इस दृष्टि से देखती है, जैसे उसने एक पवित्र चिह्न को छूकर भ्रष्ट कर दिया हो।]

रीजन : मुझे सख्त अफसोस है। देखता हूं कि मुझे यहा से फौरन चल देना चाहिए।

जेनीफर : (किताब को नीचे रखते हुए) मुझे माफ कर दीजिए। मै-मै अपना आपा भूल गई थी। लेकिन यह अभी शाया नहीं हुई —यह प्राइवेट कापी है।

रीजन : मै न होता तो शायद यह किताब कुछ और ही होती।

जेनीफर : अगर आप न होते तो यह किताब और भी लम्बी होती।

रीजन : तो तुम्हें मालूम है कि मैने ही उसे मारा था ?

जेनीफर : (हठात् द्रवित होकर कोमल स्वर मे) ओह डाक्टर, अगर आप यह मान लेते है—अगर आपने खुद अपने आप यह इकबाल कर लिया है—अगर आप महसूस करते है कि आपने कितना बड़ा गुनाह किया है तो फिर मै आपको माफ कर देती हूं। मैने शुरू मे अपने दिल से आपकी कूवतों मे यकीन किया था, बाद को मैने सोचा कि मै गलती से आपकी बेरहम संग-दिली को कूवत समझ बैठी थी। क्या आप इसके लिए मुझे कसूरवार ठहरा सकते है ? लेकिन अगर यह सचमुच कूवत थी—अगर आपकी गलती सिर्फ वैसी ही थी, जैसी हम सब कभी न कभी कर बैठते हैं—तो मुझे फिर आपसे दोस्ती करके बेहद खुशी हासिल होगी।

रीजन : मै कहता हूं कि मैने कोई गलती नही की। मैने ब्लेंकिसोप

को बिल्कुल अच्छा कर दिया; क्या इसमे कोई गलती की ?

जेनीफर : वे अच्छे हो गए। ओह, इतने मगरूर न बनो, डाक्टर। अपनी नाकामयाबी कबूल करके हमारी दोस्ती को महफूज कर लो। याद रखो कि सर रैल्फ ने लुई को तुम्हारी दवा दी थी, जिससे उसकी हालत और भी बिगड़ गई।

रीजन : झूठ और मक्कारी का लबादा ओढ़कर मै तुम्हारा दोस्त नही बनना चाहता। कोई चीज मेरा गला दबा रही है—सच्चाई को जाहिर करना पड़ेगा। ब्लेंकिसोप पर खुद मैने उस दवा का इस्तेमाल किया था। उससे उसकी हालत खराब नहीं हुई। यह एक खतरनाक दवा है। उसने ब्लेकिसोप को अच्छा कर दिया और लुई डूबेडाट की जान ले ली। जब मै खुद अपने हाथ से यह दवा देता हूं तो वह मरीज को अच्छा कर देती है। लेकिन जब कोई दूसरा इस दवा का इन्जेक्शन देता है, तो वह मरीज की हत्या कर देती है—मेरा मतलब है, कभी-कभी।

जेनीफर : (सरलतापूर्वक, पूरी बात को अभी समझे बगैर ही) तो फिर आपने लुई को सर रैल्फ से क्यों इन्जेक्शन दिलवाया उस दवा का ?

रीजन : मैं अभी सब साफ-साफ बताए देता हूं। मैने यह इसलिए किया क्योंकि मै तुमसे मोहब्बत करता था।

जेनीफर : (मासूम ढंग से ताज्जुब मे पडकर) मोहब्बत—आप ! इतने बुजुर्ग होकर !

रीजन : (जैसे सर पर बिजली गिर पड़ी हो, आसमान की ओर अपने हाथ उठाते हुए) डूबेडाट, तुम्हारा इन्तकाम ले लिया गया ! (वह

हाथ नीचे गिराकर बैंच पर धम् से बैठ जाता है।) मैने इस बात को तो कभी सोचा ही नही था। मेरा ख्याल है कि मै तुम्हारी निगाह मे महज़ एक बूढा आदमी हूं।

जेनीफर : लेकिन वाकई—मेरा इरादा आपको चिढाना नही था, सच कहती हू—लेकिन आप मुझसे उम्र मे कम से कम बीस साल तो बड़े होंगे ही।

रीजन : ओह, जरूर। शायद, ज्यादा ही। बीस साल बाद तुम्हे पता चलेगा कि इससे कितना कम फर्क पडता है।

जेनीफर : लेकिन यह सच भी हो तो आप यह कैसे सोच सके कि मै—उसकी बीवी—कभी आपको भी अपना दिल दे सकूंगी।

रीजन : (अपनी थरथराती हुई उगली से उसको रोकते हुए) हां, हां, हां, हां। मै खूब समझता हूं। जरूरी नही कि तुम मेरी आंख में उंगली डालकर मुझे दिखाओ।

जेनीफर : लेकिन—ओह, अब मेरी समझ में आता जा रहा है—मै पहले पहल तो ताज्जुब से भर गई थी—तो क्या आप यह कहने की जुर्रत कर रहे है कि आपने अपनी नामुराद रकावत की खातिर जान-बूझकर—ओह ! ओह !—आपने उसकी हत्या कर दी।

रीजन : मेरा ख्याल है कि मैने यही किया। दरअसल मेरे काम का यही अंजाम निकला।

तुम कत्ल न करो, लेकिन जरूरत नही
कि जिन्दा रखने की कोशिश करो।
मेरा ख्याल है—हा, मैने ही उसकी हत्या की।

जेनीफर : और आप यह बात मुझसे कह रहे हैं ! मेरे ही मुह पर !

इतनी बेरहमी से ! आपको डर नहीं लगता !

रीजन : मै एक डाक्टर हूं। मुझे किसी चीज का डर नहीं है । बी. बी. को मदद के लिए बुलाना कोई कानूनी जुर्म नही है। शायद ऐसा करना एक जुर्म होना चाहिए, लेकिन है नहीं।

जेनीफर : मेरा यह मतलब नही था। मेरा मतलब था कि क्या आपको इस बात का डर नही लगा कि मै कानून को अपने हाथ में लेकर कही उल्टे आपकी हत्या न कर डालू ?

रीजन : तुम्हारे लिए मै इतना पागल हो रहा हूं कि अगर तुम मेरी हत्या कर दो तो मुझे इससे कतई एतराज नही होगा। ऐसा करके तुम मुझे जिन्दगी भर याद भी तो रखोगी ।

जेनीफर : मै आपको हमेशा एक ऐसे अदना इन्सान की शक्ल मे याद रखूगी जिसने एक अजीम इन्सान की हत्या करने की कोशिश की थी ।

रीजन : माफ करना; मै इसमे कामयाब रहा ।

जेनीफर : (विश्वासपूर्वक) नही । डाक्टरों को गुमान है कि ज़िन्दगी और मौत की कुंजी उनके हाथों मे है । लेकिन दुनिया उनकी ख्वाहिश के मुताबिक नही चलती । मुझे यकीन है कि आप लोगों के होने से कोई फर्क नहीं पड़ता ।

रीजन : शायद न पड़ता हो। लेकिन मेरा इरादा तो था।

जेनीफर : (उसकी ओर हैरान नज़र से देखती है, जिसमे दया का भाव भी है।) और आपने उस शानदार और खूबसूरत ज़िन्दगी को मिटा देने की कोशिश की, सिर्फ इसीलिए न कि आप नही चाहते थे कि उसके पास वह औरत रहे, जिससे आप कभी यह तवक्को भी नही कर सकते थे कि वह आपको चाहने लगेगी ।

रीजन : जिसने मेरे हाथ चूमे थे ; जो मेरे ऊपर भरोसा करती थी ; जिसने मुझसे कहा था कि उसकी दोस्ती ताजिन्दगी चलती है।

जेनीफर : और जिसके साथ आप धोखा कर रहे थे।

रीजन : नहीं, जिसे मै बचाना चाहता था।

जेनीफर : (कोमल स्वर मे) मेहरबानी करके बताइए तो डाक्टर, आप मुझे किस चीज़ से बचाना चाहते थे ?

रीज़न : एक भयानक राज के खुल जाने से। तुम्हे अपनी जिन्दगी बरबाद कर लेने से।

जेनीफर : सो कैसे ?

रीजन : जैसे भी हो, अब इसकी चर्चा बेकार है। मैने तुम्हे बचा लिया है। जिन्दगी मे तुम्हें मुझसे अच्छा दोस्त नही मिला। अब तुम सुखी हो। पहले से अच्छी हो। उसकी तस्वीरे तुम्हारे लिए एक ला-फानी खुशी और फख्र की चीजें हैं।

जेनीफर : और आपका ख्याल है कि यह आपके किए का नतीजा है ? ओह डाक्टर, डाक्टर ! सर पैट्रिक का कहना दुरुस्त है; आप ज़रूर सोचते हैं कि आप कोई छोटे-मोटे खुदा है। आप इतने अहमक क्योंकर हो सकते है ? आपने तो वह तस्वीरे नही पेन्ट की जो मेरी ला-फानी खुशी और फख्र की बायस है। आपने तो वह शीरीं अल्फाज़ नही बोले जो मेरे कानों में हमेशा बहिश्त के संगीत की तरह गूजते रहेंगे। जब कभी मैं थकी हुई या गमग़ीन होती हूं उन अल्फाज को सुनकर राहत और सकून हासिल कर लेती हूं। यही वजह है कि मै हमेशा इतनी खुश नजर आती हूं।

रीजन : हां अब, जब कि वह मर गया है। क्या तुम हमेशा इतनी

ही खुश रहीं जब वह जिन्दा था ?

जेनीफर : (आहत स्वर मे) ओह, आप कितने बेदर्द और बेरहम है—बेदर्द और बेरहम। जब तक वह ज़िन्दा था तब तक मै अपनी खुशकिस्मती की अजमत से वाकिफ नही थी। मैं अपनी खुदगर्जी की वजह से छोटी-छोटी बातों के बारे में परेशान होती रहती थी। मै उसके साथ ज़्यादती करती थी। मै उसके काबिल नही थी।

रीजन : (कटुतापूर्वक हंसता हुआ) हा ! हा !

जेनीफर : मेरी हतक मत कीजिए। कुफ्र मत बोलिए। (वह झपटकर किताब उठा लेती है और आत्म-ग्लानि के आवेग मे उसे अपने हृदय से लगा लेती है।) ओह, मेरे इन्सानों के बादशाह !

रीजन : इन्सानों का बादशाह ! ओह, यह कितनी बेहूदी, कितनी वहशियाना बात है। हम बेरहम डाक्टरों ने पूरी वफादारी से एक राज को अब तक तुमसे पोशीदा रखा है। लेकिन यह राज भी और राजों की तरह है। यह अपने को पोशीदा नही रखेगा। जमींदोज सचाई मे भी अंकुर फूटकर रोशनी मे आते हैं।

जेनीफर : कौन-सी सचाई ?

रीजन : कौन-सी सचाई ! अरे यही कि लुई डूबेडाट, इन्सानों का वह बादशाह, पूरा और पक्का बदकार था, छंटा हुआ शोहदा था। अपनी बीवी को इतना बेजार और दुखी बनाने वाले संग-दिल और खुदगर्ज़ बदमाश की मिसाल कही ढूढे नही मिलेगी।

जेनीफर : (अविचलित, शान्त और मधुर) उसने अपनी बीवी को दुनिया की सबसे खुशनसीब औरत बनाया था, डाक्टर !

रीजन : नही, दुनिया मे जो कुछ सच है, उसकी कसम; उसने अपनी

बेवा को बेशक दुनिया की सबसे खुशनसीब औरत बना दिया है; लेकिन उसको बेंवा बनाने वाला मै हूं। और आज उसकी खुशी यह साबित करती है कि मैने जो किया वह ठीक किया और यही मेरा इनाम है। अब तुमको मालूम हो गया कि मैने क्या किया और उसके बारे में मेरी क्या राय थी। तुम जितना चाहो मुझसे नाराज हो लो; कम से कम, यह तो तुम जान ही गई कि मै कैसा आदमी हू। अगर कभी तुम एक बुजुर्गवार आदमी को अपना दिल दे सको, तो कम से कम तुम्हें यह ऐहसास तो रहेगा कि तुम किस तरह के आदमी को दिल दे रही हो।

जेनीफर : (स्नेहपूर्ण और शान्त स्वर मे) मै अब आपसे कतई नाराज़ नहो हूं, सर कोलेन्ज़ो। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि लुई को आप पसन्द नहीं करते, लेकिन इसमें आपका कसूर नहीं है। आप समझते ही नहीं; बात वस इतनी है। आप उसमे कभी यकीन कर ही नही सकते थे। यह सिर्फ ऐसी बात है जैसे आप मेरे मजहब मे यकीन नहीं करते। दरअसल आपमें ऐहसास की छठी सिम्त है ही नहीं। और (उनकी ओर कोमल आश्वासन भरी मुद्रा में बढकर) यह मत सोचिए कि आपने अपनी बात से मुझे गहरा सदमा पहुंचाया है। मैं खूब अच्छी तरह समझती हूं कि उसकी खुदगर्जी से आपका क्या मतलब है। उसने अपने आर्ट के लिए हर चीज कुर्बान कर दी थी। एक मायने में वह हर किसीको कुर्बान करने के लिए मजबूर हो गया था।

रीजन : हर किसीको, सिवाय अपने। लेकिन अपने को वचा रखने की वजह से उसने तुम्हें कुर्बान करने का हक खो दिया था और

मुझे यह हक मिल गया था कि मैं उसको ही कुर्बान कर दूं।

जेनीफर : (अपना सिर हिलाकर उसकी गलती पर दया प्रकट करती है।) वह उन लोगों मे से एक था जो इस बात को समझते है, जिसे सिर्फ औरतें ही समझती है—कि कुर्बानी एक मगरूर, बुजदिली का काम है।

रीजन : हां, जब कुर्बानी को मंजूर न किया जाए और यूं ही फेंक दिया जाए। लेकिन उस वक्त नही, जब वह देवता की गिज़ा बन जाती है।

जेनीफर : ये बातें मेरी समझ मे नही आती। मै आपसे बहस नही कर सकती। आप इतने होशियार तो ज़रूर है कि मुझे उलझन मे डाल दें, लेकिन मुझे अपने अकीदे से डिगा नहीं सकते। आप सरासर बे-इन्तहा और बे तरह गलत है; लुई को समझ पाने के लिए इतने नादान है कि—

रीजन : ओह ! (सेक्रेटरी की फेहरिस्त उठाते हुए) मैने उन पांच तस्वीरों पर निशान लगा दिए है, जो मैं खरीद रहा हूं।

जेनीफर : वे आपको नहीं बेची जाएंगी। लुई के लेनदारों ने उनको बेचने के लिए ज़ोर दिया था; लेकिन आज मेरा जन्म-दिन है और ये सब तस्वीरें मेरे खाविन्द ने आज सुबह मेरे लिए खरीद ली है।

रीजन : किसने ?!!!

जेनीफर : मेरे खाविन्द ने।

रीजन : (बकबक करते हुए और हकलाते हुए) कैसा खाविन्द ? किसका खाविन्द ? कौन-सा खाविन्द ? किससे ? कैसे ? कब ? क्या तुम्हारे कहने का मतलब है कि तुमने फिर से शादी कर ली ?

जेनीफर : क्या आप भूल गए कि लुई को बेवा औरतें नापसन्द थीं, और यह कि जिन्हे शादी से एक बार खुशी हासिल हो चुकी है वे हमेशा दोबारा शादी कर लेती है ?

रीजन : तो मैने नाहक और बेमतलब ही एक हत्या कर डाली।

[सेक्रेटरी कैटेलॉग का एक गट्ठर लेकर लौटता है।]

सेक्रेटरी : अभी-अभी कैटेलॉग की कापियों का पहला बैच मिला है। दरवाज़े खोल दिए गए।

जेनीफ़र : (रीजन से कोमल स्वर मे) यह जानकर निहायत खुशी हुई कि यह तस्वीरे आपको पसन्द आई, सर कोलेन्जो। गुडमार्निग।

रीजन : गुडमार्निग। (वह दरवाज़े की तरफ बढ़ता है। हिचकिचाता है और घूमकर कुछ कहना चाहता है; लेकिन कहना-सुनना बेकार समझकर बाहर चला जाता है।)